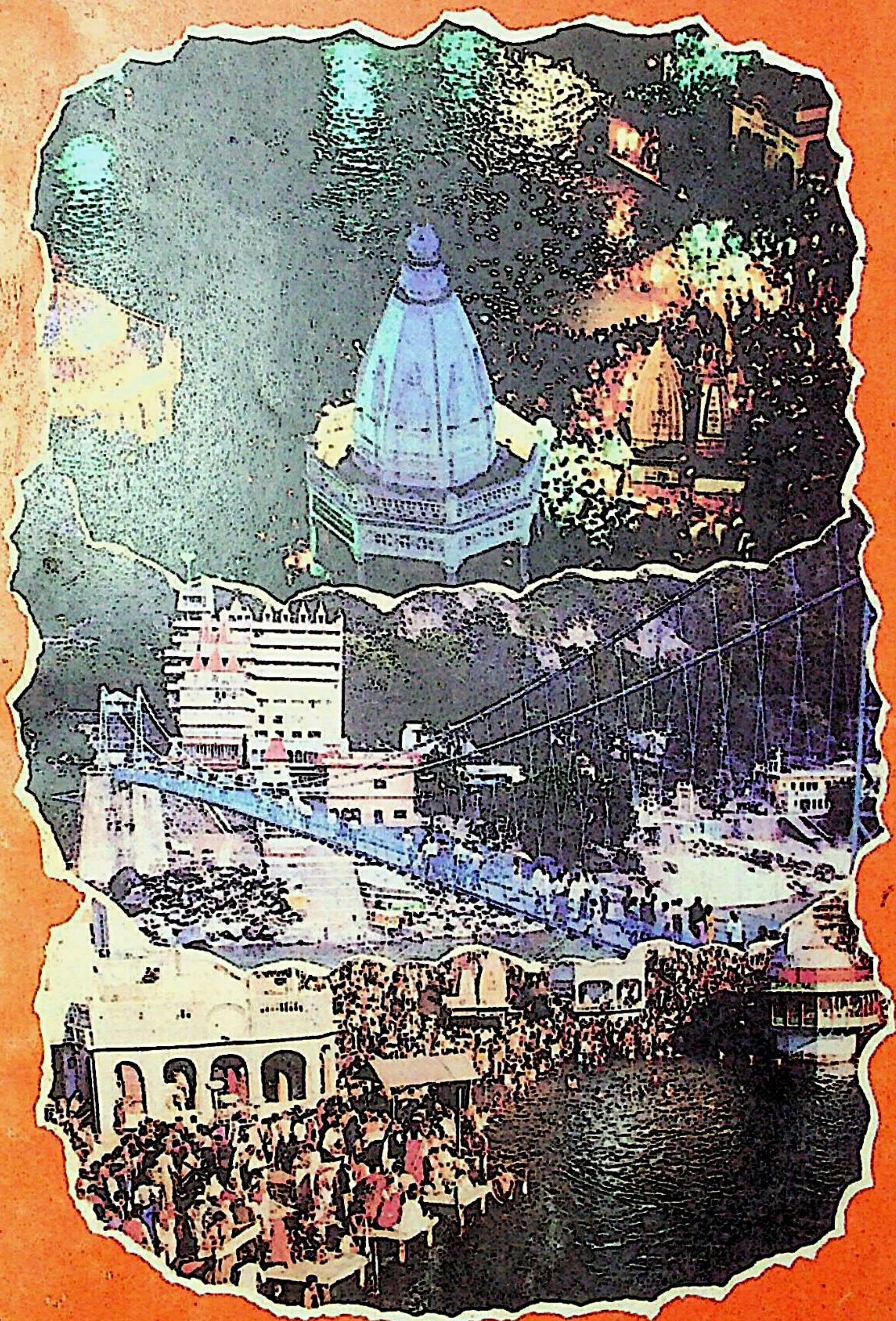
अर्द्ध कुम्भ '92



हरिद्वार

अर्द्धकुम्भ – 1992
हरिद्वार

(परिचय और व्यवस्थाएं)

लेखक
कमलकान्त बुधकर

रेखांकन
मंजु रंजना मिश्र

अर्द्धकुम्भ मेला अधिष्ठान के लिए
उ०प्र० पर्यटन विभाग
के सौजन्य से प्रकाशित

संपर्क – सूत्र
कमलकांत बुधकर, लक्ष्मण निवास साधुबेला मार्ग,
हरिद्वार – २४९४०१, फोन : ६३३३, ६५८२
मंजु रंजना मिश्र, मिश्र भवन, अपर रोड, हरिद्वार – २४९४०१

डिजाइन एडवरटाइजिंग एण्ड मार्केटिंग ऐसोसीएट्स, लखनऊ, फोन : २३४८४३
मुद्रक : इउरेका प्रिन्टर्स, लखनऊ, फोन : २३१७९४

समर्पण

अर्द्धकुम्भ 1992
के अवसर पर
तीर्थनगरी हरिद्वार – ऋषिकेश
आने वाले सभी
तीर्थयात्रियों,
पर्यटकों,
और
यायावरों के नाम।





अनुक्रमणिका



गंगावतरण



कुम्भनगर हरिद्वार : पुराण-इतिहास केआईने में

भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे लम्बी और लगातार बहने वाली नदी गंगा के दाहिने किनारे पर बसा हुआ तीर्थनगर हरिद्वार अपनी मायापुर और कनखल बस्तियों की प्राचीनता और पुरातात्विक पहचान के कारण "गेरुए रँग की संस्कृति – सभ्यता वाला" नगर माना जाता रहा है। इस सभ्यता का कालक्रम ईसापूर्व 1200 से 1700 बरसों के बीच माना जाता है यानी हरिद्वार को पुरातत्वविद् करीब पौने चार हज़ार साल पूर्व की मानव बस्ती के रूप में स्वीकार करते हैं।

गंगा के उद्गम स्थल गोमुख–गँगोत्री से करीब तीन सौ किलोमीटर नीचे समतल में गंगा की धारा के किनारे बसा आज का हरिद्वार या हरद्वार जहाँ एक ओर उत्तराखंड के चार पवित्र धामों के लिए प्रवेशद्वार है वहीं पुराणों में चर्चित "गंगा द्वार" के नाम से प्रख्यात यह नगर देवनदी गंगा के लिए पहले-पहल समतल भूमि प्रदान करता हैं। शिवालिक पर्वतमाला के छोर पर "बिल्व" पर्वत और "नील" पर्वत के मध्य लम्बाई में बसा यह छोटा सा खूबसूरत नगर अपनी प्राकृतिक सुषमा, मनोहारी गंगातटों, वहां होने वाली पूजा–आरतियों के सुन्दर नयनाभिराम दृश्यों, शिवालिक की वन और पहाड़ों वाली प्राकृतिक विरासतों, मंदिरों, आश्रमों और अखाड़ों के कारण न जाने कब से यायावरों, घुमक्कड़ों, तीर्थयात्रियों और गंगा भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। आज तो यह नगर जिला मुख्यालय का दर्जा प्राप्त एक ऐसा नगर बन गया है जो प्रगति और विकास की यात्रा में देश के अन्य नगरों के साथ साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को तत्पर है।

लेकिन जहां पुरातत्वविदों ने पौने चार हजार बरस पहले भी मानव बस्ती होने के चिन्ह खोज लिए हैं उस हरिद्वार की प्रसिद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण यहां हर छठे और बारहवें बरस लगने वाले अर्द्धकुम्भ और कुम्भ के मेले भी हैं, जिनके कारण इस शहर को अब कुम्भनगर भी कहा जाने लगा है। ये विराट पर्व अपनी व्यापकता के कारण जहां विश्व के सबसे बड़े ऐसे अवसर होते हैं जहां लोग जुटते हैं और धर्म–अध्यात्म की चर्चा के साथ साथ सामूहिक गंगा–स्नान का पुण्य लूटते हैं। अनादि काल से चले आ रहे इन महामेलों के कारण भी हरिद्वार को भारतीय जनमानस में एक विशेष स्थान मिला हुआ है।

हरिद्वार के इतिहास में उल्लेखों से भी पहले से भारतीय पुराकथाओं, पुराणों और विशिष्ट धार्मिक साहित्य में इस नगर का काफी कुछ उल्लेख मिलना इस नगर को पुरातन दिव्यता से भी आलोकित करता है। हरिद्वार का नाम इसके कपिलाश्रम के कारण पहले-पहल तब आता है जब सूर्यवंशी राजा सगर के अश्वमेध यज्ञ और उस अवसर पर छोड़े गए यज्ञाश्व को कपिल मुनि के आश्रम में बांधे जाने का उल्लेख मिलता हैं। भगवान श्रीरामचन्द्र के पूर्वज और इक्ष्वाकु कुल के राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ के बाद जब यज्ञाश्व को दिग्विजय के लिए छोड़ा तो उसके साथ अपने साठ हज़ार पुत्र भी यज्ञाश्व की सुरक्षा के लिए भेजे। उधर महाराज सगर के अश्वमेध से घबराए देवराज इन्द्र ने यज्ञाश्व को चुराकर उसे हरिद्वार क्षेत्र में स्थित कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया। जब सगर पुत्रों को यज्ञाश्व की चोरी की भनक मिली तो उन्होंने उसकी तलाश आरंभ की। ढूँढते हुए जब सगरपुत्र कपिलाश्रम पहुँचे तो वहां घोड़ा बंधा देखकर उन्होंने मुनि को बुरा–भला कहना शुरू कर दिया। सारी घटना से अनभिज्ञ मुनि ने जब आँखें खोली तो उन्हें सगर पुत्रों की विवेकहीनता अखर गई और उन्होंने उन सब को शापाग्नि से भस्म कर दिया।



कालान्तर में सगर के वंशज महाराज भगीरथ ने बड़ी तपस्या करके गंगा को धरती पर लाने का भारी उपक्रम किया, तब गंगा अपने उद्गम गोमुख से निकलकर ढाई हजार किलोमीटर का सफर पूरा करती हुई गंगा सागर तक पहुंची। रास्ते में हरिद्वार में गंगा ने अपने स्पर्श से सगरपुत्रों को सद्गति देकर मोक्ष प्रदान किया। तब से आज तक हरिद्वार में गंगाजल में अपने मृत परिजनों के अस्थि-अवशेष प्रवाहित करने की परम्परा आस्तिक हिन्दू समाज में चली आ रही है।

रामायण काल में श्री राम रावण को मारने के बाद ब्रह्महत्या के पाप का प्रक्षालन करने के लिए अपने भाई लक्ष्मण और अन्य परिजनों के साथ हरिद्वार आए थे। उन्होंने यहां गंगास्नान करने के बाद आगे उत्तराखंड के देवप्रयाग में तपस्या की थी।

हरिद्वार की उपनगरी कनखल तो भारतीय पुराकथाओं के अनुसार प्रजापति दक्ष की राजधानी रही है। दक्षपुत्री सती ने पिता की इच्छा के विपरीत भगवान शिव से प्रेम विवाह कर लिया था। इसलिए दक्ष अपनी पुत्री और जामाता दोनों से ही नाराज रहा करते थे। एक बार जब दक्ष ने अपने यहां विराट यज्ञ का आयोजन किया तो असमें भगवान शिव को उन्होंने जानबूझकर न्यौता नहीं दिया। उधर जब सती को इस यज्ञ की जानकारी मिली तो सती ने शिव से यज्ञ में चलने को कहा। पर सती ने ज़िद पकड़ ली। तब अनमने भाव से भगावान शिव ने उन्हें नन्दीगण के साथ भेज दिया। पर बिना न्यौता मिले शिव को स्वयं वहाँ जाना बिलकुल नहीं रुचा। उधर कनखल में पहुंचने पर सती ने देखा कि देवाधिदेव महादेव के लिए उनके पिता ने न तो स्थान रखा है और न ही यज्ञभाग ही सुरक्षित रखा है। यह बात सती को अखर गई। सती को देखकर दक्ष ने शिव को बुरा-भला भी कहना शुरू कर दिया। इस अपमान से व्याकुल सती ने योगाग्नि से अपना शरीर जला लिया और प्राणोत्सर्ग कर दिया। बाद में शिवगण वीरभद्र शिव ने सारा दक्ष यज्ञ विध्वंस किया और दक्ष का सिर काटकर यज्ञकुण्ड में ही फेंक दिया। सारा समाचार मिलने पर जब वहां शिव आए तो उन्होंने अपनी सास की प्रार्थना पर दक्ष के धड़ पर बकरे का सिर लगाकर उसे तो जीवन दे दिया पर वे स्वयं सती का अधजला शव देखकर अत्यंत उद्विग्न हो गए। उन्होंने शव को कन्धे पर डाला और दिशाओं में भ्रमण करने लगे। शिव के क्रोध से दसों-दिशाओं को बचाने के उद्देश्य से महाविष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शव के टुकड़े टुकड़े करके यहां-वहां बिखेर दिए। हरिद्वार में तो सती के शव का हृदय और नाभिस्थल गिरा और जहां गिरा, वह स्थान आज भी शहर के बीचों बीच मायादेवी मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उधर पुनर्जीवित प्रजापति दक्ष ने यज्ञस्थल पर शिवलिंग की स्थापना करके अपनी भूल का प्रायश्चित किया। वह स्थान आज भी कनखल में दक्षेश्वर महादेव के नाम से विख्यात है।

महाभारत काल की भी अनेक कथाएं हरिद्वार से संबद्ध रही हैं। वीरवर भीष्म के दादा और महाराज शांतनु के पिता महाराजा प्रतीप एक बार हरिद्वार में गंगातट पर बैठे ध्यानमग्न हो गए तो स्वयं गंगा ने रूपसी युवती का वेश धरकर उनकी दाँयींगोदी में बैठकर उनसे प्रणय याचना की। प्रतीप ने तब मुस्कराकर कहा कि "दाँयीं गोदी तो पुत्रों और पुत्रवधुओं के बैठने की होती है अतः मैं तुम्हारा प्रणय निवेदन स्वीकार करने में असमर्थ हूं। तुम चाहो तो मेरी पुत्रवधू बन सकती हो"। बाद में कहते हैं कि गंगा ने शांतनु से विवाह करके भीष्म जैसे विश्व विख्यात पुत्र को जन्म दिया।

कौरव पाण्डवों के गुरू द्रोणाचार्य की माता घृताची महर्षि भारद्वाज को और नागराज कौरव्य की बेटी परमरूपा उलूपी वीरवर अर्जुन को यहीं हरिद्वार में मिली थी। दूसरे शब्दों में कहा जाए द्रोणाचार्य और



अर्जुनपुत्र इरावत की ननिहाल यही हरिद्वार रहा है। परम वीर भीमसैन के घोड़े की ठोकर से बना भीमगोड़ा कुण्ड हरिद्वार को भीम से भी जोड़ता है। यह उल्लेख मिलते हैं कि मैत्रेय ऋषि को विदुर ने महाभारत हरिद्वार में ही सुनाया था और यहीं देवर्षि नारद से उसे सप्तर्षियों ने सुना था। हरिद्वार का ब्रह्मकुण्ड महाराजा श्वेत की तपस्थली के रूप में भी प्रसिद्ध है। यहां के कुशावर्त घाट पर स्वंय भगवान दत्तात्रय ने भी तपस्या की थी। हरिद्वार की उपनगरी कनखल में सनत्कुमारों को सिद्धावस्था प्राप्त हुई थी। महाभारत के महायुद्ध के बाद बचे हुए प्रमुख योद्धा अपने पापों का प्रक्षालन करने के लिए हरिद्वार ही आए थे। यहीं धृतराष्ट्र, गांधारी और विदुर ने योगाग्नि द्वारा अपने को शरीर बंधन से मुक्त किया था।

उल्लेख मिलता है कि ईसा से एक हज़ार वर्ष पूर्व प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने मायापुरी क्षेत्र में आकर तपस्या की थी। ईसा पूर्व 600 वर्ष के लगभग यह सारा क्षेत्र कुषाण तथा कौशलवंशी राजाओं के अधीन रहा है। समीपस्थ कालसी में अशोंक स्तंभ का होना बताता है कि यह सम्राट अशोक के साम्राज्य का भी हिस्सा रहा होगा। पुरातत्ववेत्ता सर अलेक्जेंडर कनिंघम को तो नारायणी शिला के मंदिर में बुद्ध की भी एक छोटी प्रतिमा मिली थी जिसमें भगवान बुद्ध को अपने शिष्यों के साथ दिखाया गया था। कनिंघम को हरिद्वार के श्रवणनाथ मंदिर में भी बोधिवृक्ष के नीचे समाधिस्थ बुद्ध की प्रतिमा मिली थी। मूर्ति के आधार में एक बड़ा चक्र और दोनों ओर सिंह थे। उस मूर्ति में दो खड़े व्यक्ति और दो उड़ते हुए पक्षी भी थे। मूर्ति चूंकि नग्न थी अतः कनिंघम के अनुसार संभवत् : वे प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ ही होंगे।

सर अलेक्ज़ेंड़र कनिंघम, जो कि ब्रिटिश सरकार द्वारा संचालित आर्कियॉलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के डायरेक्टर जनरल थे, ने सन 1862 से 1865 के बीच पुरातात्विक सर्वेक्षण किए थे। उनकी रपट के अनुसार हरिद्वार में गंगाद्वार, हरकी पौड़ी, माया देवी, भैरव मन्दिर, नारायण बलि (या शिला) मंदिर, और राजा वेन का किला तब के प्रमुख स्थान थे।

ईसा पूर्व 57 वर्ष पूर्व महाराजा विक्रमादित्य का अवंतिका में सिंहासनारोहण हुआ था। उनके बड़े भाई और श्रृंगार, नीति एवम् वैराग्य शतकों जैसी अनुपम कृतियों के रचयिता महाराज भर्तृहरि का भी हरिद्वार के साथ संबन्ध रहा है। राजपाट छोड़कर उन्होंने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध हरिद्वार में ही बिताया था और यहीं रहकर नीतिशतक और वैराग्य शतक का प्रणयन किया था। उनकी मृत्यु के बाद कहते हैं राजा विक्रमादित्य ने ही हरिद्वार की हर की पौड़ी पर सबसे पहले सीढ़ियां (पौड़ियां) बनवाई। इन 'भर्तृहरि की पौड़ियों' को ही कालान्तर में हर की पौड़ी कहा जाने लगा। विक्रमादित्य के राजकवि कालीदास ने तो प्रसिद्ध महाकाव्य "मेघदूत" के पचासवें श्लोक में कनखल का स्पष्ट उल्लेख किया है। वे अपने काव्यनायक को कहलवाते हैं:

तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णा जन्होंकन्यां सगरतनयास्वर्ग सोपान पंक्तिम् ।
गौरी वक्त्रभृकुटि रचनां या विहस्यैव फैनेः शम्भोः केशग्रहणमकरोदिन्दु लग्नोर्महस्ता ।।

– पूर्व मेघदूतम् 50 –

ईसवी सन् 634 में प्रसिद्ध चीनी यायावर ह्वेन त्सांग अपनी भारत यात्रा के दौरान हरिद्वार भी आया था। उसने हरिद्वार को मो–यू–लो नाम से लिखा है। कनिंघम मोयूलो को मयूर या मयूरपुर बताते हुए



कहता है कि हरिद्वार और उसके आसपास के जंगलों में भारी मात्रा में मोरों के पाए जाने के कारण यह नाम भी सार्थक ही है। ह्वेन त्सांग उस युग के हरिद्वार को साढ़े तीन मील क्षेत्र वाला घनी आबादी वाला नगर बताता है। निश्चय ही वह आज के मायापुर का ज़िक्र कर रहा है जिसे उसने मोयूलो नाम दे दिया था। वह हरिद्वार की गंगा को महाभद्रा यानी अत्यधिक पावन करने वाली नदी कहता है। मायापुर के उत्तर में "देव मंदिर" और कल्याणकर्मी राजाओं द्वारा यहां "पुण्यशालाएं" स्थापित करने का उल्लेख भी चीनी यात्री करता है। ह्वेन त्सांग को यहीं नदी को पूज्य देवी मानकर चलनें वाली संस्कृति के दर्शन हुए थे।

ईसवी सन् 758 में हरिद्वार में ही महानिर्वाणी अखाड़े की स्थापना का उल्लेख भी मिलता है। इस नए अखाड़े का जन्म अटल अखाड़े से अलग हुए आठ संन्यासियों द्वारा किया गया था और सन् 1260 तक यह अखाड़ा हरिद्वार में गंगापार नीलधारा के निकट नीलेश्वर महादेव पर ही मुख्यालय बनाकर रहता रहा। 1260 में इस अखाड़े के साधुओं के कनखल में रामानन्दी वैष्णवों पर धावा बोलकर अन्ततः कनखल चौक में अपना झण्डा गाड़ दिया। इस लड़ाई में महानिर्वाणी अखाड़े के 22 हज़ार साधु उतरे थे और इनका नेतृत्व महंत भवानन्द गिरि, सुन्दरा नन्द पुरी और कमलानन्द आदि ने किया था।

चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने ईसवी 634 में जो यह बात लिखी थी कि हरिद्वार में लाखों लोग स्नान के लिए आते हैं और स्नान कर अपने पापों का क्षय हुआ मानते है, यही बात चीनी यात्री के लौट आने के चार सौ साल बाद महमूद गज़नवी के काल के इतिहासकार ओटवी ने लिखी है और ऐसा ही वर्णन तैमूरलंग का इतिहासकार शर्फुद्दीन करता है।

शर्फुद्दीन सन् 1398 में तैमूर के साथ ही भारत आया था। फिरोज़शाह तुगलक के निधन के बाद तैमूर यमुना के पश्चिमी किनारे से होकर दिल्ली, मथुरा, मेरठ, बिजनौर का दोआबा पार करता हुआ हरिद्वार आया था। वह साल हरिद्वार में महाकुम्भ का साल था। तैमूर ने तब यहां आए तीर्थयात्रियों को लूटा। वह मायापुर में रुककर सरसावा होते हुए यमुना पार करके फिर समरकन्द को लौट गया। तैमूर के इतिहासकार शर्फुद्दीन ने हरिद्वार को "काओपिल" या "कुपिला" कहा है। कुछ लोग जहां इसे कपिलमुनि से जोड़ते हैं वहीं कनिंघम के अनुसार यह कोह–पैरी है। कोह का अर्थ पहाड़ होता है। उस काल की हरकी पौड़ी पहाड़ की तलहटी में एक छोटा कुण्ड मात्र रही होगी। शर्फुद्दीन ने यहां गंगा के किनारे विष्णु के बताए जाने वाले चरणचिन्ह भी देखे थे पर उससे पहले इतिहासकार अबू रिहान वह चिन्ह नहीं देख पाया था। इसका एक अर्थ यह भी हुआ कि अबू रिहान के बाद संभवतः विष्णु चरणों की अनुकृति पहाड़ की दीवार में उकेरी गई होगी।

हरिद्वार में अकबर की टकसाल होने का उल्लेख मिलता है। यह सोलहवीं सदी की बात है। हरिद्वार में अकबरी सिक्के खुदाई में भारी मात्रा में मिलते रहें हैं। अकबर का दरबारी इतिहासकार अबुल फज़ल "आईने अकबरी" में लिखता है कि माया ही हरिद्वार के नाम से जानी जाती रही है। तब हरिद्वार गंगा किनारे 18 कोस की लम्बाई में फैला हुआ था। अबुल फज़ल यह भी लिखता है कि गंगाज़ल की शुद्धता और पवित्रता से अकबर के रसोईघर में कलमी शोरे के माध्यम से ठण्डा हुआ गंगाजल ही प्रयुक्त होता था। यह गंगा जल हरिद्वार से ही अकबर बड़े बड़े घड़ो में मंगाया करता था। सम्राट अकबर जब पंजाब, सिंध, कश्मीर, काबुल और कंधार यात्रा पर होता था तो हरिद्वार का गंगाजल ही प्रयोग में लाता था। अकबर के नवरत्नों में से एक और उसके प्रतापी सेनापति मिर्जा राजा मानसिंह की भी गंगा



और हरिद्वार के प्रति असीम श्रद्धा थी। उन्होने हरिद्वार में हर की पौड़ी का जीर्णोद्धार कराया था और प्राचीन नगर के खण्डहरों पर आज के हरिद्वार की नींव भी रखी थी। कनिंघम ने लिखा है कि मानसिंह ने पुराने संकरे घाट को बनवाया था और गंगा की धारा के मध्य एक अठकोणी स्तम्भ बनवाकर साधना–स्थल के रूप में प्रयोग करने के लिए किसी साधु को ताम्रपत्र लिखकर दान दे दिया था। कालान्तर में साधु और उसकी परम्परा वालों ने वहां छतरीनुमा स्थापत्यशैली में श्रीगंगा मंदिर का निर्माण करवाया जो आज भी हरकी पौड़ी के बीचों बीच आस्तिकों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है।

1608 में जहांगीर के शासनकाल में पहला यूरोपियन यात्री टॉम कॉरयट हरिद्वार आया था। उसने हरिद्वार को कैपिटल ऑफ शिवा (शिव की राजधानी) कहा। स्वयं जहांगीर 1620 में कुछ दिनों के लिए हरिद्वार आकर रहा था, पर यहां का मौसम रास न आने के कारण वह फिर यहां से कांगड़ा चला गया।

सन् 1666 में सम्राट औरंगजेब के काल में मुगल सैनिकों ने जब हरिद्वार की ओर बढ़े तब महानिर्वाणी अखाड़े के साधुओं ने मुगल सैनिकों के खिलाफ कमर कस ली। साधुओं की धर्म–ध्वजाएं देखकर शाही सेना के मराठे सिपाही संन्यासियों की ओर हो गए और परिणाम स्वरूप शाही सेना परास्त हुई।

सन् 1760 में आचार्य गरीबदास जब हरिद्वार आए तो यहां सन्यासियों और बैरागियों के झगड़े देखकर बेहद व्यथित हो गए। उन्होंने दोनों संप्रदायों के साधुओं की डाट लगाते हुए पद रचना भी की थी।

यहां चंडीघाट का मैदान मुगल सम्राट शाहआलम और मराठा सरदार महादजी सिंधिया की रुहेला सरदार जमीत खान की टक्कर का भी साक्षी रहा है। इस घटना के छह साल बाद 1783 में हरिद्वार में हैजे की महामारी फैलने से करीब दो हज़ार लोगों के मर जाने का भी उल्लेख मिलता है।

1789 में यहां 6 अप्रैल के दिन इंग्लेंड के यात्री चित्रकारों की एक जोड़ी आई थी – चचा थॉमस डेनियल और भतीजा विलियम डेनियल। हरिद्वार के वर्णन में वे लिखते हैं, "हरिद्वार में एक सीधी साधी सड़क थी मिठाइयों की दुकान और जगह जगह किए जा रहे हवनों के धुंए से भरी हुई। किन्तु घाट अत्यंत सुन्दर है। प्रातः काल से शाम तक धर्मार्थियों का तांता लगा रहता है।"इस जोड़ी ने पहली बार हरिद्वार के कई चित्र भी बनाए थे।

7 अप्रैल 1796 को कप्तान टॉमस हार्डविक अपने साथी डॉ० हंटर के साथ कुम्भ के अवसर पर जब हरिद्वार आया तो उसने यहां हुए सिख–संन्यासी संघर्ष को अपनी कलम की नोक पर उतारा। 1808 में फैलिक्स विन्सेंट रेपर नामक एक अंग्रेज पर्यटक हरिद्वार आया और उसने यहां "हर चौथी दुकान हलवाई की दुकान" देखी।

सन् 1879 का वर्ष एक दुखद वर्ष था जब हरकी पौड़ी की भीड़ में दबकर करीब 430 व्यक्तियों की मौत हो गई थी। तब ब्रिटिश सरकार ने हर की पौड़ी को विस्तार देने के लिए कैप्टन डी० बड को नियुक्त किया। "डुरे साहब" के नाम से विख्यात इस अंग्रेज़ अफसर ने 34 फुट ऊपरी चौड़ाई तथा 89 फुट निचली चौडाई वाला 39 सीढ़ियों का एक घाट हरकी पौड़ी पर बनवाया।

सन् 1825 में सरधना की सुप्रसिद्ध बेगम समरू एक हज़ार घोड़े और पन्द्रह सौ सैनिकों के साथ



हरिद्वार आई। इसी साल ब्रिटिश रेजिमेंट के लैफ्टिनेंट जॉर्ज फ्रान्सिस ह्वाइट अपने पांच साथियों के साथ हरिद्वार आए। बेगम समरू तो बाद में 1930 और 1935 में भी उसी सजधज के साथ हरिद्वार आई पर ह्वाइट का आना इस दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि उसने अपनी संस्मरण पुस्तिका "व्यूज़ इन इण्डिया" में विस्तार से हरिद्वार के बारे में लिखा उस अंग्रेज सैनिक ने लिखा है कि हरिद्वार में पूरबवालों का जैसा विराट और भव्य सम्मेलन उसने देखा उसके दसवें हिस्से के वर्णन में भी वह असमर्थ है।

ब्रिटिश सरकार ने 1836 में पहली बार गंगा को जनोपयोगी कार्यों के निए नहर में बांधने का निर्णय लिया। पर इसका कार्य कर्नल प्राबी टी॰ कॉटले के नेतृत्व में सन् 1848 में ही प्रारम्भ हो सका। लगातार छह वर्ष कर्नल कॉटिले घोड़े की पीठ पर सवार होकर नहर निर्माण का सारा कार्य देखते रहे और अन्ततः 8 अप्रैल 1854 को भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने गंगा से पहली नहर का विधिवत् उद्घाटन किया। इस नहर ने न केवल हरिद्वार को बल्कि समूचे उत्तर प्रदेश को प्रगति और विकास के नए आयाम प्रदान किए।

1867 की भीड़ से प्रभावित होकर ब्रिटिश शासन ने हरिद्वार के लिए एक विकास समिति (डवलपमेंट कमेटी) गठित की जो बाद में 1868 से नगर पालिका समिति हरिद्वार के रूप में कार्य करने लगी। सन् 1885 में हरिद्वार लक्सर रेल लाइन बनी और हरिद्वार रेल के मानचित्र पर आ गया। सन् 1891 में हरिद्वार–देहरादून और 1926 में हरिद्वार–ऋषिकेश रेलमार्ग बनने के बाद तो यह एक प्रमुख यात्री स्टेशन के रूप में विकसित हो गया है।

सन् 1891 में हरकी पौड़ी में पहली बार गंगातल पर ईटों का खड़ंजा बिछाया गया और ऐसा ही खड़ंजा भीमगोड़ा कुण्ड में भी बिछाया गया। आज भी इस खड़ंजे के अवशेष नहरबन्दी के दौरान दिखाई पड़ जाते हैं। सन् 1901 में एक बार फिर हरकी पौड़ी का विस्तार किया गया। सन् 1936 में पहली बार हरिद्वार में मल–जल निरसन के लिए सीवर लाइन बिछाई गई। इसी साल खुर्जा के सेठ सूरजमल जटिया के एक लाख रुपयों से पुरानी 89 फीट चौड़ी हरकी पौड़ी को 285 फीट चौड़ा कर दिया गया। यह कार्य 1938 के महाकुम्भ से पूर्व हो चुका था। 1950 में बिल्वपर्वत का इस्तेमाल वाहनों के आवागमन के लिए हो सके इस लिए हिलबाईपास मार्ग का निर्माण किया गया 1962 तक आते आते हरिद्वार एक तरह से उत्तर भारत का केरल या पूरब का वेनिस हो गया क्योंकि यहां कदम कदम पर पुलों की भरमार हो गई। कुम्भ–अर्द्धकुम्भ के पर्वों पर तो यह नगर सचमुच "सेतुनगर" ही बन जाता है। सन् 1986 का कुम्भ निर्माण कार्यों की दृष्टि से इसलिए विशेष याद किया जाता है क्योंकि इससे पहले हरकी पौड़ी का एक बार फिर महत्वपूर्ण विस्तार किया गया। हरकी पौड़ी के आसपास के दर्जनों भवनों या उनके हिस्सों का अधिग्रहण करके उन्हें गिराकर सड़कें चौड़ी की गई और अब सेठ सूरलमल जटिया की 285 फुट चौड़ी हरकी पौड़ी को बम्बई के सेठ हिन्दूजा ने पच्चीस लाख रुपए की लागत से करीबन दुगना बड़ा यानि 140 मीटर चौड़ा बनवा दिया है। सन् 1992 के अर्द्धकुम्भ वर्ष से पूर्व हरकी पौड़ी क्षेत्र के मालवीय द्वीप का भी उत्तर दक्षिण दिशाओं में 35–35 मीटर विस्तार किया गया है ताकि हरिद्वार के इस आकर्षक गंगाघाट पर अधिकाधिक लोग स्नान कर सकें।

हरिद्वार के आधुनिक इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण तिथियां 2 अक्टूबर 1984, 4 जून 1986 और 28 दिसम्बर 1988 हैं। इन तिथियों से पूर्व हरिद्वार का परगना ज्वालापुर, तहसील रुड़की और ज़िला सहारनपुर हुआ करता था। पर 2 अक्टूबर 1984 को हरिद्वार को तहसील का दर्जा मिला। 4 जून



1986 को हरिद्वार के साथ लगभग सारा कुम्भक्षेत्र जोड़कर एक नए हरिद्वार विकास क्षेत्र का गठन किया गया और यहां हरिद्वार विकास प्राधिकरण की स्थापना कर दी गई। 28 दिसम्बर 1988 को प्रदेश सरकार ने हरिद्वार को जिले का पूर्ण दर्जा देते हुए इसे सहारनपुर से अलग करके नवसृजित जिले में रूड़की हरिद्वार के साथ एक नई लक्सर तहसील भी जोड़ दी।

पुराणों में वर्णित कभी की मायापुरी पूर्व में नीलपर्वत, पश्चिम में वार्पेणी नदी, उत्तर में रत्नस्तम्भ, और दक्षिण में नागतीर्थ की सीमाओं वाली, 12 योजन लम्बी और तीन योजन चौड़ी थी वह बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक पँहुचते पँहुचते करीब पचास किलोमीटर लम्बे कुम्भनगर में फैल गई है। आज देश के पर्यटक मानचित्र पर हरिद्वार का प्रमुख स्थान है। किसी ज़माने का "हर चौथी दुकान हलवाई की दुकान" और पांच हज़ार की बस्ती वाला हरिद्वार आज दो लाख 75 हज़ार की आबादी वाला ऐसा जिलानगर बन गया है जहां गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जैसी सुप्रसिद्ध आर्य शिक्षा पीठ, दो प्रमुख आयुर्वेदिक कॉलेज, चार स्नातकोत्तर कॉलेज, दर्जनों हाई स्कूल और इण्टर कॉलेज, तथा भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड जैसा विश्वविख्यात औद्योगिक संस्थान है। रुड़की का इंजीनीयरिंग विश्वविद्यालय, मुस्लिम तीर्थ दरगाह कलियर शरीफ, केन्द्रीय भवन शोध संस्थान, केन्द्रीय जल विज्ञान संस्थान, सिंचाई अनुसंधान केन्द्र, नहर अनुसंधान केन्द्र जैसी अनेक महत्वपूर्ण इकाइयां इस जिला क्षेत्र में कार्यरत हैं।

दर्जनों पुलों, नवनवीन घाटों, आकर्षक मंदिरों, आश्रमों, अखाड़ों, सुविधा-सम्पन्न धर्मशालाओं, हर स्तर के होटलों, किराएशालाओं के साथ आज का हरिद्वार न केवल आस्तिक तीर्थयात्री बल्कि घुमक्कड़ी को निकले यायावर और सैलानी को भी बखूबी आकर्षित करने की क्षमता सँजोए हुए राह में पलक-पाँवड़े बिछाए है।





कुम्भ और अर्द्धकुम्भ :
विराट् जनपर्वों की एक अद्भुत विरासत

विज्ञापन, प्रचार और जनसम्पर्क के इस युग में जबकि किसी प्रायोजित कार्यक्रम में भी श्रोता-दर्शक मुश्किल से जुट पाते हैं और अपने श्रोता-दर्शकों-पाठकों यहाँ तक कि ग्राहकों और प्रशंसकों तक पहुंचने में व्यक्तियों को हज़ार पापड़ बेलने पड़ते है, लाखों रूपया खर्च करना होता है तब भी वाँछित फल प्राप्त करने में निराशा ही हाथ लगती है। ऐसे में यदि किसी से कहा जाए कि "पंडितजी के पतरे" के एक पृष्ठ की एक पंक्ति से लाखों लोगों को निश्चित समय और स्थान पर एकत्र किया जा सकता है तो सहसा वह विश्वास नहीं कर पाएगा। लेकिन यह बात सच है और सोलहों आने सच है। सदियों से भारतवासी यह सच देश के चार तीर्थनगरों हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में देखते आ रहे हैं। कुम्भ, सिंहस्थ कुम्भ और अर्द्धकुम्भ नाम से ये विराट पर्व आस्थावान भारतीयों की अपने पारम्परिक शाश्वत मूल्यों में निष्ठा का प्रतीक बने हुए जन जन को आकर्षित करते हैं।

भारत के चार पारम्परिक कुम्भथलों में से दो उत्तर प्रदेश में हैं और उत्तर प्रदेश के इन दो नगरों में हरिद्वार और प्रयाग में कुम्भ ही नहीं अपितु अर्द्धकुम्भ का योग भी बनता है। अतः उत्तर प्रदेश में तो योग कुछ इस तरह बनता है कि हर तीसरे वर्ष कहीं न कहीं कुम्भ या अर्द्धकुम्भ पड़ ही जाता है। हरिद्वार के कुम्भ के तीसरे बरस प्रयाग में कुम्भ होता है और उसके तीन वर्ष बाद हरिद्वार में अर्द्धकुम्भ आ जाता है। हरिद्वार के अर्द्धकुम्भ के तीन बरस बाद फिर इलाहाबाद में अर्थात प्रयाग में अर्द्धकुम्भ का योग बन जाता है। आरंभ से ही यह परम्परा चली आ रही है।

कुम्भ-अर्द्धकुम्भ के मेले यूं तो विराट् मेले ही हैं पर ये सामान्य वाणिज्य मेलों की तरह या पशुमेलों की तरह नहीं हैं कि लोग आए व्यापार-खरीददारी की, मनोरंजन किया और खा-पी कर चले गए। कुम्भ-अर्द्धकुम्भ में तो ग्रह-नक्षत्रों की विशेष स्थितियां ही पर्व का निर्धारण करती हैं। इन महापर्वों की खगोलशास्त्रीयता, पौराणिकता, ऐतिहासिकता और सामाजिकता को लेकर चिंतन होते रहे हैं और आगे भी अपेक्षित रहेंगे।

"कुम्भ दर्शन" के लेखक विद्वान कवि-मनीषी डॉ० जगदीश गुप्त ने अपनी पुस्तक में कुम्भ पर्व की पौराणिकता का उल्लेख तीन कथाओं के माध्यम से किया है। इनमें से एक कथा तो "विष्णुयाग" की "कलशोत्पत्ति कथा" ही है। इस कथा के अनुसार क्षीरसागर में कच्छपावतार भगवान् विष्णु की पीठ पर विराट मंदराचल को मथानी और नागराज वासुकि को नेति (रस्सी) बनाकर देवों और दैत्यों द्वारा किया गया समुद्रमंथन का प्रसंग है। जब देवों और दैत्यों ने सागर मंथन शुरू किया तो उसमें से एक एक कर चौदह रत्न निकले। विष, वारुणि, पुष्पक विमान, ऐरावत हाथी, उच्चैःश्रवा अश्व, लक्ष्मी, रम्भा, चन्द्रमा, कौस्तुभमणि कामधेनु गाय, विश्वकर्मा, धन्वंतरि और सबसे अंत में अमृत कुम्भ। जब धन्वंतरि अमृत भरा कुम्भ लेकर निकले तो दैत्य और देव दोनों ही अमृतत्व की प्राप्ति को साकार देखकर उल्लसित हो गए। लेकिन इसी बीच इन्द्र पुत्र जयन्त ने झपटकर धन्वतंरि के हाथों से अमृतकुम्भ छीन लिया और वह भाग निकला। अन्य देव गण भी अमृत कुम्भ की रक्षा के लिए अविलम्ब सन्नद्ध हो गए। इस घटना से बौखलाए दैत्यों ने जयंत का पीछा शुरू किया। जयंत बारह दिन अर्थात मनुष्यों के बारह बरस तक कुम्भ लिए भागता रहा। इस अवधि में उसने बारह स्थानों पर वह अमृतकुम्भ रखा। इनमें से आठ स्थान देवलोक में हैं और चार स्थान भूलोक में भारत में ही हैं। इन्हीं बारह



स्थानों पर कुम्भपर्व मनाने की बात कही जाती है। चूंकि देवलोक के आठ स्थानों की जानकारी हम मनुष्यों को नहीं है अतएव हमारे लिए तो भूलोक, उसमें भी अपने देश के ही चार स्थान महत्व रखते हैं। क्योंकि देवगुरू बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा ने अमृतकुम्भ की सुरक्षा में विशेष योग दिया था अतएव इन्हीं तीन ग्रहों की विशेष स्थितियां विभिन्न स्थलों पर कुम्भ का योग लाती हैं।

डॉ० जगदीश गुप्त ने जिन दो पुराकथाओं का ज़िक्र अपनी पुस्तक कुम्भदर्शन में किया है उनमें एक महर्षि दुर्वासा की कथा और दूसरी कद्रू–विनता की कथा है। दुर्वासा की कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा द्वारा इन्द्र को दी गई दिव्य माला के अपमान के बाद संसार दुर्वासा के भयंकर शाप से त्रस्त हो गया। हुआ यह था कि दुर्वासा की दी माला को इन्द्र ने ऐरावत के मस्तक पर रख दिया और ऐरावत ने उसे खींचकर पैरों के नीचे कुचल दिया। इससे क्रुद्ध होकर दुर्वासा ने जो शाप दिया उससे हाहाकार मच गया। सारे संसार में दुर्भिक्ष फैल गया और प्रजा त्राहि–त्राहि कर उठी। तब भगवान् नारायण की कृपा से समुद्र मंथन की प्रक्रिया के द्वारा लक्ष्मी का प्राकट्य हुंआ। इससे वृष्टि हुई और किसानों का संकट दूर हो गया। उधर अमृतपान से वंचित असुरों ने कुम्भ को नागलोक में छिपा दिया जहां से गरूड़ ने उसको उद्धार किया। इसी प्रक्रिया में क्षीर सागर तक पहुंचने से पूर्व उन्होंने जहां तहां उस कलश को रखा वे ही कुम्भ स्थलों के रूप में प्रसिद्ध हुए।

इसमें तीसरी कथा प्रज़ापति कश्यप की दो पत्नियों के परस्पर सौतियाडाह से जुड़ी हुई है। कश्यप की पत्नियों कद्रू और विनता में इस बात को लेकर विवाद था कि सूर्य के घोड़े काले हैं या सफेद। यह भी तय हुआ कि जिसकी बात झूठी होगी वह दासी बन जाएगी। कद्रू नागराज वासुकि की मां थी जबकि विनता के पुत्र थे वैनतैय गरुड़। कद्रू ने नागवंश के अपने पुत्रके माध्यम से सूरज के घोड़ों को कालेपन से ढक दिया फलतः विनता को हार स्वीकार कर दासी बन जाना पड़ा। दासत्व से मुक्ति का उपाय पूछ ने पर कद्रू ने शर्त रखी कि नागलोक से वासुकि रक्षित अमृतकुंम्भ जब भी कोई ला देगा तभी विनता को दासत्व से मुक्ति मिलेगी। विनता ने यह कार्य अपने पुत्र गरुड़ को सौंप दिया। गरुड़ उस अमृत कलश को लेकर भूलोक होते हुए अपने पिता कश्यप मुनि के गंधमादन स्थित आश्रम की ओर चल पड़े। रास्ते में देवराज इन्द्र ने वासुकि से सूचना पाकर गरुड़ पर चार बार आक्रमण किया। जहां उस दौरान वह अमृत छलक कर गिर गया वहीं पर बाद में कुम्भपर्व मनाने की प्रथा चल पड़ी।

अमृत कुम्भ की इस कथा का स्वरूप हालांकि तीनों स्थानों पर बदल गया है पर तीनों ही स्थानों पर कुम्भ स्थलों के बारे में कोई मतभेद नहीं है। यह जरूर है कि विशेष प्रसिद्धि देवासुर संग्राम के बाद हुए सागर मंथन और उसमें निकले चौदह रत्नों तथा अंतिम रत्न "अमृत कुम्भ" की छीनाझपटी को लेकर प्रचलित कथा को ही मिली है।

अब ज़रा इन पुराकथाओं के आवरण से निकालकर इन कुम्भ–कथाओं को हम खगोलशास्त्रीय आधार पर देखें तो पाएंगे कि हरिद्वार में कुम्भ योग तब बनता है जब बृहस्पति कुम्भ राशि में तथा सूर्य मेष राशि में होते हैं। प्रयाग मे बृहस्पति का वृषस्थ और सूर्य का मकर में संक्रमण कुम्भ पर्व लाता है जबकि बृहस्पति का सिंहस्थ और चन्द्र सूर्य दोनों का मेषस्थ होने का उज्जैन में सिंहस्थ कुम्भ होना सुयोग उपस्थित करता है। नासिक में बृहस्पति के साथ–साथ सूर्य ओर चन्द्रमा भी सिंहस्थ हो जाते हैं।

इसे ग्रह–नक्षत्रों की चाल का ही परिणाम माना जाएगा कि 1991 और 1992 के आठ नौ महीनों के



भीतर ही क्रमशः नासिक और उज्जैन में सिंहस्थ कुम्भ और हरिद्वार में अर्द्धकुम्भ का सुयोग बन गया है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है हर कुम्भ स्थल पर कुम्भ का योग खगोलशास्त्रीय परम्परा के अनुसार बारह बरसों के बाद ही आता है। चूंकि यह मुख्यतः बृहस्पति की विभिन्न राशियों में स्थिति पर ही निर्भर करता है इसलिए बृहस्पति की चाल और राशियों में उसकी स्थिति ही निर्णय कराती है। सामान्यतया बृहस्पति 4332.5 दिनों या कहिए 11 वर्ष 11 महीने और 27 दिनों में 12 राशियों की अपनी परिक्रमा पूरी कर लेता है। यानी हर राशि में बृहस्पति करीब 361 दिन रहता है। जब यह दूसरी राशि वर्ष में होता है तब सूर्य का मकरस्थ होना प्रयाग में शुभ माना जाता है। जब यह पांचवी राशि सिंह में स्थित होता है तब चन्द्र–सूर्य के भी सिंहस्थ होने पर नासिक और सूर्य के मेषस्थ होने पर उज्जैन में शुभ संयोग माना जाता है। यही संयोग हरिद्वार में अर्द्धकुम्भ का सुयोग लाता है :

पद्मिनी नायके मेषे, सिंहस्थेव बृहस्पतौ,
हरिद्ववारे भवेद्योगो, अर्द्धकुम्भाभिवो महान।।

दूसरी ओर बृहस्पति जब ग्यारहवीं राशि कुम्भ में स्थित होता है और जब उस वर्ष सूर्य मेष राशि में संक्रमण करता है तो हरिद्वार में ही पूर्णकुम्भ या महाकुम्भ का योग उपस्थित हो जाता है।

1992 का वर्ष हरिद्वार में अर्द्धकुम्भ के पवित्र सुयोग का वर्ष है। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि "पूर्णकुम्भ" वह भी अमृतपूरित पूर्णकुम्भ की प्रतिष्ठा तो भारतीय परम्परा में होती आई है पर यह अर्द्धकुम्भ क्या है?

पहले इस सन्दर्भ में कुम्भपर्व की खगोशास्त्रीयता पर पुनर्विचार करें। बृहस्पति या गुरू बड़ा प्रभावशाली और प्रकृति से कल्याणकारी व मांगलिक ग्रह है। बृहस्पति को "जल का स्वामी" भी कहा गया है। जिन जलों का वह स्वामी है वे दरअसल दिव्य जल हैं, भौतिक नहीं, ये जल मस्तिष्क में ब्रह्मरंध्र में रहते बताए जाते हैं। हठयोगी साधना पद्धति में यही ब्रह्मरंध्र या सहस्रार–चक्र अमृतकुम्भ है। योग द्वारा इसका अमृतपान करना ही वास्तविक "कुम्भ स्नान" है। शैव सम्प्रदाय के तंत्र ग्रंथों जैसे तत्वसार, निर्वाण तंत्र, शिव संहिता और प्राण तोषिणी में बार–बार कहा गया है कि मनुष्य का शरीर ही समस्त तीर्थों का वास है। सिद्ध साधक सरहपा ने भी "ब्रहमाण्डे यानि वे संति तानि संति कलेवरे" कहकर यही कहा है कि जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वही इस देह पिण्ड में है।

हठयोगी परम्परा में इस मनुष्य शरीर में षटचक्रों की कल्पना की गई है। नाभि स्थित कुडलिनी से ऊपर मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा या प्रज्ञा नामक इन छह चक्रों के भेदन के बाद ही कुंडलिनी सहस्रार की दिशा में बढ़ सकती है।

इन षट्चक्रों का भेदन करने का एक अर्थ षडरिपुओं यानी काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर पर विजय प्राप्त करना भी है। लेकिन ऐसा होने पर व्यक्ति षट्गुणों यानी निर्भेद निर्मात्सर्य, निर्मोह, निर्लोभ, निष्क्रोध एवं निष्काम से विभूषित हो जाता है। जबकि भारतीय अध्यात्म परम्परा कहती है कि अमृतत्व की प्राप्ति तो गुण–अवगुण और भेद–भाव की भावना से भी मुक्त होने के बाद संभव है।

यदि ध्यान से देखा जाए तो बारह बरस की कुम्भ की प्रतीक्षा में जो यह अर्द्धकुम्भ का पड़ाव है वह षट्चक्रों के भेदन के बाद का वह पड़ाव है जहां अमृतकुम्भ की खोज दरअसल अपनी आधी मंज़िल प्राप्त कर लेती है। लेकिन आधी मंज़िल पर ठहरकर यह जान लेना कि हम आगे की यात्राके लिए कितने तैयार हैं यही इस अर्द्धकुम्भ की सार्थकता है। जैसा कि कहा गया है यह हमारी देह अपने आपमें



घट, कलश या कुम्भ ही है। यह "घट" या "कुम्भ" अमृतपूरित हो यही हम सबकी कामना है। अब यह अमृतपूरित कैसे हो? कुछ लोग इसमें वेद के षड़ंगों और षडदर्शनों के अध्ययन चिंतन मनन से अमृत भरने का प्रयास करते हैं तो कुछ लोग भोजन के षट्रसों या संगीत के षट्रागों में अमृत खोजते हैं। कुछ के लिए षट्कर्मों को सम्पादन कर लेना ही साध्य बन जाता है।

पर छह के ये सारे आँकड़े दरअसल देहकुम्भ को अमृत से भरते भी हैं तो आधा। अर्द्धकुम्भ का महापर्व यह संकेत करता है कि यात्रा अभी अधूरी है। पूर्ण कुम्भ की खोज तो इसके आगे है। षट्चक्रों के भेदन को तो हम अर्द्धकुम्भ की प्राप्ति कह सकते हैं पर पूर्ण कुम्भ तो तब होगा जब कुंडलिनी सहस्रार चक्र या ब्रह्मरंध्र में पहुंच जाएगी। यानी इस बात को यूं भी कहा जा सकता है कि बारह वर्षीय कुम्भ यात्रा का यह षट्वर्षीय पड़ाव महज इसलिए है कि हम ठहर कर विचार कर लें कि हमारी यात्रा की दिशा ठीक है या नहीं, बीते छह वर्षो में क्या हम देहासक्ति से परे रहने मे सफल होकर विदेह होने की यात्रा के लिए तैयार हो गए हैं?

ज्योतिषीय गणनाएँ बताती हैं कि हर आठवां कुम्भ अर्थात हर शताब्दी का कोई एवं कुम्भ बारह के स्थान पर ग्यारह वर्ष में जाता है। इसका अर्थ यह हुआ। करीब 48 कुम्भों अन्तराल में पूरे 6 वर्ष का अन्तर बारह वर्षीय यात्रा में पड़ जाता है। यह असंभव नहीं है कि किसी अर्धकुम्भ वर्ष को इसी अन्तराल के कारण "कुम्भ वर्ष" का सा महत्व मिल गया हो और तभी से अर्धकुम्भ को भी महाकुम्भ की तरह ही मनाया जाने लगा हो। यहाँ एक ओर बात उल्लेखनीय है कि हमारे यहां षट् आश्रमों की बात कही गई है। ब्रह्मचर्य गृहस्थ; वानप्रस्थ, संन्यास, हंस और परमहंस। अमृतकुम्भ की तलाश समाप्त होती है परमहंसत्व प्राप्त करने के बाद। महाकुम्भ के स्नान के अवसर पर साधु-संन्यासियों को प्रथम स्नान का अधिकार परम्परागत रूप में प्राप्त होना जहां गृहस्थों द्वारा संन्यास जीवन को सम्मान देना है वहीं संन्यासी के लिए कुम्भ का स्नान हंसत्व ओर परमहंसत्व की दिशा में प्रेरक हो यह भी इस महास्नान के गर्भ में छिपा संकेतार्थ है। कुम्भ यात्रा वस्तुतः दुनियादार गृहस्थ के लिए विराग और विदेह हो जाने की यात्रा है जबकि बैरागी और विदेह सन्यासी के लिए वह हंस-परमहंस हो जाने की बड़ी प्रेरणा है। षट्वर्षीय अर्द्धकुम्भ इस दिशा में गृहस्थों इसलिए भी महत्वपूर्ण पड़ाव है क्योंकि अर्द्धकुम्भ पर सामान्यतया साधु-संन्यासियों की शाही सवरियां नहीं निकलती हैं। जिस साल जिन दिनों में हरिद्वार में अर्द्धकुम्भ होता है उसी साल उन्हीं दिनों में देश के मध्यभाग उज्जैन तीर्थ में सिंहस्थ-कुम्भ होता है। सारे साधु-संन्यासी अपने अखाड़ों के साथ उज्जैन में पहुँचे होते हैं। हरिद्वार में जो लोग अर्द्धकुम्भ का स्नान करते हैं वे अधिकांशतः गृहस्थी और वानप्रस्थी ही होते हैं।

सातवी शताबदी में सम्राट हर्षवर्धन हर छठे बरस इलाहाबाद में 'महादान पर्व' आयोजित करता था जिसका उल्लेख इसी पुस्तक में अन्यत्र है। ऐसा लगता है कि हर छठे साल एक गृहस्थी सम्राट द्वारा अपना सब कुछ दान करके 'संतुष्ट' हो जाने की परम्परा भी इस अर्द्धकुम्भ के साथ जुड़कर इसके महत्व को बढ़ाने में सहयोगी हुई होगी।

इस तरह अर्द्धकुम्भ एक तरह से गृहस्थों के लिए अध्यात्म चिंतन और अपने लक्ष्य के प्रति मनन का पर्व है। अर्द्धकुम्भ ही सही अर्थो में सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से ऐसा महत्वपूर्ण अवसर है जिसमें समाज का वह वर्ग एक साथ आ जुटता है जिसे समाज का धुरी-वर्ग कहा जा सकता है जिस वर्ग पर संन्यस्त वर्ग की जीविका का भी भार है ऐसे गृहस्थ जनों का पर्व है अर्द्धकुम्भ। कुम्भ की पूर्णता तो वे तभी कर पाएंगे जब समाज का चिंतक, मनीषी और ऋषिवर्ग उन्हें कुम्भयात्रा कराएगा पर तब तक देहघट को



अमृत से आधा ही सही, भर लेने की कला और प्रेरणा देने वाला यही अर्द्धकुम्भ है। साधु–संतों ने "धन्यो गृहस्थाश्रमः" कहकर यूँ तो गृहस्थाश्रम को अपने से अधिक महत्व दे डाला है पर यह उनका बड़प्पन है। जैसे गार्हस्थ की पूर्णता संन्यास भाव जगा लेने में है, ठीक वैसे ही जैसे संन्यास की पूर्णता परम–हंसत्व की प्राप्ति में है। सामान्य देहकुम्भ की कामना और सार्थकता कुम्भ में गुणों का, सद्‌गुणों का अमृत संचित कर लेने में है जबकि सद्‌गुणों भरी देह तो वह अर्द्धकुम्भ है जो गुणातीत हो जाने और षड्दर्शनों, षडंगों, षटचक्रों, षट रिपुओं, षट्‌कर्मों और षट्रसों से परे निकलकर सहस्रार के अमृतकुम्भ, ब्रह्मरंध्र या ब्रह्मकुण्ड में गोते लगाने की स्थिति है। अर्द्धकुम्भ उसी स्थिति को पाने के लिए आधा रास्ता तयकर लेने की सूचना और घोषणा है। गृहस्थाश्रम जिस तरह प्रभु कृपा के अमृत की प्राप्ति के लिए की जाने वाली यात्रा की आधी मंजिल है उसी तरह अर्धकुम्भ महाकुम्भ की, पूर्ण अमृतत्व की प्राप्ति के मार्ग का पड़ाव है। चूंकि अर्द्धकुम्भ का पर्व भी पूरे बारह बरस बाद ही आता है अतः कहा जा सकता है कि सही अर्थों में यही गृहस्थों का कुम्भ है।

तीर्थ पुरोहित एवं बही



साधु संगठन – शस्त्र और शास्त्र की परम्परा

आदि जगद्गुरू श्री शंकराचार्य के आविर्भाव से पूर्व जब देश में बौद्धों का महिमाकाल था तब भगवान बुद्ध द्वारा ही अपने धर्मसाधकों के बीच "संघ" की परम्परा का सूत्रपात हुआ। एक धर्माचार्य उच्चाधिकारी अधीन तब धर्मसाधकगण रहते थे और संघ की रीति–नीतियों और व्यवस्थाओं को ही जीवन का सर्वोच्च नियामक मानते थे। बुद्ध ने "संघम् शरणम् गच्छामि" कह कर भिक्षु–समूहों को सर्वोच्च सम्मान दिया था।

कालान्तर में आदि शंकराचार्य द्वारा अद्वैतवाद की स्थापना और सनातन हिन्दू धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा के बाद हिन्दू साधु–समुदाय की एकान्त साधना भी टूटी और सर्वथा पहली बार ये लोग भी एकजुट होकर समाज रक्षा के लिए एक हाथ में शस्त्र और दूसरे हाथ में शास्त्र लेकर आगे आए। शंकर के अनुयायी संन्यासियों के बीच दशनामी परम्परा का सूत्रपात हुआ। इन दशनामी संन्यासियों में एक ओर स्थिर–रचना (स्टेटिक फार्मेशन) के अंतर्गत शास्त्र–साधक संन्यासी और दूसरी ओर सामरिक–रचना (फील्ड फार्मेशन) के अन्तर्गत शस्त्र–साधक साधु एकत्र हुए।

स्थिर रचना उपर से नीचे की ओर आम्नाय, पद, मढ़ी और मठ की सांगठनिक इकाइयों के माध्यम से सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए लोकोपयोगी कार्यों की ओर झुकी। उधर सामरिक रचना अखाड़ा, दावा, मढ़ी और धूनी नामक इकाइयों के माध्यम से तीर–तलवार और भाले–बरछे लेकर धर्म–द्रोहियों और विरोधियों को कुचलने के लिए मैदान में उतर गई।

आदि शंकराचार्य ने स्वयं अपने रहते भारत की चार दिशाओं में चार पीठों की स्थापना करके पूर्वाम्नाय, पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय और दक्षिणाम्नाय की स्थापना की। संन्यासियों के दशनाम पदों को शंकराचार्य ने इन्हीं चार आम्नायों के अधीन कर दिया।

पूर्वाम्नाय की मुख्य पीठ उड़ीसा प्रान्त की श्री जगन्नाथपुरी में स्थापित की गई और उस पीठ को गोवर्द्धन पीठ नाम दिया गया। "वन" और "अरण्य" ये दो पद या संघ इस आम्नाय या पीठ से संबद्ध कर दिए गए। पश्चिमाम्नाय की मुख्य पीठ द्वारिका में स्थापित की गई और उसे शारदापीठ के नाम से पुकारा गया। इस पीठ के अधीन किए गए "तीर्थ" और "आश्रम" पदनाम वाले संघ। उत्तराम्नाय का मठ उत्तराखंड के तीर्थ श्री बद्रीनाथ के निकट जोशीमठ में स्थापित हुआ और उसे नाम मिला ज्योतिर्पीठ या ज्योतिर्मठ। "गिरि", "पर्वत" और "सागर" ये तीन पदनाम इस संघ के साथ जुड़े। चौथी पीठ दक्षिणाम्नाय के रूप में श्रगरी में श्रृंगेरी मठ के नाम से स्थापित की गई और "पुरी", "भारती" और "सरस्वती" ये तीन पदनाम इस पीठ के साथ संबद्ध कर दिए गए।

मढ़ी सामान्यतया प्रवेश या दीक्षाकेन्द्र मानी जाती है अतएव आरंभ में सभी संन्यासियों के लिए यह जरूरी होता है कि वे किसी न किसी मढ़ी के अधीन अपने को नामांकित कराएं। आरंभ से 52 मढ़ियां चली आ रही हैं और सारा संन्यासी सँप्रदाय इन्हीं बावन मढ़ियों के बीच बंटा हुआ है। गिरियों की 27, पुरियों की 16, भारतीय की 4, वन की 4 तथा तिब्बती लामाओं की एक मढ़ी है। तीर्थ, आश्रम, सरस्वती और भारती इन चार पद नामों वाले संन्यासियों को दण्डी और शेष को गोसाईं कहा जाता है।



जिस तरह श्री आदि शंकराचार्य के समय में चार आम्नायों और चार पीठों की स्थापना की गई उसी प्रकार उसके तुरंत बाद ही संन्यासियों के लिए यह व्यवस्था भी की गई कि वे चार दिशाओं में लगने वाले कुम्भ मेलों पर एकत्र होकर परस्पर धर्मचर्चा, विचार-विमर्श और रीति-नीतियों का निर्धारण समाज के लिए किया करें। तभी से कुम्भ पर्वो पर साधु-संन्यासियों के एकत्र होने की परम्परा आरंभ हुई जिसने कालान्तर में कुम्भ के मेले में प्रमुख स्थान ले लिया। तभी से जोगियों के लिए यह अनिवार्य कर दिया गया था कि वे कुम्भ-स्थलों पर एकत्र लाखों गृहस्थों से मिलकर समाज की अवस्था, व्यवस्था और दुरव्यवस्था पर चिंतन-मनन करें और समाज को नई दिशा प्रदान करें।.

साधुओं की परम्परा में बाद में बैरागी और उदासीन साधुओं ने भी अपने संगठन खड़े किए। दशनाम संन्यासियों के परम्परा में जो अखाड़े प्रसिद्व हुए उनमें से सात आज भी अपनी लोकतंत्रीय पंचायती परंपरा के अनुसार समाज में कार्यरत हैं।

रामभक्त बैरागियों के तीन अखाड़े इन दिनों प्रमुख रूप से कार्यरत हैं। दशनामी संन्यासियों के आराध्य "शिव" और बैरागियों के आराध्य "राम" के बीच हालांकि कोई मतभेद नहीं है, बल्कि दोनों एक दूसरे के भक्त ही बताए जाते हैं, पर संन्यासियों और बैरागियों के बीच प्रतिष्ठा का संघर्ष बड़े लम्बे समय से चलता आ रहा है। आज़ादी के बाद के कुम्भ ही इस त्रासदी से करीब करीब मुक्त रहे हैं अन्यथा पहले का इतिहास इन दोनों संप्रदायों के संघर्ष की अनेकानेक कहानियां कहता है। अब तो सभी अखाड़ों की संयुक्त परिषद भी बन गई है और कुम्भपर्वों पर स्नान के लिए इन सबमें परस्पर लिखित सहमति भी हो गई है। अतः अब संघर्ष की केवल स्मृतियों ही शेष हैं।

संन्यासियों और बैरागियों के अलावा श्री गुरू नानक देव के सुपुत्र श्रीचन्द्र जी ने उदासीन सम्प्रदाय की नींव रखी। उदासियों के दो अखाड़े इन दिनों समाज में कार्यरत हैं जबकि पिछली सदी में ही सिख-साधुओं के एक नए संप्रदाय "निर्मल संप्रदाय" के निर्मल अखाड़े ने भी काम करना शुरू किया है। इस तरह कुल मिलाकर तेरह अखाड़े कुम्भ पर्वों पर अपनी निर्धारित बारी से स्नान करते हैं। साधुओं का कुम्भ स्नान "शाही स्नान" कहलाता है क्योंकि स्नान से पूर्व और पश्चात इनकी सवारियां हाथी घोड़ों पालकियों और शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर बिलकुल ऐसे निकलती हैं जैसे किसी राजा - महाराजा की शाही सवारी जा रही हो। कुम्भ यात्रियों के लिए यह दृष्य भी अत्यंत रोमांचक और आकर्षण भरा होता है।

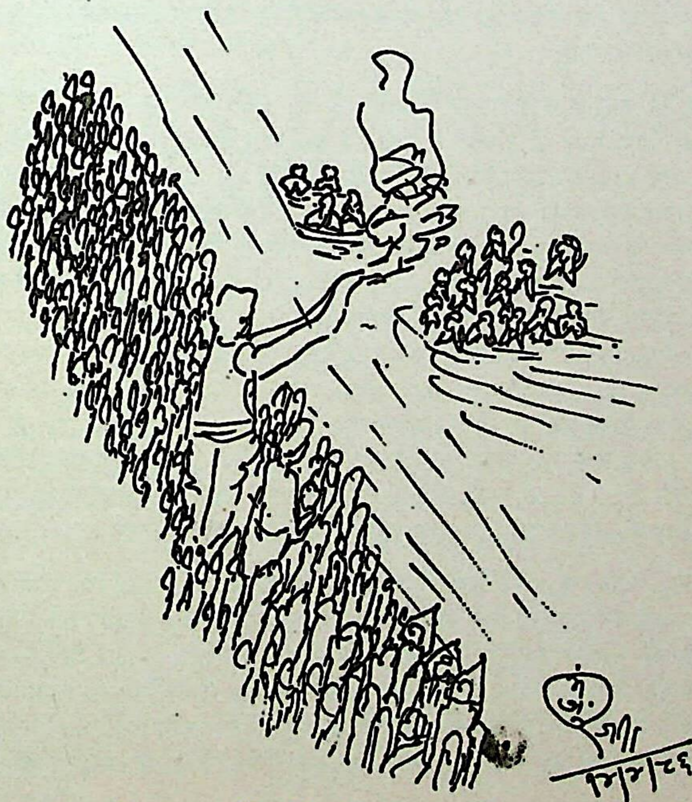
अर्द्धकुम्भ मनाने की परम्परा केवल उत्तर प्रदेश के दोनों कुम्भस्थलों इलाहाबाद और हरिद्वार में ही है। ग्रह-नक्षत्रों का संयोग कुछ ऐसा बैठता है कि जिस साल हरिद्वार में अर्द्धकुम्भ होता है उसी साल मध्यप्रदेश के उज्जैन नगर में सिंहस्थ कुम्भ पर्व का योग बैठता है। चूंकि उज्जैन का सिंहस्थ कुम्भ पर्व बारह बरस में एक बार ही आता है अतएव साधु-संन्यासियों की जमातें अधिकांशतः हरिद्वार के स्थान पर उज्जैन चली जाती हैं और वहीं कुम्भ का "शाही स्नान" करती हैं। लेकिन हरिद्वार और उज्जैन की तिथियों में अन्तर होने के कारण कुछेक् साधु दोनों पर्वों को साधने में भी सफल हो ही जाते हैं।

कुम्भ-अर्द्धकुम्भ पर्वो से साधु-संन्यासियों के जुड़ने की परम्परा ने इन जनपर्वों को जो दिव्यता और आध्यात्मिकता प्रदान की उसने जहां लोकमानस में "विरक्तों के सम्मान"का महत्व बढ़ाया वहीं संग्रहशील गृहस्थ को यह संदेश भी दिया कि सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक मान-सम्मान प्राप्ति का एकमात्र तरीका त्याग ही है, भोग नहीं, । इसी भाव को सम्मान देने के लिए कोई ज़माना था



जब कुम्भ में आने वाले संत–महंतों की सवारियों को "शाही सवारी" बनाकर स्वयं राजा–महाराजा और सम्राट उन्हें अपने कंधों पर ढोया करते थे। यही नहीं इस एक दिन के लिए वे अपने तमाम राजसी अलंकार विरक्त संन्यासियों के चरणों में रख दिया करते थे। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने अपनी भारत यात्रा के दौरान ऐसा दृश्य इलाहाबाद के कुम्भ में स्वयं देखा था। वह लिखता है कि , "महाराज हर्षवर्धन ने कुम्भ पर्व में भाग लिया। वह अपने परिवार के साथ त्रिवेणी आया। संगम–स्नान और पूजा–पाठ के पश्चात उसने अपना खजाना दान कर दिया। पहले उसने बुद्ध की मूर्ति बनवाई और अपने बहुमूल्य जवाहरात बुद्धदेव को समर्पित कर दिए। उसके पश्चात् उसने संगम के पुरोहितों को हीरे–जवाहरात दान किए। अन्य पुरोहितों और गरीबों को भी दान दिया। जब महाराज के पास कुछ भी नहीं बचा तो उसने अपना कंठहार और राजमुकुट तक दान में दे दिया। ऐसा करने में महाराज को ज़रा भी कष्ट नहीं हुआ। उसे इस धार्मिक कार्य में सफलता प्राप्त करने का सन्तोष था।"

धूनी रमाने वालों के चरणो में राजसी वैभव बिखेर देने का यह महापर्व इसलिए भी लोक मानस में महत्ता हासिल करता चला गया क्योंकि वस्तुतः इस अवसर पर भारतीय अध्यात्म की इस सार्थक परम्परा को बल–सम्बल मिलता है कि आसक्ति और अनुरक्ति की अंतिम मंज़िल दरअसल विरक्ति ही है; अनुराग को अन्ततः विराग के चरणों में ही समर्पित होना है। भारतीय साधु परम्परा इसी तथ्य और इसी तत्व का द्योतन करती कराती है।



श्री गंगा जी की सांध्य कालीन आरती



हरिद्वार के पवित्र घाट : धार्मिक सन्दर्भ

शैवों के "हरद्वार" और वैष्णवों के "हरिद्वार" को मोक्षदायिनी सप्तपुरियों मथुरा, काशी, काँची, अवंतिका, जगन्नाथपुरी, द्वारिका के साथ ही "मायापुरी" के नाम से अभिनन्दित और सम्मानित किया गया है। आस्तिकमना भारतीय के लिए हरिद्वार एक ऐसा स्नान–तीर्थ है जहाँ लगने वाले कुम्भ और अर्द्धकुम्भ सहित मकर और मेष संक्राति के स्नान मेले, शिवरात्रि और श्रावण के महीनों की कांवड़यात्राएं, पूर्णिमा, अमावस्या और अन्य तिथि पर्वों के स्नान–क्षण सदियों से आकर्षित करते रहे हैं। लाखों तीर्थयात्री और पर्यटक सामान्य रूप से भी हरिद्वार के साफ–सुथरे, लम्बे चौड़े और प्रशस्त घाटों पर स्नान का न केवल पुण्य लूटते हैं बल्कि देवनदी गंगा की अन्यत्र दुर्लभ कलकल निनाद करती निर्मल जलधारा की शीतलता और अविराम प्रवाह का अलौकिक सुख भी लेते हैं।

यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि हरिद्वार में जितने विशाल और प्रशस्त और पक्के घाट गंगा नहर के किनारे किनारे बने हैं उतने और वैसे पक्के घाट हरिद्वार से पहले या बाद में गंगा किनारे के नगरों में कहीं भी नहीं है। पुरातन और नूतन घाटों के नगर हरिद्वार में जब यात्री आता है तो उसे यहां के घाटों और गंगा तटों की विस्तृत और धार्मिक जानकारी भी कई बार नहीं होती है। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य यह जानकारी प्रस्तुत करते हुए यह बताना भी है कि हरिद्वार में हरकी पौड़ी ही एकमात्र पवित्र स्नान स्थल नहीं है बल्कि हर की पौड़ी के समान ही पवित्र और प्राचीन अन्य स्नान स्थल भी हैं जिनकी ओर प्रायः स्नानार्थी यात्री का ध्यान नहीं जा पाता है।

जैसा कि अन्यत्र लिखा जा चुका है हरिद्वार उत्तर से दक्षिण की ओर सतत् अविराम गति से बहती हुई गंगा के पश्चिमी तट पर बिल्व पर्वत की तलहटी में लम्बाई में बसा नगर है। नगर के पूरब में नगर से सटी हुई गंगा की वह नहर बहती है जिसे अंग्रेज अभियंता कर्नल प्रॉबी टी॰ कॉटले ने 1864 में शुरू किया था। नहर बनने से पहले आज की नहर से पूरब में खड़े नीलपर्वत की तलहटी तक पवित्र गंगा का ही पाट था। नहर निकलने के बाद जहां गंगा का अधिकांश जल नहर में बहने लगा वहीं अनिबर्न्धित गंगा नदी नीलपर्वत की तलहटी में पहले की ही तरह बहती रही। आज रेतीले प्राकृतिक तटों वाली यह पवित्र धारा जिसे "नीलधारा" कहते हैं, बिना किसी प्रदूषण के नितान्त प्राकृतिक रूप में बलखाती सर्पिणी सी बह रही है। अमृतकुम्भ के लिए सागर मंथन करते देव और दैत्य उस समय घबरा गए जब मंथन के परिणाम स्वरूप सागर से हलाहल विष निकल आया। विष के साथ जो ज़हरीली गैसें और मृत्यु समान पीड़ा देने वाले प्रभाव पैदा हुए तो सब प्राणी त्राहि–त्राहि कर उठे। कोई समझ ही नहीं पा रहा था कि इस कालकूट विष से कैसे छुटकारा पाएं। संकट के उन क्षणों मे किसी को भूतभावन शिव की याद आ गई। दैत्य और देव सभी महादेव की शरण में पहुंचे और उन्हें अपनी समस्या बताई कि अगर सागर मंथन से निकले विष को समाप्त नहीं किया गया जो चराचर जगत समाप्त हो जाएगा।

शिव ने अपने नाम के अनुरूप विष के दारुण कष्ट से जूझते उन सबको अभयदान दिया और स्वयं उस सारे विष को पी लिया। हलाहल कालकूट विष को अपने कण्ठ में स्थान देने से एक ओर शिव ने सारे संसार को अपने शिवत्व का आशीष देकर विष–व्यथा से मुक्ति दे दी पर स्वयं महादेव शिव विकल हो गए। अपने कण्ठ में रखे विष के प्रभाव से शिव का कण्ठ नीला पड़ गया। विष की ऊष्मा कम करने के लिए जहां शिव ने सागर मंथन से निकले शीतलता प्रदान करने वाले चन्द्रमा को अपने मस्तक पर धारण किया वहीं वे हरिद्वार की इसी नीलधारा गंगा में स्नान करने के लिए पहुंचे। हरिद्वार की इस



नीलधारा में स्नान करके विष का प्रभाव कम करने के बाद देवाधिदेव शिव ने यहीं नीलपर्वत की तलहटी में विश्राम किया। आगे उत्तर की ओर हिमालय के अपने धाम लौटते हुए नीलकंठ शिव ने इसी नीलपर्वत की उपत्यकाओं को अपना पड़ाव बनाया। आज भी हरिद्वार की गंगा के पूरबी किनारे पर नीलपर्वत की तलहटी में स्थित नीलेश्वर का मंदिर और लक्ष्मणझूला क्षेत्र में इसी पर्वतश्रृंखला पर बना नीलकंठ महादेव का मंदिर शिव के नीलकंठ होकर विश्व का कल्याण करने के उज्जवल उदाहरण की याद दिलाता है।

नीलकंठ महादेव ने जहां स्नानकर अपनी विष-व्याधि को शान्त किया हो ऐसा नीलगंगा या नीलधारा का पावंन प्राकृतिक तट कुम्भ और अर्द्धकुम्भ में आने वाले यात्रियों को उन पुण्यक्षणों में स्नान करने के प्रभाव को कई गुना और बढ़ा देने वाला है। हरिद्वार के नीलक्षेत्र के सन्दर्भ में स्कन्दपुराण की एक कथा के अन्तर्गत स्वयं भगवान् शिव अश्मचित्त को वर देते हुए कहते हैं :

मामर्द्ध नाम को भूयाद्गणश्च द्विजसत्तम् ।
नाम्ना नील इतिख्याति यास्यति भुविचोत्तमाम् ।।

अत्र वै गिरिराजस्य नामैव सम्भविष्यति।
नीलपर्वत इति वै स्मरणाच्छिवदायकः।।

अत्र वै निवासिष्यामि त्वयासह गणेश्वरः।
नीलेश्वर इतिख्यातो भक्तानां प्रीतिवर्द्धनः।।

इस तरह भगवान् शिव की साक्षात् कृपा से ओतप्रोत या नीलक्षेत्र यहां की नीलधारा में स्नान करने वाले भक्तों सांसारिक व्याधियों के विष का परिहार कर उन्हें आत्मिक शांति तो प्रदान करता ही है उनकी हरिद्वार यात्रा को भी पूर्णता देता है। क्योंकि कहा गया है किः

गंगाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते।
स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते।।

नीलधारा के विशाल प्राकृतिक तट के साथ ही उत्तर में सप्तर्षियों की तपस्थली के रूप में सप्तश्रोत या सप्तसरोवर का इलाका पड़ता है। यह सारा क्षेत्र भी प्राकृतिक गंगा के किनारे बसा हुआ है। बाढ़ के भय से इस क्षेत्र की सप्तधार गंगा को एक अप्राकृतिक बांध से रिहायशी क्षेत्र से अलग कर दिया गया है। पर यह सारा रिहायशी क्षेत्र भी विभिन्न संत-महंतों, मंडलेश्वरों और महामंडलेश्वरों के आश्रमों से आबाद है। इसे हम हरिद्वार का संन्यास क्षेत्र मजे में कह सकते हैं। सैकड़ों की संख्या में यहां के आश्रम-मठ-देवस्थान एक दिव्य वातावरण बनाए रहते हैं जिसमें विरक्तों की टोलियां, भगवे वस्त्रों में टहलते महात्मा, हरिनाम संकीर्तन, आध्यात्मिक प्रवचन, कथा श्रवण आदि के दृश्य ही दिखाई पड़ते हैं। कभी यह सारा क्षेत्र गौतम, भारद्ववाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि आदि सप्तर्षियों की तपस्थली रहा है। सातों ऋषि गंगावतरण से पूर्व इसी क्षेत्र में तपरत थे। जब भगीरथ गंगा को लेकर आए तो गंगा के मार्ग में इन सातों ऋषियों की कुटियाएं देखकर रुक गए। उन्होंने और उनके साथ गंगा ने भी सप्तर्षियों से प्रार्थना की कि वे अपना स्थान छोड़ दें तो गंगा अपने पूरे वेग से आगे बढ़ जाए। पर सप्तर्षियों ने हरिद्वार की समतल धरती पर गंगा के वेग को कम करने के लिए अपने स्थान न छोड़ने का निश्चय किया। उन्होंने कहा कि गंगा आगे जाना चाहे तो हमारी कुटियाओं के आसपास होकर निकल जाए। हम तो नहीं हटेंगे। गंगा और भगीरथ दोनों को बात माननी पड़ी। गंगा



इस क्षेत्र में सात अलग अलग धाराओं में बंट गई और धीरे से, सप्तर्षियों की कुटियाओं को बचाते हुए आगे निकल गई।

जहां गंगा को आप्त पुरुषों के वचनों का पालन करने के साथ-साथ जनहित में अपने वेग को कम करने के लिए स्वयं को धाराओं में बांटना पड़ा हो ऐसा सप्तसरोवर क्षेत्र स्नान करने वाले यात्रियों के लिए आज भी सुविधा, विस्तार और पुण्यप्राप्ति तीनों ही दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। दरअसल देखा जाए तो जिसे गंगाद्वार कहकर पुराणों में सम्मानपूर्वक स्मरण किया गया है वह क्षेत्र यही सप्तसरोवर का क्षेत्र है। यहीं पहाड़ों से उतरने वाली गंगा को पहली बार जनहित और जनकल्याण के लिए न केवल समतल धरती का स्पर्श करना होता है बल्कि अपने वेग, तीव्र गति और धूंआधार प्रवाह को किंचित लगाम देनी होती है। जहां वेगवती गंगा को सप्तर्षियों के सम्मान में अपनी उच्छ्ृंखलता पर काबू करने पर बाध्य होना पड़ा हो उस सप्तसरोवर क्षेत्र की गंगा में स्नान करना सामान्य मनुष्य को पुण्यदायी होने के साथ साथ न जाने कितनी सांसारिक उच्छ्ृंखलताओं से मुक्ति की प्रेरणा देता है।

सप्तसरोवर जहां हरिद्वार के उत्तर में है तो वहीं हरिद्वार के दक्षिण् में एक और प्राचीन तथा पुराणचर्चित तीर्थ और स्नान-स्थल कनखल है। प्रजापति दक्ष की राजधानी के रूप में विख्यात यह नगरी किन पुराकथाओं से जुड़ी है और इसका क्या महत्व है यह तो हम इसी पुस्तक में अन्यत्र लिख चुके हैं। यहां केवल यह बता देना उचित होगा कि हरिद्वार से भी प्राचीन यदि कोई तीर्थ या मोक्षकारी स्नान-स्थल है तो वह कनखल ही है। देवाधिदेव महादेव शिव की ससुराल के रूप में विख्यात् यह नगरी दो विपरीत ध्रुवान्त देख चुकी है। शिवप्रिया महामाया सती का आत्मदहन स्थल होने से यह नगरी जहां शिवगणों के प्रकोप का केन्द्र बनी थी वहीं प्रजापति दक्ष को जीवनदान देने के बाद उनकी प्रार्थना पर महादेव ने यहां लिंगरूप में निवास करने का आशीष भी इस नगरी को दिया था। आज भी दक्षेश्वर महादेव का कनखल स्थित मंदिर आशुतोष शिव के इस आशीष के प्रमाण स्वरूप भक्तों की आस्था और श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है।

कनखल के सतीघाट और दक्षघाट अपनी प्राचीनता और पौराणिकता के कारण हरिद्वार के प्रमुख मोक्षदायी स्थलों में गिने जाते हैं। हरिद्वार में आकर अपने पुरखों की अस्थियों को पवित्र गंगा में प्रवाहित करने वाले लोगों में अधिकांश कनखल को हरकी पौड़ी से भी अधिक महत्व प्रदान करते हैं।

हरकी पौड़ी तो हरिद्वार का केन्द्रस्थल है। गंगाद्वार या हरिद्वार के नाम से विख्यात् इस नगरी का पूर्वी किनारा आज भले ही "कॉटले की गंगा" अर्थात गंगा नहर को तट प्रदान करता रहा हो पर गंगावतरण के बाद यह पिछली सदी तक यह अनिबन्धित और अविच्छिन्न गंगा के तट पर बसा नगर ही था। हरकी पौड़ी का ब्रह्मकुण्ड महाराज श्वेत द्वारा ब्रह्मा की तपस्या किये जाने और स्वयं ब्रह्मा द्वारा प्रसन्न होकर वहां सदा निवास किये जाने के कारण स्नानर्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना रहा है। कुम्भ के अवसर पर साधु-संन्यासी इसी स्थल पर स्नान करके कुम्भ के पुण्य की प्राप्ति करते आए हैं।

लेकिन यह एक गलत धारणा हरिद्वार आने वाले स्नानार्थी के मन में घर कर गई है कि हरकी पौड़ी पर ही केवल स्नान करने से पुण्य प्राप्त होता है। लेकिन यही सच नहीं है। पुराणचर्चित मायापुरी तो 12 योजना लम्बी और तीन योजन चौड़ी मानी गई है। इसके पूर्व में नीलपर्वत, पश्चिम में वार्पणी नदी, उत्तर में रत्नस्तम्भ और तथा दक्षिण में नागतीर्थ को इसकी सीमा बताया गया है। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि मुक्तिदायिनी सप्तपुरियों में प्रतिष्ठत मायापुरी सिर्फ हरकी पौड़ी नहीं है। सप्तसरोवर से लेकर कनखल तक के मौजूदा गंगातट सर्वत्र पापों का प्रक्षालन कर व्यक्ति को मोक्ष देने वाले हैं।



ऊपर वर्णित घाटों के अतिरिक्त कुशावर्त और बिल्वपर्वत की तलहटी में स्थिति गौरीकुण्ड को भी हरिद्वार के पंचतीर्थों में स्थान मिला है। कुशावर्त घाट हरकी पौड़ी के दक्षिण में स्थित है। इस घाट पर कभी भगवान् दत्तात्रय ने तपस्या की थी। यहां उनकी आसन कुशाएं गंगा के जलावर्त में आ गई थीं इसीलिए इस स्थल को कुशावर्त कहा जाने लगा। पिण्ड दानादि के लिए यह स्नान स्थल सर्वोत्तम माना जाता है आज भी यहां सुन्दर घाट और भगवान दत्तात्रय का मंदिर प्रतिष्ठित है। मेष की संक्रांति पर यहां पितरों को पिण्ड दान करने का विशेष महत्व बताया गया है।

हरिद्वार के पूरब में स्थित बिल्वपर्वत की तलहटी में स्थित बिल्वकेश्वर महादेव का मंदिर और वहां गौरीकुण्ड का स्नान भी पुनर्जन्म से मुक्ति देने वाला बताया गया है। परंतु बेहद संकरा और अत्यंत छोटा होने के कारण यह गौरीकुण्ड स्नानार्थियों के लिए बहुत ही असुविधानजक है। हाँ, इस बिल्वपर्वत की चोटी पर स्थित मंसादेवी का मंदिर और उस तक पहुंचाने वाला विद्युतचालित रज्जुमार्ग (रोप वे) अलबत्ता यात्रियों के लिए आकर्षण का स्थल है।

कुशाघाट से आगे यूं तो गंगानहर के किनारे किनारे बने हर भवन के अपने निजी घाट हैं पर श्रवणनाथ घाट, रामघाट, विष्णुघाट और बिरलाघाट तथा गणेशघाट अत्यंत प्रशस्त स्वच्छ और सुविधापूर्ण घाट हैं। पुण्य की इच्छा रखने वाले, पर भीड़भाड़ से बचने वाले समझदार स्नानार्थी इन घाटों के साथ ही गंगानहर के पूर्वी किनारे पर बने लम्बे विस्तीर्ण घाटों पर स्नान करना अधिक सुविधाजनक मानते हैं।

दरअसल हरिद्वार तो है ही मंदिरों, घाटों, आश्रम–अखाड़ों और पुलों की नगरी। उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग ने अनेक धर्मनिष्ठ व्यक्तियों तथा संस्थाओं ने यहां जगह–जगह निजी और सार्वजनिक घाट बनवाकर लोगों को प्रशस्त स्नान–स्थल उपलब्ध कराए हैं। पंतद्वीप के नाम से मशहूर हरकी पौड़ी का उत्तरी हिस्सा गंगा की एक पुरातन और अविच्छिन्न धारा तट पर ही स्थित है। हाल ही में सिंचाई विभाग ने पंतद्वीप के पूर्वी और पश्चिमी तटों को पक्के घाट की शक्ल देकर स्नानार्थी यात्रियों के लिए घाटों की संख्या बढ़ा दी है।

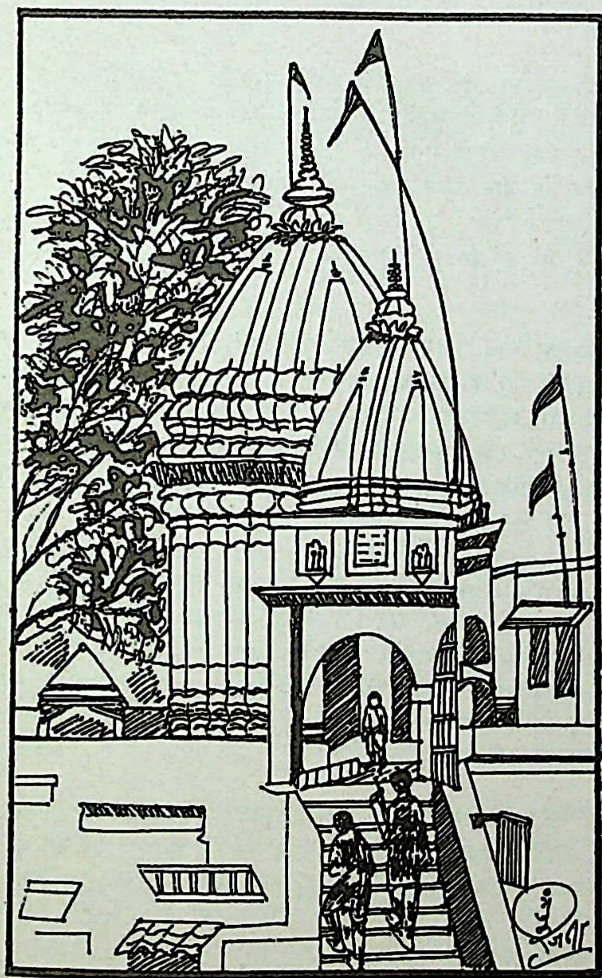
हरकी पौड़ी के उत्तर में ही कांगड़ा घाट और सामने बना मालवीय द्वीप का प्रश्स्त घाट हरकी पौड़ी के संकरे ब्रह्मकुण्ड की तुलना में अधिक सुविधाजनक बन गया है। दक्षिण की ओर का लम्बा चौड़ा प्लेटफार्म, जिसे सुभाषघाट कहते हैं, भी स्नानर्थियों के लिए पवित्र के लिए पवित्र और प्रशस्त दोनों ही है।

हरिद्वार की पंचपुरियों में फैले ये सभी विस्तीर्णघाट और स्नान स्थल एक दूसरे से बढ़ चढ़कर मोक्षदायी और पवित्र स्नान स्थल है। पुराणों–शास्त्रों, संत–महंतों, ऋषि–मुनियों महामंडलेश्वरों और यहां तक कि जगदगुरू शंकराचार्यों आदि सभी ने पूरे हरिद्वार को पवित्र स्नान स्थल बताते हुए सप्त सरोवर से कनखल तक कहीं भी नहाने पर उतना ही पुण्य मिल ने की बात कही है जितना हरकी पौड़ी पर नहाने से मिलता है। हरिद्वार आओ तो कहीं भी नहाओ। पुण्य उतना ही मिलेगा जितना आपने सोचा है।



दक्ष प्रजापति मंदिर, कनखल, हरिद्वार





चण्डी देवी मंदिर, हरिद्वार



हरिद्वार : देव दर्शनों की दृष्टि से

यूं तो हरिद्वार प्रमुख रूप से स्नानतीर्थ है परन्तु पवित्र गंगा में स्नान के बाद व्यक्ति स्वाभाविक रूप से देवदर्शन की इच्छा रखंता है। इस दृष्टि से पंचपुरी हरिद्वार में ऐसे अनेक धर्मस्थल हैं जहां तीर्थयात्री श्रद्धापूर्वक माथा टेकने जाते हैं।

मायापुरी हरिद्वार की अधिष्ठात्री देवी मायादेवी का मंदिर इनमें प्रमुख है। सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने उन्नीसवीं शताब्दि में इसी मंदिर में दसवीं शताब्दी के भग्नावशेष देखे थे। जैसा कि अन्यत्र उल्लेख आया है मायादेवी का मंदिर उन शक्तिपीठों में से एक है जहाँ महामाया सती का हृदय और नाभि अंग गिरा था। यह स्थल आज शहर के बीचों बीच बड़ी-बड़ी इमारतों से घिर जाने के कारण सहसा यात्रियों की नज़रों से ओझल रहता है। पर यह रेलवे स्टेशन और हरकी पौड़ी के मध्य सड़क के पूरब में स्थित हैं। इस मंदिर के पास ही प्राचीन भैरव मंदिर है। ये दोनों मंदिर पंच दशनाम श्री जूना अखाड़े की देखरेख में हैं।

कनखल का दक्षेश्वर महादेव का मंदिर प्राचीन मंदिरों की श्रेणी में दूसरा है। इस मंदिर में महाशिवरात्रि और श्रावण के हर सोमवार को विशेष मेला लगता है। इस मंदिर के संरक्षक पंचायती श्री महानिर्वाणी अखाड़े ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर इसे भव्य रूप दे दिया है। इसके निकट ही श्री गणेश, हनुमान, कालभैरव और दशमहाविद्याओं के भव्य सुन्दर मंदिर हैं। पडौस में ही श्री आनन्दमयी मां,की गुरूगद्दी है।इस परिसर के सामने श्री आनन्दमयी मां का आश्रम और मां की भव्य समाधि भी स्थित है।

कनखल के अन्य मन्दिरों में तिलभाण्डेश्वर महादेव, और रामेश्वर महादेव का मंदिर प्रमुख है। तिलभाण्डेश्वर तो सतीघाट के उत्तर में गंगा तट पर ही है जबकि रामेश्वर महादेव का मंदिर हरिद्वार कनखल मार्ग पर श्री रामकृष्ण सेवाश्रम के निकट के तिराहे पर स्थित है। यह मंदिर अपने शिल्प के लिए हरिद्वार के मंदिरों में अन्यतम है। किसी ज़माने में यहां तीन प्रमुख अखाड़ों की गुरूगद्दी हुआ करती थी। इस मंदिर का निर्माण मिर्जापुरी पत्थरों और राजस्थान के तथा हैदराबाद के कारीगरों द्वारा संवत् 1983 में किया गया था।

हरिद्वार कनखल मार्ग पर मानव कल्याण आश्रम और कनखल ज्वालापुर मार्ग पर अवधूत मण्डल आश्रम के देवमंदिर भी यात्रियों को आकर्षित करते हैं। अवधूत मंडल की श्री अनुमान जी की मूर्ति इनमें विशेष है। हाल ही में कनखल में स्थापित महिषासुर – मर्दिनी का मंदिर भी प्रमुख दर्शनीय देवस्थान है।

कनखल के बाद हरिद्वार लौटें तो बिल्वपर्वत की तलहटी में स्थित बिल्वकेश्वर महादेव का मंदिर अपनी पौराणिकता और उस स्थल पर हिमालय की पुत्री शैलजा उमा गौरी द्वारा शिव की प्राप्ति के लिए घोर तपस्या किये जाने के कारण महत्वपूर्ण है। अपनी घोर तपस्या के दौरान उमा यहां केवल पत्ते खाकर रहीं। बाद में तो पत्ते खाना भी छोड़कर वे अपर्णा हो गई थी। वहीं एक बिल्व (बेल) के पेड़ के नीचे महादेव शिव ने उमा की तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिये थे। उसी स्थल पर बाद में श्री शंकराचार्य ने शिवालय की स्थापना की थी।



शिव की ससुराल में यूं तो शिव ओर शक्ति के मंदिरों की भरमार है पर हरिद्वार की घनी बस्ती मोती बाजार के बीच श्रवणनाथ मठ द्वारा संरक्षित पशुपतिनाथ महादेव का मंदिर विशेष दर्शनीय है। संवत् 1876 में बाबा श्रवणनाथ द्वारा स्थापित इस मंदिर में कसौटी पत्थर से बना चतुर्मुखी शिवलिंग है। मंदिर का वास्तुशिल्प और भव्य नन्दीगण दर्शकों को विशेष मोहते हैं। इस मंदिर की स्थापना के समय यानी आज से पौने दो सौ साल पूर्व एक लाख रुपए का भंडारा किया गया था और तब उदयपुर, मेवाड़, बीकानेर के राजा और नेपाल नरेश के दूत विशेष रूप से उपस्थित थे। यह बात मंदिर के शिलालेख पर अंकित है।

हरकी पौड़ी के देवमंदिर तो स्नानार्थियों के लिए सर्वसुलभ है। यहां के प्राचीन विष्णु चरण पादुका मंदिर का उल्लेख तो 1334 में आए तैमूर लंग के इतिहासकार शर्फुद्दीन ने भी किया है। तब पहाड़ पर उत्कीर्ण जो चरण पादुका थी आज वह एक छोटे मंदिर की शक्ल में है। ब्रह्मकुण्ड के बीचोंबीच आमेर नरेश मिर्जा राजा मानसिंह द्वारा अपने जीवनकाल में बनाए गए अष्टकोणी प्रस्तर स्तम्भ पर निर्मित श्री गंगा मंदिर अपने छतरीनुमा शिल्प के कारण मानसिंह की छतरी के नाम से विख्यात है। अकबर के ज़माने में बना यह मंदिर इस क्षेत्र का प्राचीनतम मंदिर है। इसके अतिरिक्त यहां महन्तानी कौरादेवी, सरदार वशिष्ठ परिवार और श्रीमती सुशीला देवी कौशिक की निजी संपत्ति के चार प्रमुख मंदिर और हैं। महन्तानी का अठखंबा मंदिर गंगा की धारा से काफी ऊंचाई पर ऊपरी प्लेटफार्म पर स्थित है और महन्तानी के ही दूसरे मंदिर श्री गंगाधर महादेव के मुकाबले प्राचीन हैं। गंगाधर महादेव का मंदिर जिसे अब गंगा–भागीरथ का मंदिर बना दिया गया है, मिर्जाराजा मानसिंह वाले श्रीगंगा मंदिर के करीब जल में स्थित है। वहीं पास में हरकी पौड़ी के पश्चिमी घाट पर श्री सरदार रामरक्खा वाशिष्ठ की पुरानी हवेली के स्थान पर अब 1938 के बाद से श्री लक्ष्मीनारायण का मंदिर प्रतिष्ठित है। इस मंदिर के तलघर में विघ्नविनाशक श्री गणेश की विशाल प्रतिमा है कौशिक परिवार की सम्पत्ति कहलाने वाला श्रीगंगा मंदिर वर्तमान अस्थिप्रवाह घाट के सामने स्थित है। अठखम्बा मंदिर के पास श्रृंगेरी मठ का आद्य जगद्गुरू श्री शंकराचार्य की मूर्ति वाली एक शाखा है।

हरकी पौड़ी के विस्तारित घाट के उत्तर में कांगड़ा के राजा संसारचन्द्र के बनवाए दो मंदिर हैं। एक में तो केवल महादेव लिंगरूप में प्रतिष्ठित हैं जबकि दूसरे मंदिर में लाल, काले और सफेद संगमरमर की देवप्रतिमाएं स्थापित हैं जो शिल्प और मूर्तिकला की दृष्टि से अद्वितीय हैं। इन मूर्तियों में कार्तिकेय, सूर्य, इन्द्र, यम, दुर्गा, नृसिंह आदि चौबीस देवी देवता प्रतिष्ठित हैं।

रामघाट पर, जो कि कुशाघाट से दक्षिण में चलने पर कुछ दूर पर स्थित है, श्रीवल्लभ सम्प्रदाय के महाप्रभु जी की बैठक है। उसके आगे विष्णुघाट पर लखनऊ के रईस राजा मानसिंह का बनवाया हुआ एक शिवालय है। इसी मार्ग पर आगे बढ़ने पर भोलागिरी संन्यास आश्रम का 1936 में स्थापित भव्य शिवालय है। यह बंगाली आराधकों के संरक्षण में है। इस शिवालय के पास ही कर्नाटक धर्मशाला में स्थित भगवान् दत्तात्रय का मंदिर और वहीं पड़ौस में कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरू शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती जी द्वारा स्थापित दाक्षिणात्य शैली का मकरवाहिनी गंगा का एक भव्य मंदिर है। इस मंदिर में दक्षिण भारतीय मूर्ति कला के नमूने के रूप में काले पत्थर की गंगा की प्रतिमा है।

हरिद्वार के पूर्वी भाग में गंगा की धारा से सटे हुए नीलपर्वत पर जम्मू के राजा सुचेत सिंह द्वारा 1886 में शिखर पर चंडीदेवी और तलहटी में नीलेश्वर महादेव के मंदिरों की पुनःप्रतिष्ठा की गई थी। नीलेश्वर मंदिर के पास ही वन सुषमा से घिरा हुआ गौरीशंकर महादेव का भी मंदिर है जो अब हरिद्वार



नजीबाबाद मार्ग बन जाने के बाद इस मार्ग के किनारे आ गया है। नीलपर्वत की एक चोटी पर श्री हनु की माता अंजनीदेवी का मंदिर भी है। चंडीदेवी जाने वाले यात्री अक्सर इस मंदिर के दर्शन भी करते हैं। शीघ्र ही चंडीदेवी पर भी विल्वपर्वत की मंसादेवी मंदिर तक जाने के लिए बने रज्जुमार्ग (रोप वे) की तरह एक नया रज्जुमार्ग बनाए जाने का भी प्रस्ताव है। मंसादेवी का मंदिर गंगा की धारा के दाहिने किनारे पर हरिद्वार नगर से सटे बिल्वपर्वत पर है। शहर के बीच में होने और रज्जुमार्ग के आकर्षण के कारण पिछले एक दशक में इस मंदिर के दर्शनार्थियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है। यह मंदिर श्री निरंजनी पंचायती अखाड़े द्वारा संचालित एक ट्रस्ट की देखरेख में है।

हरकी पौड़ी का उत्तरी इलाका अर्थात् सप्तसरोवर क्षेत्र आश्रमों–मठों–मंदिरों का ही क्षेत्र है। इस क्षेत्र में बने अनेक आश्रमों में दिव्य भव्य देवमूर्तियां प्रतिप्ठित हैं। हरिद्वार ऋपिकेश मार्ग पर श्री दूधाधारी बाबा द्वारा स्थापित श्री राघवेन्द्र मंदिर, सप्तसरोवर मार्ग पर स्थित स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि द्वारा स्थापित भारतमाता मंदिर, सांसद स्वामी चिन्मयानन्द के परमार्थ आश्रम के देव मंदिर, पावन धाम के कांच मंदिर, गीता कुटीर की गोशाला, व्यास आश्रम के भव्य मंदिर, अखण्ड परम धाम की विराट हनुमान मूर्ति, शांतिकुंज का गायत्री मंदिर और ब्रह्मवर्चस् प्रतिप्ठान, साधुबेला अतिथेयम् के साक्षी गोपाल, आदि देवस्थान भी यात्रियों को और पर्यटकों को आकर्पित करने वाले केन्द्र हैं।

भीमगोड़ा क्षेत्र में जहां भीम का मंदिर पुरातन और महाभारत काल की कथाओं से जुड़ा है वहीं श्री जयराम आश्रम अपनी दिव्य मूर्तियों और मूर्तियों की चल–प्रर्शनी के लिए विख्यात है। जयराम आश्रम के अधिप्ठाता ब्रह्मचारी देवन्द्र स्वरूप और ब्रह्मस्वरूप ने हरिद्वार के अलावा ऋपिकेश में भी भव्य मंदिरों का निर्माण कराया है।

मंसादेवी – उड़न खटोला



सांस्कृतिक समन्वय का अवसर : अर्द्धकुम्भ

हमारा देश उत्सवधर्मी देश है और हमारी पूरी परम्परा उत्सवधर्मी परम्परा रही है। उत्सव जहां हमारे समाजबोध के जीते जागते प्रेरक और प्रमाणतत्व रहे हैं वहीं उत्सवों के विविध रूपों ने हमारी कला, साहित्य, संगीत, शिल्प, मूर्तिकला और संस्कृति के विविध रूपों को अभिव्यक्त किया है। हमारे मनीषियों, चिन्तकों और प्रबुद्ध समाजशास्त्रियों ने सदियों पहले इस मर्म को समझ लिया था कि सामाजिक, सांस्कृतिक एकात्मता के लिए समाज को कुछ ऐसे सूत्र देने ही होंगे जो भावनात्मक स्तर पर उसे सामाजिकता और सांस्कृतिकता के सूत्र में बांध सकें। इस चिंतन का ही परिणाम यात्रा और यायावरी के रूप में सामने आया। हमारे ऋषि–मुनियों ने भारतीय लोगों के बीच पलते–बढ़ते अध्यात्म और धर्मभाव को समझकर, उनकी आस्तिकता को पहचानकर इसी अध्यात्म, आस्तिकता और धर्म भावना को सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का माध्यम बना डाला।

ज़रा गौर से विचार करें तो हम पाएंगे कि हमारी अधिकांश पूजनीय देवियों के स्थान दूर जंगलों–पहाड़ों में स्थित हैं। हमारे चार कुम्भस्थल और चार शंकरपीठ चार अलग–अलग दिशाओं में स्थापित किए गए हैं। उत्तर के श्री बद्रीनाथ की पूजा अर्चा का भार दक्षिण के नम्बूदरी ब्राह्मणों को दिया गया तो दक्षिण के श्री रामेश्वर तीर्थ में उत्तर भारत के पुजारी को नियुक्त किया गया। विभिन्न देवी–देवताओं के नाम पर विभिन्न अंचलों और नदी तटों पर मेलों और स्नानपर्वों की परिपाटियाँ चलाई गईं। क्यों किया गया होगा यह सब? खासकर तब जबकि कहा गया कि आराधना तो ऐकांतिक होती है। व्यक्ति साधना तो अकेले ही कर सकता और करता है। फिर इन पर्वों और मेलों का रहस्य क्यां है? निःसंदेह हमारे उत्सवों, पर्वों–मेलों, सामूहिक गीतों, समूह नृत्यों और सामूहिक आयोजनों के प्रत्येक अवसर का संबंध जन–जन को जोड़ने और भ्रातृभाव जगाने में है। इसी भावना ने पारिवारिक स्तर पर होने वाली नितांत वैयक्तिक रस्मों तक को सामाजिकता का चोला पहनाया है।

हरिद्वार या ऐसे सभी स्थलों पर इस सामाजिकता और सामूहिकता के दर्शन इन्हीं स्नानपर्वों और मेलों–ठेलों के अवसर पर अक्सर होते रहते हैं। यहां आयोजित होने वाले विभिन्न स्नानपर्व ऐसे ही अवसर हैं। सारे साल चलने वाले विभिन्न स्नानपर्व यदि सामूहिकता को उभारने और उसे सच्चे अर्थों में जीने के छोटे अवसर हैं तो अर्द्धकुम्भ और कुम्भ ऐसे विराट अवसर हैं जिन्हें जन–जन को जोड़ने वाले विराट जनपर्व बड़े मज़े में कहा जा सकता है। हमारे चिंतकों और मनीषियों ने उस काल में जब आवागमन, संपर्क और संचार की आज की सी सुविधाए नहीं थी, इस विचार से कि समाज के धुरीपुरुष, चिंतक और अगुआ लोगों को, दिशा–निदेशकों को जनसामान्य के साथ मिल–जुड़कर बैठना चाहिए, ये विराट जनपर्व आरम्भ किए होंगे। हर बारहवें बरस आने वाला महाकुम्भ यदि इस दिशा में साधु–संन्यस्तों के साथ गृहस्थों को बैठकर विचार विनियम का अवसर देता है वहीं हर बारहवें बरस आने वाला अर्द्धकुम्भ सन्यासेतर समाज के परस्पर मिल–बैठने का अवसर है। इन आयोजनों के पीछे जो समष्टि चिंतन है वह सदियों पहले हमारे विद्वान पुरखों द्वारा किए गए राष्ट्रचिंतन और गहन राष्ट्रीय भावना का ही प्रतीक है।

जनसाधारण को समष्टि चिंतन के लिए प्रेरित करने का बड़ा कार्य हमारे समाज में धर्म ने किया है। भारतीय, परम्परा चूंकि इस दृश्य जगत से परे भी पारलौकिकता में विश्वास करती है अतः हर भारतीय, विशेषकर आस्तिक हिन्दू की, यही कामना रहती है कि वह इस जीवन के बाद मोक्ष प्राप्त करे। इसी



मोक्ष की धारणा ने कुछ स्थलों, नदियों, देवस्थानों पेड़ों, समुद्रों और पर्वतों तक को हमारा पूज्य बना दिया। हमें जीवित व्यक्ति से ही नहीं निर्जीव पदार्थों तक से भी आत्मीयता का पाठ पढ़ाया गया। इसी मानसिकता के चलते देवासुर संग्राम, समुद्र मंथन और अमृत कुम्भ आदि के मिथकों की सृष्टि हुई होगी। अमृतकुभ की भावभूमि से तो बुद्धिजीवी समाज भी इस रूप में जुड़ा कि की उसने इस देहकुम्भ को सद्विचारों के अमृत से पूरित मानकर सद्-असद् वृत्तियों के मानस संघर्ष या मंथन के बाद उस अमृत को प्राप्त करने का उद्देश्य जीवन में बनाया। जन जन के बीच का विराट जुड़ाव दरअसल इसी सद्विचारों के अमृत कुम्भ की तलाश का पर्व है। यह विराट सामूहिक अवसर सद्वृत्तियों और सद्प्रवृत्तियों को सारे समाज के बीच बांट देने का पर्व है। आज जब वैज्ञानिक उपलब्धियों ने मनुष्य को चांद पर पहुंचा दिया है, प्रचार, संपर्क और संचार की असीमित सुविधाएं पैदा कर दी हैं, प्रेस, और अन्य प्रचार माध्यमों से सद्विचारों के फैलाव की विराट संभावनाएं जग गई हैं, तब इन मेलों-पर्वों के औचित्य पर प्रश्नचिन्ह लगना भी स्वाभाविक है। पर इन प्रश्नचिन्हों के उत्तर उनसे भी ज्यादा स्वाभाविक है। मनुष्य ने वैज्ञानिकता की सीढ़ी चढ़कर सब कुछ पा लिया है पर मनुष्य के सहज धर्म सामाजिकता और सामूहिकता से वह दूर हुआ है। मनुष्य आत्मनिर्भर बनने के नाम पर अकेला छूट गया है। विराट कंक्रीट के जंगलों में विलास-वैभव और सुविधाओं के भीतर जीने वाला आज का मनुष्य मशीनों की खड़खड़ाहट तो सुनता है पर मनुगंध के लिए तरसता है।

ऐसे तथाकथित प्रगतिशील मनुष्य के लिए मिट्टी की सौंधी सुगंध लिए इन मेलों-ठेलों के, स्नानपर्वों के अवसर उसे समाज, देशभूमि और राष्ट्रचेतना से जोड़ते हैं। मनुष्य मनुष्य के बीच का अलगाव दूर कराकर ये अवसर यह अहसास कराते हैं कि विभिन्न जातियों, वर्गों, संप्रदायों से सम्बद्ध लाखों भारतीय भाषा, बोली, रस्म-रिवाज़, खान-पान, रंगरूप, पहनावे आदि की विभिन्नता के होते हुए भी मूलतः एक है। एक ही राष्ट्रीय धारा से जुड़े हुए हैं।

चूंकि आज अर्द्धकुम्भ और कुम्भ मेलों की व्यवस्था का भार हमारी लोकतांत्रिक सरकार के कंधों पर आता है अतः वह इन अवसरों पर हरिद्वार आने वाले यात्रियों के लिए यातायात सफ़ाई, चिकित्सा, जल, विद्युत, आवास, आदि व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के साथ साथ इन पर्वों के मूल स्वर राष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार के लिए भी विभिन्न आयोजन करती है।

अर्द्धकुम्भ 1992 के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक कार्य विभाग, पर्यटन विभाग और सूचना विभाग ने मिलकर प्रकाशन, प्रदर्शनी और सांस्कृतिक आयोजनों की एक महात्वकांक्षी योजना बनाई है।

सूचना विभाग के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत भजन, बिरहा, आल्हा, कव्वाली, कठपुतली, पहाड़ी और क्षेत्रीय लोक संगीत, लोकगीत और लोकनृत्यों जादू और नौटंकी आदि के लगभग 520 कार्यक्रम पूरे मेला क्षेत्र में आयोजित किए जाएंगे।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि कुम्भक्षेत्र हरिद्वार अब एक स्थायी जिला क्षेत्र भी है। इस जिलाक्षेत्र में लगने वाले अर्द्धकुम्भ और कुम्भ मेलों के साथ इस क्षेत्र के केवल हिन्दू ही नहीं बल्कि अन्य धर्मावलम्बी भी आर्थिक, व्यावसायिक, निर्माण आदि कार्यों के नाते जुड़ते हैं। यूं भी हरिद्वार साम्प्रदायिक सद्भाव का उज्जवल उदाहरण है। यहां यदि हिन्दुओं का प्रमुख स्नान तीर्थ है तो निकट ही मुस्लिम बंधुओं की आस्था का केन्द्र कलियर शरीफ है। यहां इस जिले में सभी धर्मों और



सम्प्रदायों के लोग सौहार्द्र की मिसाल बनकर रहते हैं। हिन्दुओं के ये विराट पर्व गैरहिंदुओं को भी राष्ट्रीय धारा में साथ साथ चलने के लिए प्रेरित करते हैं और प्रभावित भी करते हैं।

इस तरह हरिद्वार एक ऐसा तीर्थनगर बनकर उभरता हैं जहां देश की सांस्कृतिक अस्मिता और गौरव तथा सामाजिक सौहार्द्र का सही चित्र उपलब्ध होता है। ऐसे परिवेश में सूचना विभाग ने तय किया है कि मेला अवधि के 70 दिनों में देश भर से विशिष्ट कलाओं से जुड़े उत्कृष्ट कलाकारों को सादर आमंत्रित कर उनकी कला का सार्वजनिक प्रदर्शन किया जाएगा।

हरकी पौड़ी पर तथा मेला क्षेत्र के विभिन्न सांस्कृतिक पंड़ालों में निजी एवं स्वायत्तशासी सांस्कृतिक संस्थाओं को धार्मिक, पौराणिक नाटकों, रामलीला, कृष्णावतार आदि के मंचन, भजन, प्रवचन संगीत के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। इस अवसर पर भारत सरकार द्वारा ध्वनि और प्रकाश के कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है।

पर्यटन विभाग द्वारा इस अवसर पर अर्द्धकुम्भ की परिचायिका इस पुस्तिका का प्रकाशन, फोल्डर्स, पोस्टर्स का प्रकाशन और होर्डिंग्स और क्यॉस्क आदि जगह जगह लगाने की व्यवस्था की जा रही है।

सूचना विभाग इस मौके पर अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रांतीय और क्षेत्रीय पत्रकारों के लिए एक सुविधासंपन्न प्रेस शिविर की व्यवस्था कर रहा है जिसमें 60 स्विस काटेज लगाए जाएंगे। तीन स्थानों पर लगने वाले इस प्रेस शिविरों में टेलीफोन, टेलीप्रिंटर, तथा फैक्स सेवा उपलब्ध कराई जाएगी। प्रेस की सुविधा के लिए हरकी पौड़ी क्षेत्र में एक मीडिया टावर भी मेला अधिष्ठान द्वारा कवरेज के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

कुल मिलाकर इन विविध रंगी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अर्धकुम्भ मेले को "राष्ट्रीय एकात्मता पर्व" के रूप में आयोजित करने का प्रदेश सरकार का संकल्प है। ये अवसर सीधे–सीधे स्नानपर्व न रहकर यदि सचमुच हमारे पुरखों, ऋषि–मुनियों और चिंतकों–विचारकों की इच्छा कामना और आकांक्षाओं के अनुरूप राष्ट्रीय एकात्मता और जन–जन को जोड़ने वाले जनपर्व बन सकें तो इनके आयोजन सार्थक होंगे।





शासकीय व्यवस्थाओं के आइने में अर्द्धकुम्भ

कुम्भ और अर्द्धकुम्भ मेलों में यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों के शासन काल से ही शासकीय स्तर पर विभिन्न व्यवस्थाएं करने की परम्परा चली आ रही है। इस कार्य के लिए अब स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश शासन एक आई.ए.एस. मेलाधिकारी और एक आई.पी.एस. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति लगभग एक वर्ष पूर्व ही कर देता है। शासन इन मेलों के लिए मेरठ मण्डल के आयुक्त की अध्यक्षता में एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन भी करता है। इस समिति में विभिन्न विभागीय उच्चाधिकारियों के अलावा जनप्रतिनिधि भी शामिल होते हैं। समिति समय-समय पर मेला कार्यों की व्यवंस्था के लिए निर्देश देने का कार्य करती है। मेलाधिकारी के अतिरिक्त एक अपर मेलाधिकारी व दो अपर जिला मजिस्ट्रेट मेला की नियुक्ति भी शासन द्वारा मेला कार्य के सुचारू संचालन के लिए की गइ है।

प्रशसनिक सुविधाओं की दृष्टि से पूरे मेला क्षेत्र को जो हरिद्वार, टिहरी, पौड़ी और देहरादून जिलों में करीब 130 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, इक्कीस सैक्टरो में विभाजित किया गया है। इन सैक्टरों को तीन क्षेत्रों (जोन) में बाँट कर एक एक जोनल मजिस्ट्रेट और अपर पुलिस अधीक्षक की निगरानी में दे दिया गया है। प्रत्येक सैक्टर के प्रशासनिक दृष्टि से एक सैक्टर मजिस्ट्रेट और एक पुलिस उपाधीक्षक के जिम्मे किया गया है। हर सैक्टर में एक थाना, एक अस्पताल, एवं सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों की व्यवस्था की गई है।

2. पुलिस व्यवस्था

मेले में सुदृढ़ पुलिस व्यवस्था की गई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के अधीन तीन अपर पुलिस अधीक्षक, 40 पुलिस उपाधीक्षक, 50 निरीक्षक, 500 उपनिरीक्षक, 500 हैडकांस्टेबिल, 4000 सिपाही और 40 कम्पनी पी.ए.सी. लगाई जा रही है। महिला पुलिस की भी व्यवस्था की जा रही है। आपराधिक एवं अवांछनीय तत्वों पर दृष्टि रखने के लिए सादे कपड़े में एक उपाधीक्षक, 10 निरीक्षक एवं 200 पुलिस कर्मी तैनात रहेंगे। उग्रवादी गतिविधियों को दृष्टि में रखते हुए हरिद्वार को जोड़ने वाले सभी मार्गों पर पुलिस कैम्प लगाए जा रहे हैं। मेले में प्रवेश करने वाले सभी वाहनों की तलाशी ली जाएगी। सुदृढ़ संचार व्यवस्था हेतु थाना, चौकियों एव प्रशासनिक अधिकारियों को 260 वायरलैस सैट उपलब्ध कराए जा रहे हैं। मेला क्षेत्र में मैटल डिटैक्टर, दूरबीन, वाच-टावर बम निरोधक दस्ते तथा अग्निशमन आदि की भी व्यवस्था की जा रही है।

3 नए घाट एवं पुल

सभी यात्री सुगमता से स्नान कर सकें इसके लिए हर की पौड़ी के सामने स्थित मालवीय द्वीप का विस्तार कर इसमें 200 मीटर लम्बाई के अतिरिक्त घाट उपलब्ध कराये गये है। इसके अतिरिक्त लिंक चैनल व नई आपूर्ति धारा के संगम पर, पंतद्वीप पर, कनखल में, त्रिवेणी घाट पर एवंम ऋषिकेश आदि अन्य स्थानों पर भी लगभग 600 मीटर नये घाटों का निमाण कराया गया है। पुराने घाटों का जीणोद्धार कराया जा रहा है।

यात्रियों को हर की पौड़ी व मालवीय द्वीप पर लाने व ले जाने के लिए चार अस्थाई स्टील-ट्रस



सेतुओं का निर्माण इनके व हरिद्वार बांध के बीच कराया गया है। अन्य 10 स्थानों पर बल्ली क्रेट के अस्थाई पुल बनाए गए हैं। सेना द्वारा मुनि की रेती में दो अस्थाई पीपे के पुल (पौन्टून–ब्रिज) यात्रियों की सुविधा के लिए बनाए गए हैं। बाई पास रोड पर नई आपूर्ति धारा के लकड़ी के पुल के पास ही पक्के सेतु का निर्माण स्थाई रूप से किया गया है। ऋषिकेश व हरिद्वार के बीच सौंग नदी पर नया सेतु भी यात्रियों के लिए उपलब्ध रहेगा।

4 सड़क निर्माण व मल–जल निस्तारण प्रणाली

हरिद्वार की ओर आने वाली सड़कों का सुदृढ़ीकरण किया गया है। मनसादेवी पर्वत पर बनाए गये हिल बाइपास मार्ग को भी काफी सुदृढ़ किया गया है, ताकि अर्द्धकुम्भ मेले के दौरान इसका व्यापक उपयोग किया जा सके। हरिद्वार नगर की मल–जल निरस्तारण प्रणाली की मरम्मत कराई गई है व सीवेज पम्पिंग प्लांटों पर आवश्यक स्पेयर आदि भी उपलब्ध करा दिये गये हैं, ताकि मेला अवधि में किसी ब्रेकडाउन की सम्भावना न रहे व गंगा की स्वच्छता बनी रहे। ऋषिकेश में भी सीवर लाइन की मरम्मत कराई गयी है। मेला अवधि में गंगा की ओर अधिक प्रदूषण मुक्त रखने हेतु चार स्थानों पर अस्थाई सीवेज पम्पिंग स्टेशनों की व्यवस्था भी कराई गयी है।

5 पेयजल व्यवस्था

यात्रियों को समुचित रूप से पेयजल उपलब्ध कराने हेतु हरिद्वार व ऋषिकेश, मुनि की रेती, लक्ष्मण झूला में व्यापक व्यवस्था की गयी है। यह सुनिश्चित किया गया है कि यात्रियों को पेयजल के लिए 100 मीटर से अधिक न चलना पड़े। हरिद्वार के कई ओवर–हैड टैंक जो अब तक उपयोग में नहीं थे, उनकी मरम्मत कर उन्हें उपयोग में लाया गया है तथा कुछ नये कूप भी निर्मित किये गये हैं। नियमित आपूर्ति के लिए सुदृढ़ीकरण के साथ–साथ ही आवश्यकतानुसार अस्थाई पेयजल लाइनें बिछाई गयी हैं, जिनसे शिविरों में कनेक्शन व स्टैन्ड पोस्ट पर्याप्त संख्या में दिए जा रहें हैं। ऋषिकेश, मुनि की रेती में निर्माणाधीन एक नये ट्यूबवेल व अन्तः श्रोत कूप को पूरा करके उन से अस्थायी पाइप लाइन बिछा कर पेयजल आपूर्ति की जा रही है। स्वर्गाश्रम क्षेत्र में लक्ष्मण झूला के पास एक अस्थायी अन्तः श्रोत कूप बना कर पेयजल व्यवस्था सुदृढ की गयी है।

6 विद्युत व्यवस्था

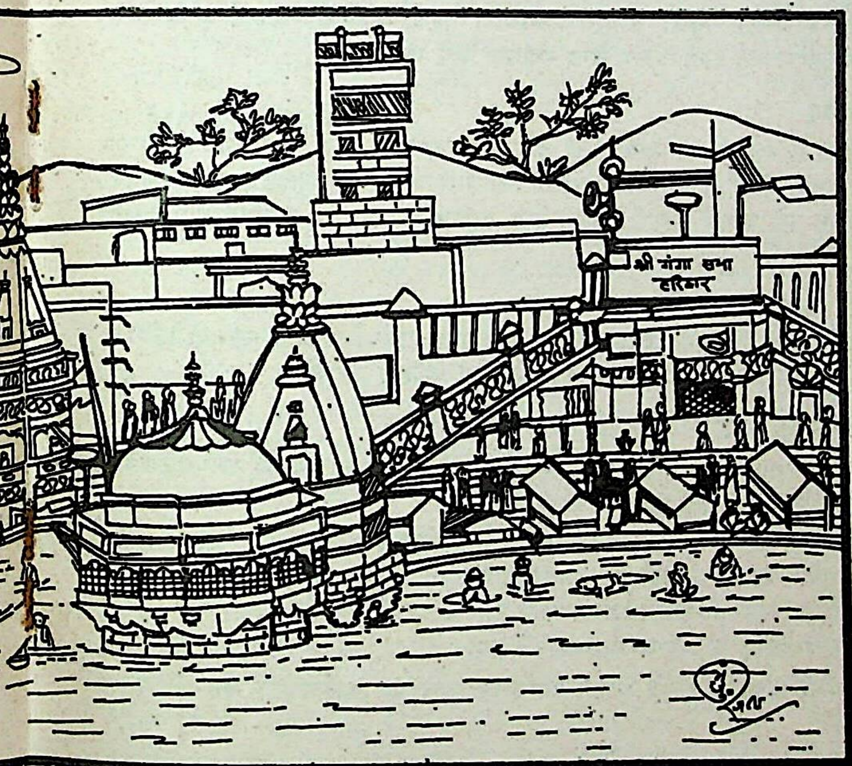
मेला अवधि में अनवरत विद्युत व्यवस्था बनाये रखने के लिए व्यापक तैयारियां की गई हैं, जिसमें 17 नये स्थायी सब–स्टेशन व 22 अस्थायी सब–स्टेशनों का निर्माण, पूर्व में स्थापित प्रमुख सब–स्टेशन की क्षमता बढ़ाया जाना व 4300 पथ प्रकाश बिन्दुओं पर सोडियम हैलोजन, ट्यूब लाईट आदि की व्यवस्था कराना शमिल है। डीजल जनरेटिंग सैटों की व्यवस्था भी आपात स्थिति के लिए रखी गयी है। बिजली की अतिरिक्त 140 कि.मी. लम्बी नई विभिन्न लाइनें डाली गयीं हैं। हरकी पौड़ी के लिए एक स्थाई सब–स्टेशन एवं तीन कि.मी 11 के.वी. की लाइन का स्वतन्त्र फीडर बनाया गया है।

7 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य हेतु आधार चिकित्सालय, सेक्टर अस्पतालों की स्थापना, जिला



हर की पैड़ी, ह



ड़ी, हरिद्वार



चिकित्सालय में हृदय रोग (आई.सी.यू.) हेतु उपकरण एवं ट्रामोटोलोजी यूनिट की स्थापना की गयी है। समुचित संख्या में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र स्थापित किये गये हैं। एवं मच्छर मक्खी विरोधी एवं कीटनाशक दस्ते एवं सफाई कर्मचारी तैनात किए गये हैं। कई सफाई उपकरण भी खरीदे जा रहे हैं। पब्लिक हैल्थ लेबोरेट्री भी मेला क्षेत्र में कार्यरत है। समुचित संख्या में अस्थायी शौचालय एवं मूत्रालय भी बनाए गये हैं तथा पूर्व निर्मित शौचालयों, मूत्रालयों की मरम्मत कराई गई है।

8 आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति

मेला क्षेत्र में यात्रियों की दैनिक उपयोग की आवश्यक वस्तुएँ उचित दाम पर उपलब्ध कराने हेतु 81 पूर्व से कार्यरत सस्ते गल्ले की दुकानों के अतिरिक्त 150 अस्थायी दुकानें खोली गयी हैं। मेले में पर्याप्त मात्रा में जलाऊ लकड़ी, कोयला व अस्थायी गैस कनेक्शन की व्यवस्था भी करायी जा रही है। दुग्ध आपूर्ति हेतु 120 विक्रय केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

9 परिवहन सेवाएँ

अर्द्धकुम्भ मेला में यात्रियों की सुविधा को दृष्टि गत रखते हुए उ.प्र. राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा 1000 अतिरिक्त बसें चलाई जाएंगी। अन्य राज्य परिवहन निगमों द्वारा भी लगभग 1000 अतिरिक्त बसें चलाई जाएंगी। चण्डी देवी, ऋषिकुल, मोती चूर व ऋषिकेश में अस्थाई बस स्टेशन निर्मित किये गये हैं।

10 दूरसंचार

भारत सरकार के दूरसंचार विभाग द्वारा अर्द्धकुम्भ मेले में प्रयोग के लिए 500 अस्थायी टेलीफोन कनैक्शनों की व्यवस्था सरकारी और सामान्य उपभोक्ताओं के लिए की गयी है।

11 मेला क्षेत्र में पर्यटक केन्द्रों की स्थापना

मेला क्षेत्र में निम्न स्थलों पर अतिरिक्त पर्यटन सूचना केन्द्रों की स्थापना पर्यटकों को मार्गदर्शन व उचित जानकारी प्रदान किये जाने की दृष्टि से कराई गई है।

1. पर्यटन सूचना काउन्टर – रोड़ी – बेलवाला – मुख्य मेला स्थल
2. पर्यटन सूचना काउन्टर – ऋषिकुल बस स्टैन्ड पर
3. पर्यटन सूचना काउन्टर – मोतीचूर बस स्टैन्ड पर
4. पर्यटन सूचना काउन्टर – चण्डी घाट बस स्टैन्ड पर

उपरोक्त के अतिरिक्त हरिद्वार रेलवे स्टेशन तथा निम्न स्थलों पर स्थाई पर्यटक सूचना केन्द्र पूर्व से ही कार्यरत हैं।

1. क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, ललतारौ पुल, हरिद्वार – फोन् : 7019
2. पर्यटन आवास गृह, मुनि की रेती, फोन : 373
3. पर्यटन केन्द्र कार्यालय, रेलवे रोड, ऋषिकेश

12 अति न्यून शक्ति ट्रांसमीटर द्वारा प्रसारण

यू.पी. हिल इलेक्ट्रानिक्स कार्पोरेशन लि. (यू.पी. हिल्ट्रान) के द्वारा अर्द्धकुम्भ के विभिन्न आयोजनों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अति न्यून शक्ति ट्रांसमीटर द्वारा प्रसारण किया जायेगा



जिससे आस पास के दो कि.मी. क्षेत्र के लोग अपने घरों पर ही टी.वी. से कार्यक्रम देख सकेगें। इससे अनावश्यक भीड़ कम की जा सकेगी।

13 हरिद्वार विकास प्राधिकरण

हरिद्वार विकास प्रधिकरण द्वारा भीमगोड़ा का सौन्दर्यीकरण किया गया है तथा सतीकुण्ड के सौन्दर्यीकरण की महत्वाकांक्षी योजना का प्रारम्भिक चरण पूरा किया जा चुका है। हर की पौड़ी व समीपवर्ती घाटों / पुलों पर तथा त्रिवेणी घाट ऋषिकेश की विशेष प्रकाश व्यवस्था व सौन्दर्यीकरण प्रधिकरण द्वारा किया गया है। इन कार्यों के अन्तर्गत हर की पौड़ी व वी.आई.पी.घाट के मध्य एक सौ फुट से भी अधिक ऊचाई तक जल फेंकने वाले फव्वारे का निर्माण जलधारा में कराया गया है। भीमगोड़ा पर भी एक अत्याकर्षक शिवलिंगनुमा फव्वारे का निर्माण किया गया है। हरिद्वार विकास प्रधिकरण द्वारा शहर की महत्वपूर्ण सड़कों का सुदृढीकरण कार्य भी किया गया है।

14 हरिद्वार नगर पालिका

सन् 1868 में स्थापित नगर पालिका हरिद्ववार की सीमा क्षेत्र में इस समय 1,47,177 लोग निवास कर रहे हैं। नगर पालिका क्षेत्र 20 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। अर्द्धकुम्भ 1992 में आने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए इस बार नगर पालिका ने नगरीय क्षेत्र में पक्की सड़कों की मरम्मत और कच्ची सड़कों पर भराव और समतलीकरण का कार्य किया है। आवारा पशुओं को बाड़ों में बन्द कराने और पथ–प्रकाश व्यवस्था के अन्तर्गत समुचित प्रबन्ध किया गया है। नगर पालिका, उ.प्र.जल निगम, हरिद्वार विकास प्रधिकरण और मेला स्वास्थ विभाग को अपने उपलब्ध संसाधनों के साथ मेला व्यवस्था में मदद कर रही है।

15 ऋषिकेश नगर पालिका

ऋषि केश नगर, गंगा नदी के दाहिने तट पर स्थित एक पौराणिक तीर्थ स्थान है। स्कन्दपुराण में आए आख्यान के अनुसार इन्द्रियों को "हृषीक" कहते हैं, उसके अधिष्ठाता विष्णु भगवान हैं। रैभ्य ऋषि ने अपनी इन्द्रियों को वश में करके उनके अधिष्ठाता हृषीक ईश यानी हृषिकेश भगवान विष्णु के इस स्थान पर दर्शन किये थे। इसी आधार पर इस स्थान का नाम हृषीकेश प्रसिद्ध हुआ। यही कालान्तर में बोलचाल की भाषा में ऋषिकेश हो गया। कुम्भ पर्व में यह स्थान हरिद्वार के पश्चात सबसे प्रमुख स्थान है। अर्द्ध कुम्भ यात्रियों के हित में ऋषिकेश नगरपालिका अपने दायित्व का निर्वहन कर रही है। नगर की सफाई एवं मार्ग प्रकाश व्स्था उत्तम रहे इस दृष्टि से गंगा के आसपास के क्षेत्र में विशेष व्यवस्था की गयी है जिस से यात्रियों को स्नान में सुविधा हो।

अर्द्धकुम्भ मेला 1992 के अवसर पर त्रिवेणी घाट का विस्तार किया गया है तथा घाट पर प्रकाश की उत्तम व्यवस्था की गई है। पूर्व निर्मित घाट पर नगरपालिका द्वारा गीता उपदेश तथा गंगा अवतरण की आकर्षक मूर्तियां बनवाई गयी हैं।



नगरपालिका ऋषिकेश द्वारा नगर की सभी प्रमुख सड़कों का निर्माण\पुर्ननिर्माण करांया जा रहा है। मेले के अवसर पर सफाई की विशेष व्यवस्था की गयी है। कीट नाशक दवाई के छिड़काव की पूर्व व्यवस्था की गयी है जिससे किसी महामारी की सम्भावना न रहे। नगर के सभी प्रमुख मार्गों तथा गंगा जी के आस पास के क्षेत्रों में मार्ग प्रकाश की उत्कृष्ट व्यवस्था की गयी है

16 नोटीफाईड एरिया कमेटी मुनि की रेती

यह उत्तराखण्ड के प्रवेश द्वार पर गंगा नदी के बाए किनारे पर बसी एक रमणीक नगरी है। जिसके सामने सुन्दर पहाड़ों के दृश्य, नीलकंठ महादेव की चोटियां, गंगा नदी के किनारे महेशयोगी आश्रम, वेदनिकेतन, परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम, गीताभवन, लक्ष्मणझूला स्थित है। इसी स्थान से उत्तराखण्ड के चारों धामों को जाने वाले तीर्थ यात्री अपनी तीर्थ यात्रा आरम्भ करते हैं।

इस क्षेत्र में मेला के दौरान सड़क निर्माण\मरम्मत,स्ट्रीटलाइट व्यवस्था एवं पेयजल लाइनों का विस्तार,सफाई व्यवस्था एवं वाहनों के लिए पार्किंग व्यवस्था की गयी है।





अर्द्धकुम्भ 1992 : प्रमुख स्नान पर्व

		दिनांक	
1.	सोमवती अमावस्या माघ कृ. 30 सं. 2048	सोमवार	3.2.92
2.	वसन्तपंचमी माघ शु. 5 सं. 2048	शनिवार	8.2.92
3.	महाशिवरात्रि फाल्गुन कृ. 14 सं. 2048	सोमवार	2.3.92
4.	चैत्र अमावस्या चैत्र कृ. 30 सं. 2048	शुक्रवार	3.4.92
5.	नवसंवत्सर चैत्र शु. 1 सं. 2049	शनिवार	4.4.92
6.	रामनवमी चैत्र शु. 9 सं. 2049	शनिवार	11.4.92
7.	अर्द्धकुम्भ पर्व, मेष संक्रान्ति एवं वैशाखी चैत्र शु. 11 सं. 2049	सोमवार	13.4.92
8.	पूर्णिमा चैत्र शु. 15 सं. 2049	शुक्रवार	17.4.92

इक्कीस सैक्टरों के नाम

1. बहादराबाद
2. ज्वालापुर
3. मायापुर
4. कनखल
5. रोड़ी बेलवाला
6. गौरीशंकर
7. बैरागी कैंप
8. नीलधारा
9. हरिद्वार
10. हर की पौड़ी
11. पंतद्वीप
12. लालजीवाला
13. भोपत वाला – सप्त सरोवर
14. भीमगोड़ा
15. मोतीचूर
16. राय वाला
17. ऋषिकेश
18. चन्द्रभागा
19. मुनि की रेती
20. लक्ष्मण भूला
21. चीला





अर्द्धकुम्भ मेला – 1992 यातायात व्यवस्था

अर्द्ध कुम्भ मेला – 1992 के अवसर पर हरिद्वार में आने वाले समस्त वाहनों के यातायात की व्यवस्था निम्नानुसार की गई है:–

1 दिल्ली–हरिद्वार मार्ग:–

दिल्ली–हरिद्वार की तरफ से आने वाले समस्त प्रकार के वाहन पुल जटवारा, ज्वालापुर के पूर्व तक साथ–साथ आयेंगे और वहां से उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों की राजकीय बसें एवं अनुबन्धित बाहन पुल जटवारा पारकर ज्वालापुर क्षेत्र में प्रवेश कर उपरिसेतु (ओवरब्रिज) तक जायेंगे। वहां से रोडवेज की बसें उपरिसेतु को पारकर ऋषिकुल आश्रम पर बने पार्किंगस्थल पर पहुचेंगी और वहीं रुकेंगी। अनुबन्धित वाहन पर्वतीय अनुगमन मार्ग (बाईपास) होते हुए बी.एच.ई.एल. मध्य मार्ग एवं पर्वतीय अनुगमन मार्ग चौराहे तक जायेंगे और बाई ओर बने पार्किंगस्थल पर रुकेंगे। समस्त प्रकार के हल्के वाहन पुल जटवारा के पूर्व धर्मकांटे के पास से ऋषिकेश अनुगमन मार्ग पर जाकर नारायण आश्रम पार्किंग स्थल पर रुकेंगे।

हल्के वाहन जिस मार्ग से आयेंगे उसी मार्ग से वापस होंगे। राजकीय बसें मुख्य मार्ग से शंकर आश्रम तक जायेंगी, वहां से बाएँ मुड़कर सिंहद्वार पर पहुचेंगी और वहां से दाहिने मुड़कर अपने गंतव्य को वापस होंगी। अनुबन्धित वाहन मध्य मार्ग चौराहे से लिंक मार्ग के द्वारा हरिद्वार-ज्वालांपुर मार्ग पर आयेंगे एवं दाहिने मुड़कर राजकीय बसों की भांति वापस होंगे।

2 लक्सर – हरिद्वार मार्ग :–

इस मार्ग से आने वाले अनुबन्धित वाहन ग्राम जगदीशपुर के आगे बाई ओर अपने पार्किंग स्थल पर रुकेंगे और उसी मार्ग से वापस होंगे। रोडवेज बसें देशरक्षक औषधालय के सामने सड़क की बाई पटरी पर रुकेंगी और वहीं से वापस होंगी।

हल्के वाहन देशरक्षक चौराहे तक आकर बाएं मुड़कर सिंहद्वार तक जायेंगे तथा अनुगमन मार्ग पर दाहिने मुड़कर नारायण आश्रम पार्किंग स्थल पर पहुचेंगे। इनकी वापसी का मार्ग वहीं होगा जो आने का है।

3 नजीबाबाद – हरिद्वार मार्ग:–

इस ओर से आने वाले सभी प्रकार के वाहन 4.2 किमी. पर बने नहर के पुल के पास से सड़क के बाएं नहर की पटरी के द्वारा गंगा नदी पर बने सेतु तक आयेंगे और वहां से बाएं मुड़कर निर्धारित पार्किंगस्थल पर पहुचेंगे। इन समस्त वाहनों की वापसी कालेश्वर मंदिर के पास बने कैम्प से होकर पक्के मार्ग के द्वारा होगी।

4 चीला–कोटद्वार मार्ग :–

इस ओर से आने वाले समस्त प्रकार के बड़े वाहन दूधाधारी आश्रम के तिराहे से आगे बाघरौ की



तरफ बढकर निर्धारित पार्किंग स्थलों पर रुकेंगे और इसी मार्ग से वापस होंगे।

हल्के वाहन दूधाधारी तिरहे से बाएं अनुगमन मार्ग पर चलकर अनुगमन मार्ग और शुकदेवानन्द मार्ग चौराहे पर पहुचेंगे और सड़क के बाँई ओर बने पार्किंग स्थल पर रुकेंगे और इसी मार्ग से वापस होंगे।

5 देहरादून–ऋषिकेश–हरिद्वार मार्ग

इस ओर से आने वाले समस्त प्रकार के बड़े वाहन दूधाधारी आश्रम के तिराहे से आगे बाघरौ की तरफ बढ़कर निर्धारित पार्किंग स्थलों पर रुकेंगे और इसी मार्ग पर चलकर अनुगमन मार्ग और शुकदेवानन्द मार्ग चौराहे पर पहुचेंगे और सड़क के बाईं ओर बने पार्किंग स्थल पर रुकेंगे और इसी मार्ग से वापस होंगे

हरिद्वार

पैमाना: ५ सें॰मी॰ = १ किमी॰

संकेतिका

- ○ भारी वाहन (राजकीय) पार्किंग
- ○ भारी वाहन (कान्ट्रेक्ट कैरिज) पार्किंग
- ▷ हल्के वाहन पार्किंग
- □ धीमी गति वाहन पार्किंग
- ○ साइकिल स्टेन्ड



आवश्यक निर्देश

- घर,कैम्प के आस पास गड्ढों में, नालियों में गन्दा पानी एकत्र न होने दें।
- घर,कैम्प का कूड़ा नाली एवं सड़कों पर न फेकें।
- इधर उधर खुले मैदान में शौच न करें। निर्मित शौचालयों का प्रयोग करें।
- बासी खाना एवं बाजार के कटे सड़े फल न खाएं।
- खाने पीने की वस्तुएं जिस पर मक्खी बैठी हो न खाऐं।
- संक्रामक रोग (छूत) से ग्रसित व्यक्ति को मेले में न लायें।
- अपने घर के पास पूर्ण स्वच्छता रखें एवं घर/कैम्प का कूड़ा कूड़ेदान में ही डालें।
- आवश्यकता पड़ने पर मेला क्षेत्र में सार्वजनिक शौचालय एवं मूत्रालय का प्रयोग करें।
- पीने के पानी के मटके या बाल्टी को अच्छी तरह ढक कर रखें।
- बीमार व्यक्ति को तत्काल अस्पताल पहुचाएं।
- किसी भी स्थान पर लावारिस ट्रांजिस्टर, ब्रीफकेस या थैला या अन्य संदेहास्पद वस्तु आदि दिखायी दें तो उसे न छुवें।
- किसी पड़ी हुई संदिग्ध वस्तु को हाथ न लगाएं।
- कहीं पर पड़े हुए पटाखे, बम या लोहे के डिब्बे आदि दिखाई दें तो उसे न छुवें।
- टेन्टों के अन्दर आग न जलायें।
- बिजली के सर्किट पर अधिक भार न डालें।
- अन्जान व्यक्ति से खाने पीने की कोई चीज ग्रहण न करें।
- किसी अन्जान व्यक्ति से कोई सम्पर्क न करें।
- सड़क पर हल्ला मचाते हुए भागकर न चलें।
- लावारिस वस्तु पड़ी दिखाई दे तो तुरन्त पुलिस को सूचना दें।
- लावारिस वस्तु से दूर रहें।
- कोई संदिग्ध व्यक्ति यदि दिखाई दे तो उस पर नजर रखें तथा पुलिस को सूचना दें।
- यदि कोई विस्फोटक सामग्री पड़ी दिखाई दे तो उसे बालू की बोरियों से चारों ओर से घेर दें।
- आग लगने की दशा में फायर ब्रिगेड, पुलिस तथा पूछताछ केन्द्रों को सूचित करें।
- शरीर पर आग लगने पर शरीर को कंबल से लपेट दें।
- बिजली से आग लगने पर सबसे पहले मेनस्विच को बन्द कर दें।



- ज्वलनशील पदार्थों को सुरक्षित स्थान पर रखें।
- आवश्यकता पड़ने पर पुलिस की सहायता प्राप्त करें।
- संदिग्ध व्यक्ति के संबन्ध में पुलिस को तत्काल सूचना दें।
- पुलिस को सूचना दूरभाष नं. 7775 पर दें।
- छोटे बच्चों को अपने साथ रखे। उचित होगा अभिभावक अपने छोटे बच्चों की जेब में नाम/ पते की परची डाल दें।
- स्नान घाटों पर फोटो लेना वर्जित है।
- घाटों पर स्नान के लिए चिन्हित अथवा निशान रेलिंग से आगे जाकर न नहांए। आगे गहरा पानी होने से डूबने का खतरा हो सकता है।
- गंगा स्नान हेतु घाट पर जाते समय कम से कम सामान लेकर जाए। जांच/ तलाशी की सख्त प्रक्रिया से आपकों अनावश्यक रुप से असुविधा हो सकती है।
- हरिद्वार मांस और मदिरा हेतु निषिद्ध क्षेत्र है। उल्लंघन करने पर दण्डात्मक कार्यवाही हो सकती है।
- स्नान हेतु जल्दबाजी न करें – पंक्ति में चलें तथा नियत दूरी बनाएं रखें।
- ट्रैफिक नियमों का पालन करें – अपने वाहन निर्धारित पार्किंग स्थल पर ही खड़े करें।
- पुलिस कर्मचारी वर्दी में समाज का सेवक है, उसे कर्तव्य पालन में सहयोग करें।





हरिद्वार के महत्वपूर्ण दूरभाष नम्बर

क्रम सं.	नाम\ पदनाम	कार्यालय	आवास
1.	श्री राम सिंह, सांसद, हरिद्वार	3792168 (दिल्ली)	26438 (सहारनपुर)
2.	स्वामी चिन्मयानन्द, सांसद, बदायूं	3792757 (दिल्ली)	7099,7473,6192
3.	श्री पृथ्वी सिंह विकसित, राज्य मंत्री	241134 (लखनऊ)	241112(लखनऊ)
4.	स्वामी जगदीश मुनी, विधायक, हरिद्वार	6218,6726	
5.	श्री राम यश सिंह एम.एल.सी.	–	6087
6.	मंडलायुक्त मेरठ	73018,73545	73018,73545
7.	पुलिस उपमहानिरीक्षक , मेरठ	72113	74300
8.	मेलाधिकारी	6028,6375	6028,6375
9.	उपाध्यक्ष, हरिद्वार विकास प्रधिकरण	6344	6375,6028
10.	जिलाधिकारी	6777	6677,6891
11.	जिला जज	6280	6888
12.	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (मेला)	6676	6867
13.	पुलिस अधीक्षक (जिला)	7800	6200
14.	उपाधीक्षक नगर पुलिस	7577	7577
15.	अपर पुलिस अधीक्षक, ऋषिकेश	1502	
16.	अपर मेलाधिकारी	6625	6567
17.	अपर जिला मजिस्ट्रेट (मेला)	6836	5255
18.	अपर जिलाधिकारी	6797	8555
19.	मुख्य चिकित्सा अधिकारी	6060	6060
20.	मेला अधिकारी (स्वास्थ्य)	6895	5250
21.	सिटी मजिस्ट्रेट	6400	6400
22.	अध्यक्ष नगर पालिका	8539	8455
23.	अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका	7006	6064
24.	नगर स्वास्थ्य अधिकरी	6450	–
25.	सहायक नगर नियोजन (मेला)	6344	5233
26.	क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी	6019	–
27.	जिला सूचना अधिकारी	6695	–
28.	सहायक क्षेत्रीय परिवहन प्रबन्धक	6907	6908
29.	कुलपति, गुरुकुल कागड़ी	7366	6235
30.	एस.डी.ओ. दूरभाष	7373	6565
31	ट्रंक सुपरवाइजर	7950	–
32.	ट्रंक बुकिंग	180	–
33.	रेलवे पूछताछ	7777	–
34.	डाम कोठी नं.1	6546	–



35.	टूरिस्ट बंगला	6379	–
36.	ऋषिकुल चिकित्सालय	7003	6426
37.	बंगाली अस्पताल	7141	–
38.	गंगा सभा, अध्यक्ष	8542	–
39.	गंगा सभा मुख्य कार्यालय	7928	–
40.	गंगा सभा हर की पौड़ी	7136	-
41.	सेवा समिति, सुभाष घाट	7052	-
42.	भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स नाई घाट	7036	-
43.	कोतवाली रुड़की	2222	-
44.	कोतवाली हरिद्वार	7775	-
45.	कोतवाली ज्वालापुर	8444	-
46.	थाना कनखल	7080	-
47.	थाना मंगलौर	36	-
48.	थाना जी.आर.पी.	6011	-
49.	थाना रानी पुर	7259	-
50.	थाना भगवानपुर	30	-
51.	थाना झबरेड़ा	36	-
52.	थाना हर की पौड़ी	5016	
53.	थाना रोड़ीबेलवाला	5004	
54.	थाना लालजी वाला	5018	
55.	थाना मायापुर	5002	
56.	थाना ज्वालापुर	8350	
57.	थाना पंत दीप	5014	
58.	थाना भीम गोड़ा	5010	
59.	पुलिस लाइन मायापुर	7944	
60.	फायर स्टेशन, रोड़ीबेलवाला	5005	
61.	एस. आर. ओ. आफिस	5005	50228
62.	स्टेट फायर आफिसर	5006	
63.	दमकल	7007	-
64.	डाक घर हरिद्वार	7025	-
65.	भारत गैस	6206	-
66	इण्डेन गैस सर्विस एजेन्सी	6703	





कुम्भनगर हरिद्वार के प्रदेश शासन द्वारा 1991 में मान्यता प्राप्त पत्रकारों की सूची

क्रम सं.	नाम सम्पादक/ प्रतिनिधि	समाचार पत्र/ सवांद समिति	स्थानीय पता	टेलीफोन नम्बंर
1	सर्वश्री शोभानाथ,	सम्पादक, साप्ताहिक "लोकार्थ"	नाथनगर, ज्वालापुर	8612
2	रामस्वरुप फरलिया	सम्पादक "सा.शत्रुध्न"	भैरव अखाड़ा, हरिद्वार	6042
3	मधुकान्त प्रेमी,	प्रतिनिधि "बिजनौरटाइम्स"	तांगा स्टैन्ड, ज्वालापुर	8232
4	कमलकान्त बुधकर	प्रतिनिधि "नवभारतटाइम्स"	लक्ष्मण निवास, श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार	6333/6582
5	अनिल कुमार	प्रतिनिधि "सा. ग्रामीणजन्ता"	नेहरुस्टेडियम, रुड़की	2617
6	गोपाल सिंह रावत	प्रतिनिधि "दैनिकजागरण"	रेलवे रोड हरिद्वार	6508
7	अवधेश कुमार श्रीवास्तव	दैनिक "बद्री विशाल"	आर्यनगर, हरिद्वार।	6634
8	रामप्रकाश तिवारी	सम्पादक "बद्री विशाल"	आर्यनगर, हरिद्वार।	6634
9	रतन लाल गुप्ता	सम्पादक , सा. "विडम्बना"	विष्णुघाट, हरिद्वार	
10	नरेश गुप्ता	प्रतिनिधि "चिंगारी"	कृष्णा नगर हरिद्वार	6822
11	अवशेष स्वामी	प्रतिनिधि "पंजाब केसरी"	गीताकुटीर, हरिद्वार	6185
12	सुनील दत्त पांण्डे	प्रतिनिधि "जनसत्ता"	सतीघाट, कनखल, हरिद्वार	
13	कौशल सिखौला	प्रतिनिधि "अमर उजाला"	कुशा घाट, हरिद्वार	6628
14	श्रीमति कुसुम शर्मा	प्रतिनिधि "प्रधान्टाइम्स"	जान्हवी मार्केट, हरिद्वार	6009
15	दुर्गा शंकर भाटी	सम्पादक "सा. हिन्दू" प्रतिनिधि/दैनिक. हिन्दुस्तान	ललतारौ, पुल हरिद्वार	6134/6348



16	बृजेन्द्र हर्ष	प्रति."दैनिक प्रभात"	ललतारौपुल, हरिद्वार	
17	बालकृष्ण शर्मा	फोटोग्राफर दै.दून दर्पण	ललतारौपुल, हरिद्वार	6648
18	रामचन्द्र कनौजिया	प्रति. "मनीप टाइम्स"	रोडवेज बस स्टैन्ड, हरिद्वार	
19	श्रीमती शशी शर्मा	प्रति.भाषा/ देशनिर्देश	ललतारौपुल, हरिद्वार	6648
20	इन्द्र राज आहूजा	सम्पादक "सदाचारटाइम्स"	12, इमली रोड, रुड़की	2536
21	गुलशन कुमार नैय्यर	प्रतिनिधि उत्तरांचलवाणी	भीमगोड़ा हरिद्वार	6662
22	गुरजीत सिंह	प्रतिनिधि "अपनेलोग"	हनुमानगढ़ी, कनखल,हरिद्वार	
23	जियालाल जैन	प्रतिनिधि "प्रधानटाइम्स"	कस्तूरी भवन, निरंजनी अखाड़ा रोड, हरिद्वार	6164
24	नीरज सिंघल	प्रतिनिधि 'रोजाना खबरजदीद'उर्दू	गंगाडि हरिद्वार	6788
25	रघुबीर सिंह	सम्पा.सा. 'हरिद्वार दर्पण'	पहाड़ी बाजार, हरिद्वार	
26	राकेश वालिया	प्रति.दै.हिम्राचल टाइम्स"	अपररोड, हरिद्वार	7471
27	विजय कुमार	फोटोग्राफर प्रधान टाइम्स	भीमगौडा हरिद्वार	6009
28	शिव बहादुर सक्सेना	पी.टी. आई टी. ओ. आई.	अद्वैतानन्द मार्ग	862
29	शशिकांत मिश्रा	प्रतिनिधि "नवभारतटाइम्स"	लक्ष्मण झूला हरिद्वार	44 2 पी.पी.
30	मंगल सिंह	प्रतिनिधि "पंजाब केसरी"	15, बनखन्डी हरिद्वार	1426
31.	श्रीमति ऊषा रांवत	प्रतिनिधि "राज प्रवक्ता"	शीशम झाड़ी ऋषिकेश	
32.	वल्लभ भाई पांण्डे	प्रतिनिधि "तरुणहिन्द"	कैलाश गेट मुनिकी रेती	





उत्तर रेलवे
अर्द्धकुम्भ 1992

अर्द्धकुम्भ के अवसर पर देश को विभिन्न भागों से आने वाले तीर्थ यात्रियों के आवागमन के लिए भारतीय रेलवे काफी व्यापक स्तर पर प्रबन्ध कर रही है।

मुख्य स्नान पर्वों के अवसर पर प्रतिदिन 20 से 25 गाड़ियाँ चलाई जाएंगी। इन गाड़ियों में –13 कोचों की व्यवस्था रहेगी और डीजल पावर से चालित होंगी। इसके अतिरिक्त यदि यात्रियों की संख्या अधिक होगी तो अन्य दिवसों पर भी अतिरिक्त गाड़ियों के चलाने की व्यवस्था रहेगी। हरिद्वार एवं ऋषिकेश के बीच प्रातः 6 बजे से 22 बजे के बीच शटल सर्विस चलायी जाएगी जो यात्रियों की संख्या के अनुसार छोड़ी जाएंगी। एक शटल प्रति घंटे की दर से यह शटल चलाने की व्यवस्था रहेगी। विभिन्न स्थानों से हरिद्वार के लिए नियमित गाड़ियों के अतिरिक्त विशेष गाड़ियों को चलाया जा रहा हैं।
इन व्यवस्थाओं के लिए 500 अतिरिक्त सवारी डिब्बे एवं 25 डीजल इंजन देश के विभिन्न मण्डलों से एकत्रित किए गए हैं। इस अवसर पर हरिद्वार में 5 – अतिरिक्त मेला प्लेटफार्मों का उपयोग गाड़ियों को चलाने के लिए किया जा रहा है।

अपर मण्डल रेल प्रबन्धक मुरादाबाद के नेतृत्व में लगभग दो हजार पांच सौ रेलकर्मी तीर्थ यात्रियों की सेवा के लिए मेला क्षेत्र के स्टेशनों पर कार्यरत रहेंगे। सुरक्षा के लिए राजकीय रेलवे पुलिस एवं रेलवे सुरक्षा बल के लगभग 3 हजार जवान रेल क्षेत्र में यात्रियों की सुरक्षा एवं रेल सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए तैनात रहेंगे।

बूढ़े एवं असहाय यात्रियों की सेवा के लिए रेलवे स्काउट एवं गाइड समस्त मेला स्टेशनों पर उपलब्ध रहेंगे। लक्सर, ज्वालापुर, हरिद्वार, मोतीचूर एवं ऋषिकेश में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना की जाएगी। हरिद्वार में एक रेलवे अस्पताल की भी व्यवस्था रहेगी तथा एक एम्बुलेंस गाड़ी तैनात रहेगी। आग इत्यादि ने बचाव के लिए रेलवे फायर ब्रिगेड की गाड़ियां एवं अनुभवी कर्मचारी भी हरिद्वार में तैनात रहेंगे।

यात्रियों की सुविधा एवं स्वागत के लिए निम्नलिखित विशेष प्रबन्ध किए गयें हैं।

1. मेला क्षेत्र के समस्त स्टेशनों को सजाया एवं संवारा गया है।
2. पर्याप्त विद्युत व्यवस्था की गई है।
3. पर्याप्त मात्रा में ठंडे पानी की व्यवस्था के अतिरिक्त शौचालयों एवं मूत्रालयों की पर्याप्त व्यवस्था की गई है।
4. हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर 30 बुकिंग खिड़की एवं 5 आरक्षण खिडकियां तथा ऋषिकेश एवं मोतीचूर में क्रमशः 4 एवं 2 बुकिंग खिड़कियों की व्यवस्था रहेगी। हरिद्वार में दिल्ली आरक्षण कम्प्यूटर से सीधे सम्पर्क के लिए आटोमैक्स की व्यवस्था भी की जाएगी।
5. यात्रियों को गाड़ियों के विषय में जानकारी देने के लिए कम्प्यूटर से चालित इलैक्ट्रानिक



डिस्प्ले बोर्ड के अतिरिक्त हरिद्वार स्टेशन पर 3, ऋषिकेश एवं मोतीचूर में एक-एक पूछताछ कार्यालय की व्यवस्था की जायेगी। रोड़ी बेलवाला एवं पंत द्वीप में रेलवे सूचना केन्द्र खोले जाएंगे। हरिद्वार एवं ऋषिकेश में लाउड स्पीकरों के माध्यम से भी आवश्यक सूचनाएं बराबर प्रसारित की जाएंगी।

6. यात्रियों के मनोरंजन एवं समय-समय पर आवश्यक जानकारी देने के लिए "क्लोज सर्किट टी.वी." की व्यवस्था रहेगी

7. यात्रियों के आवागमन को नियंत्रित करने के उद्देश्य से 2 कन्ट्रोल टावर बनाए जा रहे हैं।

8. गाडियों के आवागमन को सुचारु रूप से चलाने के लिए रेलवे कन्ट्रोल कार्यालय मेला समय में हरिद्वार स्टेशन पर ही कार्य करेगा।

9. यात्रियों की सुविधा एवं मार्ग दर्शन के लिए प्रत्येक टिकट के पीछे उस क्षेत्र से सम्बन्धित चित्र जैसे-अमृतसर के लिए स्वर्ण मंदिर, नागल डैम के लिए बांध, दिल्ली के लिए कुतुबमीनार, वाराणसी के लिए मंदिर इत्यादि का चित्र छपे रहेंगे। रेलवे मेला क्षेत्र में जगह-जगह पर निर्धारित प्लेट फार्म के जाने वाले रास्ते पर एवं उस गाड़ी पर भी यह चित्र लगा होगा। जिसकी सहायता से प्लेटफार्म एवं गाड़ी पर पहुंचने में यात्रियों को कोई असुविधा नहीं होगी।

10. इसके अतिरिक्त यात्री सहायक एवं भारत स्काउट एवं गाइड के कार्यकर्ता यात्रियों की सेवा के लिए उपलब्ध रहेंगे।

11. खाने पीने का उच्च गुणवत्ता वाला सामान पर्याप्त मात्रा में रेलवे क्षेत्र में उचित रेट पर उपलब्ध रहेगा।

12. धूप एवं वर्षा के बचाव के लिए पंडालों की व्यवस्था भी की जायेगी।

13. यात्रियों की सुविधा के लिए एक अतिरिक्त आवास गृह की व्यवस्था की गयी है।

विभिन्न स्टेशनों से हरिद्वार स्टेशन आने वाली गाड़ियों की समय सारणी

गाड़ी संख्या	कहाँ से	छूटने का समय	वाया	हरिद्वार आने का समय
3009 अप	हावड़ा	20.05	मुगलसराय, फैजाबाद	05.20
371 अप	दिल्ली	17.35	मेरठ	05.45
4042 डा.	दिल्ली	22.25	हापुड़	06.20
4265 अप	वाराणसी	09.15	लखनऊ, रायबरेली	07.52
350 अप	अमृतसर	18.35	लुधियाना	10.45
9019 अप	बाम्बे सेंट्रल	22.15	कोटा	14.30
355 अप	आगरा कैन्ट	18.30	अलीगढ़, चंदौसी	15.40
1 डी.एल.एस.	सहारनपुर	14.15	लक्सर	17.42



4309 अप	उज्जैन	14.30	दिल्ली	17.27
331 अप	दिल्ली	10.00	शामली	22.10

एक्स्टेन्डेड / डाइवरटेड गाड़िया

					दिनाँक
4588	लालगढ़	16.10	भटिंडा	10.25	09/4/92 से 16/4 तक
351	लखनऊ	23.30	मुरादाबाद	18.25	09/4/92 से 16/4 तक

कुम्भ मेला स्पेशल

कहॉ से	छूटने का.समय	वाया	हरिद्वार आने का समय	
दिल्ली	23.30	मेरठ, सहारनपुर	07.30	10/4 से 12/4 तक
अम्बाला	13.30	सहारनपुर	19.00	10/4 से 12/4 तक
अमृतसर	15.00	लुधियाना	04–50	08/4 से 10/4 से 12/4
भटिण्डा	15.30	अम्बाला	03.00	10/4 से 12/4
लखनऊ	14.45	मुरादाबाद	04.25	10/4 एवं 12/4
इलाहाबाद	17.00	कानपुर, अलीगढ़	11.10	09/4 से 16/4

उपरोक्त गाड़ियों के अतिरिक्त मद्रास एवं हावड़ा से यात्रियों की संख्या के अनुसार स्पेशल गाड़ियां चलायी जायेंगी।

अर्द्धकुम्भ 1992

हरिद्वार स्टेशन से डाउन दिशा में जाने वाली गाड़ियों की समय सारणी

गाड़ी नं.	गनतव्य	वाया	हरिद्वार से छूटने का समय	गंतव्य पर पहुँचने का समय
332	दिल्ली	सहारनपुर, शामली	04.10	16.35
4310	उज्जैन	मेरठ, दिल्ली	06.27	11.45
372	दिल्ली	मेरठ	06.25	17.55
2 डी.एल.एस.	सहारनपुर	लक्सर	09.25	13.25
9020	बाम्बे सेंट्रल	मेरठ, सहारनपुर	12.50	04.30
356	आगरा कैंट	मुरादाबाद	14.35	02.30
349	अमृतसर	सहारनपुर, अम्बाला	17.50	10.00
4266 डा.	वाराणसी	लखनऊ, रायबरेली	20.10	1.30
3010 डा.	हावड़ा	लखनऊ, फैजाबाद	21.30	07.05
4042 डा.	दिल्ली	गजरौला	22.45	06.55



एक्सटेंडेड गाड़ियां / डाइवरटेड गाड़ियां

457	लालगढ़	–	17.10	12/05 (10/4 से 17/4)
352	लखनऊ	–	09.50	04/10 (11/4 से 1/4)

एडवरटाइज्ड मेला स्पेशल का हरिद्वार से छूटने का समय

अम्बाला	सहारनपुर	14.00	19.55	14/4 से 16/4
दिल्ली	मेरठ	22.15	06.15	13/4 से 16/4
अमृतसर	–	23.00	10.25	13/4 से 15/4
भटिण्डा	–	23.45	08.30	13/4 से 15/4
लखनऊ	मुरादाबाद	23.30	12.30	13/4 से 15/4
इलाहाबाद	कानपुर	14.10	02.20	13/4 से 15/4

टिप्पणी

1. हरिद्वार ऋषिकेश तथा लक्सर एवं देहरादून इनके स्टेशनों के मध्य खुले समय पर आवश्यकता अनुसार शटल चलती रहेंगी।
2. उपरोक्त गाड़ियों के अतिरिक्त हरिद्वार से विभिन्न स्टेशनों के लिए खुले समय पर स्पेशल गाड़ियाँ चलायी जयेंगी जो यात्रियों की संख्या के अनुसार निर्धारित करी जायेगी।





बस सेवाओं की समय सारणी

ऋषिकेश - हरिद्वार - देहली मार्ग की समय सारणी

क्रं.सं.	प्रस्थान हरिद्वार	कहां तक	डिपो का नाम/ क्षेत्र का नाम	क्रं.सं.	प्रस्थान हरिद्वार	कहां तक	डिपो का नाम/ क्षेत्र का नाम
1.	04.30	देहली	मेरठ	32.	09.05	देहली	हरिद्वार
2.	05.00	देहली	मेरठ	33.	09.10	देहली	मेरठ
3.	05.30	देहली	देहरादून	34.	09.20	देहली	मेरठ
4.	05.40	देहली	मेरठ	35.	09.25	देहली	गाजियाबाद
5.	05.40	देहली	"	36.	09.30	देहली	देहरादून
6.	05.50	देहली	देहरादून	37.	09.40	देहली	मेरठ
7.	06.00	देहली	देहरादून	38.	10.00	देहली	मेरठ
8.	06.10	देहली	मेरठ	39.	10.10	देहली	डी.टी.सी.
9.	06.15	देहली	गाजियाबाद	40.	10.15	देहली	गाजियाबाद
10.	06.25	देहली	मेरठ	41.	10.20	देहली	मेरठ
11.	06.30	देहली	मेरठ	42.	10.30	मेरठ	मेरठ
12.	06.40	देहली	मेरठ	43.	10.35	देहली	मेरठ
13.	06.50	देहली	मेरठ	44.	10.40	देहली	डी.टी.सी.
14.	07.00	देहली	मेरठ	45.	10.50	देहली	मेरठ
15.	07.10	देहली	डी.टी.सी.	46.	11.05	"	मेरठ
16.	07.15	देहली	देहरादून	47.	11.10	मेरठ	मेरठ
17.	07.20	देहली	देहरादून	48.	11.15	देहली	देहरादून
18.	07.30	देहली	मेरठ	49.	11.20	मेरठ	मेरठ
19.	07.35	देहली	गाजियाबाद	50.	11.25	देहली	देहरादून
20.	07.40	देहली	मेरठ	51.	11.30	देहली	देहरादून
21.	07.50	देहली	मेरठ	52.	11.35	देहली	गाजियाबाद
22.	08.00	देहली	मेरठ	53.	11.45	देहली	डी.टी.सी.
23.	08.10	मुज. नगर	मेरठ	54.	11.50	देहली	डी.टी.सी.
24.	08.15	देहली	मेरठ	55.	12.00	देहली	मेरठ
25.	08.20	देहली	गाजियाबाद	56.	12.10	गाजियाबाद	मेरठ
26.	08.25	देहली	देहरादून	57.	12.15	देहली	मेरठ
27.	08.35	देहली	डी.टी.सी.	58.	12.30	मेरठ	मेरठ
28.	08.45	देहली	मेरठ	59.	12.35	गाजियाबाद	गाजियाबाद
29.	08.50	देहली	देहरादून	60.	12.40	देहली	देहरादून
30.	08.55	देहली	मेरठ	61.	12.45	देहली	मेरठ
31.	09.00	मेरठ	मेरठ	62.	12.50	मेरठ	मेरठ



क्रंसं.	प्रस्थान हरिद्वार	कहां तक	डिपो का नाम/ क्षेत्र का नाम	क्रंसं.	प्रस्थान हरिद्वार	कहां तक	डिपो का नाम/ क्षेत्र का नाम
63.	13.00	गाजियाबाद	गाजियाबाद	93.	16.00	देहली	मेरठ
64.	13.00	देहली	देहरादून	94.	16.10	देहली	मेरठ
65.	13.05	देहली	गाजियाबाद	95.	16.20	मेरठ	डी.टी.सी.
66.	13.10	मेरठ	मेरठ	96.	16.25	देहली	देहरादून
67.	13.15	गाजियाबाद	गाजियाबाद	97.	16.40	देहली	देहरादून
68.	13.20	देहली	मेरठ	98.	16.45	मुज़.नगर	मेरठ
69.	13.30	देहली	मेरठ	99.	16.50	देहली	देहरादून
70.	13.35	मेरठ	मेरठ	100.	16.55	मुज़. नगर	मेरठ
71.	13.40	मुज़. नगर	मेरठ	101.	17.00	देहली	मेरठ
72.	13.45	देहली	देहरादून	102.	17.10	मुज़. नगर	मेरठ
73.	13.50	गाजियाबाद	गाजियाबाद	103.	17.20	देहली	देहरादून
74.	13.55	मेरठ	मेरठ	104.	17.30	देहली	राजस्थान
75.	14.00	देहली	देहरादून	105.	17.40	मेरठ	मेरठ
76.	14.10	देहली	मेरठ	106.	17.50	देहली	डी.टी.सी.
77.	14.15	देहली	देहरादून	107.	17.55	देहली	डी.टी.सी.
78.	14.20	मेरठ	मेरठ	108.	18.00	मेरठ	मेरठ
79.	14.25	देहली	मेरठ	109.	18.10	देहली	देहरादून
80.	14.35	देहली	डी.टी.सी.	110.	18.20	मुज़.नगर	मेरठ
81.	14.35	गाजियाबाद	गाजियाबाद	111.	18.30	देहली	देहरादून
82.	14.40	देहली	देहरादून	112.	19.00	देहली	देहरादून
83.	14.45	देहली	गाजियाबाद	113.	19.15	मुज़.नगर	मेरठ
84.	14.50	देहली	देहरादून	114.	19.30	देहली	मेरठ
85.	15.00	देहली	मेरठ	115.	19.45	मुज़. नगर	मेरठ
86.	15.10	देहली	देहरादून	116.	19.45	मुज़. नगर	मेरठ
87.	15.20	देहली	देहरादून	117.	20.00	देहली	देहरादून
88.	15.30	देहली	मेरठ	118.	20.30	देहली	डी.टी.सी.
89.	15.35	मेरठ	मेरठ	119.	21.00	देहली	डी.टी.सी.
90.	15.40	देहली	देहरादून	120.	21.30	देहली	देहरादून
91.	15.50	देहली	डी टी.सी.	121.	22.00	देहली	मेरठ
92.	15.55	देहली	हरिद्वार	122.	22.30	देहली	देहरादून
				123.	23.00	देहली	देहरादून
				124.	23.45	देहली	मेरठ



सी०टी०यू० द्वारा संचालित बस सेवाओं की समय सारणी ऋषिकेश / हरिद्वार की

क्र. सं.	मार्ग का नाम	डिपो/राज्य	प्रस्थान ऋषिकेश	प्रस्थान हरिद्वार	टिप्पणी
1.	ऋषिकेश–हरिद्वार–चण्डीगढ़	सी.टी.यू	04.00	05.00	वाया सहारनपुर
2.	हरिद्वार – चण्डीगढ़	सी.टी.यू	04.00	05.50	वाया सहारनपुर
3.	हरिद्वार – चण्डीगढ़	सि.टी.यू	04.00	13.00	वाया सहारनपुर

पंजाब द्वारा संचालित बस सेवाओं की समय सारणी ऋषिकेश / हरिद्वार की।

क्र. सं.	मार्ग का नाम	डिपो/राज्य	प्रस्थान ऋषिकेश	प्रस्थान हरिद्वार	टिप्पणी
1.	हरिद्वार – फरीदकोट	पेपसू रोड	04.00	05.10	वाया सहारनपुर
2.	हरिद्वार – पठानकोट	पंजाबःहरि.	04.00	05.30	एक रोज पंजाब एक रोज हरिद्वार
3.	हरिद्वार – भटिंडा	पेपसू रोड	04.00	06.30	वाया सहारनपुर
4.	हरिद्वार – होशियारपुर	पंजाब रोड	04.00	09.00	वाया सहारनपुर
5.	ऋषिकेश–हरिद्वार–संगरूर	पेपसू रोड	08.40	09.40	वाया सहारनपुर
6.	हरिद्वार – पटियाला	टी.सी.	08.40	12.00	वाया सहारनपुर

हरियाणा राज्य द्वारा संचालित बस सेवाओं की समय सारणी ऋषिकेश/हरिद्वार की।

क्र. सं.	मार्ग का नाम	डिपो/राज्य	प्रस्थान ऋषिकेश	प्रस्थान हरिद्वार	टिप्पणी
1.	हरिद्वार – सिरसा	हरियाणा	–	06.05	वाया सहारनपुर
2.	ऋषिकेश–हरियाणा–चण्डीगढ़	हरियाणा	05.55	06.55	वाया सहारनपुर
3.	हरिद्वार – अम्बाला	हरियाणा	05.55	08.00	वाया सहारनपुर
4.	हरिद्वार – सिरसा –हिसार	हरियाणा	05.55	07.30	वाया मुज.नगर / पानीपत
5.	हरिद्वार – रिवाड़ी	हरियाणा	05.55	07.45	वाया मुज़.नगर / पानीपत
6.	हरिद्वार – सिरसा	हरियाणा	05.55	08.20	वाया सहारनपुर
7.	हरिद्वार – पानीपत	हरियाणा	05.55	08.35	वाया मुज.नगर / पानीपत
8.	हरिद्वार – चण्डीगढ़	हरियाणा	05.55	08.50	वाया मुज.नगर / पानीपत
9.	हरिद्वार–रोहतक–भिवानी	हरियाणा	05.55	09.00	वाया मुज.नगर / पानीपत
10.	ऋषिकेश–हरिद्वार–देहली	हरियाणा	08.05	09.05	वाया मेरठ
11.	ऋषिकेश–हरिद्वार–कैथल	हरियाणा	09.00	10.00	वाया सहारनपुर
12.	ऋषिकेश–हरिद्वार–चण्डीगढ़	हरियाणा	10.30	11.30	वाया सहारनपुर
13.	हरिद्वार – रोहतक	हरियाणा	10.30	11.45	वाया मुज.नगर / पानीपत
14.	हरिद्वार –चण्डीगढ़	हरियाणा	10.30	12.10	वाया सहारनपुर
15.	हरिद्वार – जींद	हरियाणा	10.30	14.00	वाया मुज.नगर / पानीपत
16.	हरिद्वार – करनाल	हरियाणा	10.30	14.30	वाया सहारनपुर
17.	हरिद्वार – अम्बाला	हरियाणा	10.30	15.00	वाया सहारनपुर
18.	हरिद्वार – गुड़गाँव	हरियाणा	10.30	15.55	वाया मेरठ / देहली
19.	हरिद्वार – करनाल	हरियाणा	10.30	16.00	वाया सहारनपुर



हिमाचल द्वारा संचालित बस सेवाओं की समय सारणी हरिद्वार से

क्र.सं.	मार्ग का नाम	डिपो / राज्य	प्रस्थान हरिद्वार से	टिप्पणी
1.	हरिद्वार – धर्मशाला	हिमाचल	04.00	वाया सहारनपुर / अम्बाला
2.	हरिद्वार – कुल्लू	हिमाचल	04.30	वाया सहारनपुर / अम्बाला
3.	हरिद्वार – हिमीरपुर	हिमाचल	09.45	वाया सहारनपुर / अम्बाला
4.	हरिद्वार – मंडी	हिमाचल	11.00	वाया सहारनपुर / अम्बाला
5.	हरिद्वार – कुल्लू मनाली	हिमाचल	16.00	वाया सहारनपुर / अम्बाला
6.	हरिद्वार – शिमला	हिमाचल	17.00	वाया सहारनपुर / अम्बाला
7.	हरिद्वार – बैजनाथ	हिमाचल	19.00	वाया सहारनपुर / अम्बाला
8.	हरिद्वार – पठानकोट	हिमाचल	20.00	वाया सहारनपुर / अम्बाला
9.	हरिद्वार – चम्बा	हिमाचल	21.10	वाया सहारनपुर / अम्बाला
10.	हरिद्वार – रोहड़ू	हिमाचल	05.00	वाया देहली / ऋषिकेश
11.	हरिद्वार – शिमला	हिमाचल	06.00	वाया " / ऋषिकेश
12.	हरिद्वार – सरकाघाट	हिमाचल	15.00	वाया " / ऋषिकेश
13.	हरिद्वार – शिमला	हिमाचल	10.00	वाया " / ऋषिकेश
14.	हरिद्वार – सराहन	हिमाचल	22.30	वाया " / ऋषिकेश

राजस्थान राज्य द्वारा संचालित बस सेवार्थ की समय सारणी हरिद्वार की।

क्र.सं.	मार्ग का नाम	डिपो / राज्य	प्रस्थान हरिद्वार से	टिप्पणी
1.	हरिद्वार – भरतपुर	राजस्थान	06.15	वाया देहली
2.	हरिद्वार – जयपुर	राजस्थान/हरिद्वार	09.00	दक रोज राजस्थान एक रोज हरिद्वार
3.	हरिद्वार – झुन – झुनू	राजस्थान	10.30	वाया देहली
4.	हरिद्वार – अलवर	राजस्थान	11.00	वाया देहली
5.	हरिद्वार – जयपुर	राजस्थान	12.00	वाया देहली
6.	हरिद्वार – जयपुर	राजस्थान	17.30	वाया देहली
7.	हरिद्वार – जयपुर पुष्कर	राजस्थान	18.45	वाया देहली
8.	हरिद्वार – जयपुर	राजस्थान/हरिद्वार	20.30	
9.	हरिद्वार – जयपुर	राजस्थान	18.00	वाया देहली ऋषिकेश
10.	हरिद्वार – जयपुर	राजस्थान	17.45	वाया देहली ऋषिकेश



हरिद्वार से नजीबाबाद वाया चण्डीघाट की ओर जाने वाली बस सेवा की समय सारणी

क्रम सं.	मार्ग का नाम	प्रस्थान समय हरिद्वार से
1	हरिद्वार – पिथौरा गढ़	04.30
2.	हरिद्वार – अल्मोड़ा	05.00
3.	हरिद्वार – नैनीताल	05.30
4.	हरिद्वार – पीलीभीत	05.30
5.	हरिद्वार – टनकपुर	06.00
6.	हरिद्वार – हलद्वानी	06.00
7.	हरिद्वार – रानी खेत	06.30
8.	देहरादून– हरिद्वार – बदायूँ	06.45
9.	हरिद्वार – पीलीभीत	07.00
10.	हरिद्वार – टनकपुर	07.00
11.	हरिद्वार – बिजनौर	07.00
12.	ऋषिकेश – हरिद्वार – लखनऊ	07.15
13.	देहरादून– हरिद्वार – कोटद्वार	07.45
14.	देहरादून – हरिद्वार – टनकपुर	08.00
15.	देहरादून – हरिद्वार – बिजनौर	08.00
16.	हरिद्वार – रामनगर	08.30
17.	हरिद्वार – नैनीताल	08.45
18.	देहरादून – हरिद्वार – नैनीताल	09.15
19.	देहरादून – हरिद्वार – टनकपुर	09.00
20.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	09.30
21.	देहरादून – हरिद्वार – बरेली	09.30
22.	देहरादून – हरिद्वार – नैनीताल	09.30
23.	देहरादून – हरिद्वार – बरेली	10.00
24.	देहरादून – हरिद्वार – टनकपुर	10.00
25.	चण्डीगढ़ – हरिद्वार – काठगोदाम	09.45
26.	देहरादून – हरिद्वार – बरेली	1030
27.	देहरादून – हरिद्वार – बिजनौर	10.30
28.	हरिद्वार – रोपड़िया	12.00
29.	ऋषिकेश – हरिद्वार – लखीमपुर	14.00
30.	ऋषिकेश – हरिद्वार – लखीमपुर	15.00
31.	ऋषिकेश – हरिद्वार – रोपड़िया	16.00
32.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	11.30
33.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	12.30
34.	देहरादून – हरिद्वार – पीलीभीत	12.45
35.	देहरादून – हरिद्वार – – कोटद्वार	13.00



36.	देहरादून – हरिद्वार – बिजनौर	13.00
37.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	14.30
38.	देहरादून – हरिद्वार – लखनऊ	14.30
39.	देहरादून – हरिद्वार – लखनऊ	17.00
40.	देहरादून – हरिद्वार – बिजनौर	14.30
41.	हरिद्वार – कानपुर	15.30
42.	देहरादून – हरिद्वार – कानपुर	16.30
43.	देहरादून – हरिद्वार – अल्मोड़ा	17.00
44.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	15.00
45.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	16.30
46.	देहरादून – हरिद्वार – कोटद्वार	17.30
47.	हरिद्वार – मुरादाबाद	13.00
48.	हरिद्वार – मुरादाबाद	14.00
49.	हरिद्वार – मुरादाबाद	15.00
50.	हरिद्वार – मुरादाबाद	16.00

1. हरिद्वार – सहारनपुर मार्ग शटल सेवा दूरी 80 कि मी
   प्रातः 06.00 बजे से 20.30 बजे तक प्रत्येक 20 मिनट एवं 30 मिनट के अन्तराल में
2. हरिद्वार – देहरादून मार्ग शटल सेवा
   दूरी 58 कि.मी.
   प्रातः 06.00 बजे से 20.00 बजे तक प्रत्येक 30 मिनट के अन्तराल में
3. हरिद्वार – लक्सर मार्ग शटल सेवा
   दूरी 35 कि मी
   हरिद्वार से 06.30, 07.30, 09.45, 10.15
   लक्सर 10.45, 13.00, 14.00, 14.30 एवं 17.00
4. हरिद्वार – शाहपुर (लक्सर मार्ग पर)
   दूरी 19 कि मी
   हरिद्वार से 07.50, 09.30, 12.00, 13.50, 17.30
   शाहपुर
5. हरिद्वार एवं ऋषिकेश से हिल मार्ग

	हरिद्वार	ऋषिकेश
हरिद्वार – ऋषिकेश से चौखुटिया	20.00	04.00

हरिद्वार से मंडल	= 06.30
हरिद्वार से उखीमठ	= 07.30
हरिद्वार से भटवारी	= 06.20
हरिद्वार से भटवारी	= 08.30
हरिद्वार से भटवारी	= 09.30



	हरिद्वार	ऋषिकेश
हरिद्वार – ऋषिकेश से भटवारी	= 20.15	04.30
हरिद्वार से टिहरी पुरानी	= 07.00	
हरिद्वार से नरेन्द्र नगर	= 07.30, 15.00	

6. हरिद्वार से लालढांग वाया चण्ड़ी घाट
   35 कि मी
   हरिद्वार से लाल ढांग 08.00, 13.45
7. हरिद्वार से रुडकी वाया धनौरी मार्ग
   हरिद्वार से 07.00, 08.00, 10.00, 11.00, 13.30, 14.30
8. हरिद्वार से पथरी (लक्सर मार्ग)
   दूरी 20 कि मी 7.00, 14.25
9. पी.ओ. हरिद्वार – बी.एच.ई.एल. बहादराबाद
   दूरी 18 कि मी नगर बस सेवा
   प्रथम 06.20 बजे से 20.00 बजे प्रत्येक 30 मिनट बाद।
10. नगर बस सेवा

अ. कनखल चौक से सप्तऋषि आश्रम प्रातः 05.00 बजे से 18.40 बजे तक प्रत्येक दो घन्टे के अन्तराल में

ब. ज्वालापुर से सप्तऋषि आश्रम प्रातः 05.45 बजे से 19.25 बजे तक प्रत्येक दो घन्टे के अन्तराल में।

स. ज्वालापुर से सप्तऋषि आश्रम वाया कनखल 06.30 बजे से 18.30 बजे तक प्रत्येक दो घन्टे के अन्तराल में





अर्न्तक्षेत्रीय सेवाओं की समय सारणी

प्रस्थान हरिद्वार से आगरा / मथुरा / वृन्दावन मार्ग

क्र. सं.	सेवा का नाम	क्षेत्र/डिपो का नाम	प्रस्थान हरिद्वार से	प्रस्थान गन्तवीय स्थान से	टिप्पणी
1.	हरिद्वार – वृन्दावन	मथुरा	7.00		
2.	हरिद्वार – वृन्दावन	मुजफ.	11.15		
3.	हरिद्वार – वृन्दावन	मथुरा	22.00		
4.	हरिद्वार – मथुरा	मथुरा	6.00		
5.	हरिद्वार – मथुरा	हरिद्वार	10.30	08.30	
6.	हरिद्वार – आगरा	हरिद्वार/आगरा	06.45	06.45	एक दिन हरिद्वार एक दिन आगरा
7.	हरिद्वार – आगरा	आगरा	08.15		
8.	हरिद्वार – आगरा	हरिद्वार/आगरा	09.30	08.30	एक दिन हरिद्वार एक दिन आगरा
9.	हरिद्वार – आगरा	आगरा	11.00		
10.	ऋषि– हरि–आगरा	ऋषिकेश	12.30		
11.	ऋषि–हरि–आगरा	हाथरस	16.30		
12.	ऋषि–हरि–आगरा	हाथरस	18.30		
13.	ऋषि–हरि–आगरा	आगरा	19.30		
14.	ऋषि–हरि–आगरा	अलीगढ़	21.00		
1.	हरि–इटावा–मेरठ	हरिद्वार/इटावा	05.45	05.45	
2.	हरि–हल्द्वानीं	हरिद्वार/हल्द्वानी	17.30	19.15	
3.	दे.दून –हरि–हल्द्वानी	रूद्रपुर	09.30	18.30	
4.	हरि–ग्वालियर	मध्यप्रदेश	07.45		





हरिद्वार के प्रमुख अखाड़े, आश्रम, धर्मशालाएं और होटल

हरिद्वार स्थित प्रमुख अखाड़े

		दूरभाष
1.	श्री निरंजनी अखाड़ा पंचायती, मायापुर हरिद्वार	7804
2.	श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा, निकट जी.पी.ओ.	7903
3.	श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, पहाड़ी बाजार, कनखल	6219
4.	श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन, राजघाट, कनखल	6168
5.	श्री पंचायती अखाड़ा नया उदासीन, इमली मौ. कनखल	6405
6.	श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा, चौक बाजार, कनखल	7422

हरिद्वार के प्रमुख आश्रम

1. गंगेश्वर धाम
2. योगेश्वर आश्रम
3. भगवत धाम
4. सच्चिदानन्द आश्रम
5. रामशंकर आश्रम
6. छज्जवा नन्द आश्रम
7. जगद गुरु उदासीन आश्रम, कनखल
8. हरिनाम निवास साधुबेला आश्रम
9. मोती राम धाम
10. रामानन्द आश्रम
11. हरमिलापी आश्रम
12. अखण्ड धाम
13. नरसिंह धाम
14. फलाहारी धाम
15. गूदड़ अखाड़ा
16. चिन्तामणि आश्रम
17. आनन्द अखाड़ा
18. पीर दरगाह
19. भोला गिरी आश्रम
20. श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा
21. दूधाधारी आश्रम
22. डेरा शेखवां सन्त सरमुख सिंह जी
23. गरीब दासी धर्मशाला
24. गुरु मण्डल आश्रम
25. आनन्द आश्रम
26. शंकर आश्रम ,
27. श्री अवधूत मण्डल आश्रम प्राचीन ज्वालापुर रोड
28. अवधूत मण्डल हनुमान मन्दिर
29. हरे राम आश्रम
30. निर्मल कुटिया
31. निर्मल संन्त पुरा
32. कबीर आश्रम
33. मुनि मण्डलाश्रम
34. आनन्दमयी मां आश्रम
35. उदासीन नया अखाड़ा होली मोहल्ला कनखल
36. हरिहरानन्द आश्रम
37. हरि हर आश्रम
38. राम कृष्ण मिशन
39. गीता मन्दिर
40. चेतन देव कुटिया



41. जगत राम उदासीन आश्रम
42. जगद गुरु आश्रम
43. मानव कल्याण आश्रम
44. परमानन्द भण्डार
45. योगेश्वर अमृत कुटीर
46. सुरत गिरी बंगला
47. ब्रम्हानन्द आश्रम
48. मंगल आश्रम
49. हरि निरंजन आश्रम
50. हरि भारती विद्यालय
51. श्री कृष्ण निवास आश्रम
52. संन्तोषी मां आश्रम
53. मानस मन्दिर स्वामी माधवाचार्य जी
54. आनन्द आश्रम सन्यास रोड
55. हंस आश्रम
56. सन्यास आश्रम
57. मोहन जगदीश्वर आश्रम
58. आशुतोष आश्रम
59. साधना सदन आश्रम
60. केशवा नन्द आश्रम
61. गोडिया मठ अपर रोड
62. अखण्ड धारा
63. नाथों का दलीचा
64. श्रवण नाथ मठ
65. शिव भण्डार हर की पौड़ी
66. जय राम आश्रम
67. भोला गिरी आश्रम
68. मोहना नन्द आश्रम
69. वनखण्डी आश्रम
70. सन्त मण्डल आश्रम
71. निर्धन निकेतन
72. मणि द्वीप आश्रम
73. जगदीश आश्रम
74. वैदिक मोहन आश्रम
75. कमल दास कुटिया
76. दश नाम सन्यास आश्रम
77. प्रेम प्रकाश आश्रम
78. पावन धाम
79. नव ज्योति आश्रम
80. चेतना नन्द गिरी आश्रम
81. आचार्य बेला
82. रामचरित तुलसी मानस मन्दिर
83. लक्ष्मी बेला
84. भागवता नन्द आश्रम
85. विरक्त कुटिया
86. चित्रकूट अखण्ड आश्रम
87. साधु बेला आश्रम
88. भूमानन्द आश्रम
89. वेदान्त आश्रम
90. परमार्थ आश्रम
91. समन्वय कुटी, सप्त सरोवर, भारत माता मन्दिर
92. कच्छी आश्रम
93. अजर धाम
93. सप्त ऋषि आश्रम
95. गीता कुटीर



हरिद्वार स्थित धर्मशालाओं की सूची

क्र. सं.	धर्मशाला का नाम	मोहल्ला	स्टेशन.\ बस स्टैण्ड से दूरी		फोन
1	सरगोधा धर्मशाला	कलखल रोड, निकट पशु चिकि.	50 कदम पूर्व दिशा		–
2	बन्नू राम विरादरी धर्मशाला	निरंजनी अखाड़ाबाग, मायापुर	200	–	7776
3	मंशा देवी मंदिर ट्रस्ट	निरंजनी अखाड़ाबाग, मायापुर	200	–	–
4	गुजराती धर्मशाला	शिवमूर्ति गली	300	–	–
5	चौकसी भवन धर्मशाला	शिवमूर्ति गली	300	–	–
6	महावर वैश्य धर्मशाला	जस्साराम रोड	500	–	–
7	लाहौर हाउस धर्मशाला	जस्साराम रोड	600	–	–
8	रमाभवन धर्मशाला	श्रवणनाथ नगर	500	–	–
9	झूलेलाल धर्मशाला	जस्साराम रोड, श्रवण नाथ नगर	700		7619
10	सेठ मुरली मल हावड़ी वाल	रेलवे रेड	आधा फर्लांग		–
11	कालीकमली वाली धर्मशाला	रेलवे रेड	आधा फर्लांग		–
12	आर्यसमाज धर्मशाला	श्रवणनाथ नगर	आधा फर्लांग		–
13	गुजरांवाला भवन	ललतारौपुल	आधा फर्लांग		–
14	विष्णुभवन धर्मशाला	ललतारौपुल	आधा फर्लांग		7215
15	करनाटक धर्मशाला	भल्ला रोड	डेढ़ फर्लांग		–
16	महावीरदल धर्मशाला	भल्ला रोड	डेढ़ फर्लांग		7334
17	लुधियानाट्रस्ट धर्मशाला	भल्ला रोड	डेढ़ फर्लांग		7481
18	सिंध पंचायत धर्मशाला	भल्ला रोड	डेढ़ फर्लांग		7148
19	करणी भवन धर्मशाला	रेलवे रोड	डेढ़ फर्लांग		–
20	सरदारनी नानकीदेवी	रेलवे रोड	2 फर्लांग		–
21	गंगाराम द्वारका प्रसाद ट्रस्ट, लखनऊ	रेलवे रोड	2 फर्लांग		–
22	चन्दी राम सिन्धी	पोस्ट आफिस , चौक	2 फर्लांग		7040,7048



क्र. सं.	धर्मशाला का नाम	मोहल्ला	स्टेशन / बस स्टैण्ड से दूरी	फोन
23	चिन्योट भवन	भोलागिरि रोड बिरला रोड	3 फर्लांग	–
24	रामलीला कमेटी धर्मशाला	रामलीला मैदान	3 फर्लांग	–
25	बहावलपुर धर्मशाला	रामलीला मैदान	3 फर्लांग	7517
26	श्री गणेशबहावलपुर धर्मशाला	रामलीला मैदान	3 फर्लांग	6692
27	भोलागिरी आश्रम, धर्मशाला	रामलीला मैदान	3 फर्लांग	–
28	डेरावाल भवन धर्मशाला	भल्ला रोड	3 फर्लांग	7221
29	सेठ खुशी राम धर्मशाला	अपररोड	3 फर्लांग	7996
30	वृन्दावन धर्मशाला	अपररोड	3 फर्लांग	–
31	सेठ रामदास महेश्वरी	अपररोड	3 फर्लांग	–
32	सूरजमल धर्मशाला	अपररोड	3 फर्लांग	–
33	पालीवाल धर्मशाला	विष्णु घाट	3 फर्लांग	–
34	नत्थूमल नारायणदास	रामघाट	1 कि.मी.	–
35	राममूर्ति गोयल	अपर रोड	1 कि.मी.	–
36	सेठ करोड़ीमल धर्मशाला	अपर रोड	1 कि.मी.	–
37	मं. चरणदास तुलसीदास जोगीबाड़ा,	अपर रोड	1 कि.मी.	–
38	जाट धर्मशाला	अपर रोड	1 कि.मी.	–
39	वैष्णोदेवी धर्मशाला	हर की पौड़ी	डेढ़ कि.मी.	–
40	खखरायन धर्मशाला	हर की पौड़ी घाट	डेढ़ कि.मी.	–
41	शंकरानन्द ट्रस्ट बरनाला	हर की पौड़ी घाट	डेढ़ कि.मी.	–
42	स्वामी जी महराजकुरीलवाले	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	–
43	मुल्तान सेवा समिति धर्मशाला	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	
44	जयराम आश्रम धर्मशाला	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	–
45	पंजाब सिंघ क्षेत्र	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	–
46	कुमार भवन धर्मशाला	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	–
47	नरोत्तम भवन धर्मशाला	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	–
48	जगराओं गीता आश्रम	भीमगोड़ा रोड	डेढ़ कि.मी.	–



क्र. सं.	धर्मशाला का नाम	मोहल्ला	स्टेशन/ बस स्टैण्ड से दूरी	फोन
49	अबोहर भवन	बाईपास रोड खड़खड़ी	3 किमी.	7732
50	मण्डी गोविन्दगढ़	भोपतवाला	4 कि.मी.	–
51	रामपुरा फूल	भोपतवाला	4 कि.मी.	6973
52	लुधियाना धर्मशाला	भोपतवाला	4 कि.मी.	–
53	महाराज अग्रसेन धर्मशाला	सप्तऋषि	4 कि.मी.	–
54	मणीद्वीप आश्रम धर्मशाला	खड़खडी	ढाई किम.ी.	–
55	रुईया धर्मशाला हरनंदराय	पहाड़ी बाजार, कलखल	3 कि.मी.	6807
56	सिरसा धर्मशाला	राजघाट कनखल	3 कि.मी.	–
57	रोड धर्मशाला	निकट जमना पैलेस सिनेमा	3 कि.मी.	–
58	गुर्जरभवन धर्मशाला	ज्वाला पुर रोड	2 कि.मी.	–
59	कुम्हार धर्मशाला	ज्वाला पुर रोड	2 कि.मी.	–
60	यादव धर्मशाला	बाईपास रोड	कनखल	–
61	सुथरे शाह धर्मशाला	श्रवण नाथ नगर	1 कि.मी.	–
62	शीतलदास लक्ष्मीबाई सिंधी	रामघाट	1 कि.मी.	–
63	भटिण्डा भवन धर्मशाला	ललतारौपुल	आधा किमी.	–
64	ठाकुरलालमल सिंधी धर्मशाला	ब्रम्हपुरी	1 कि.मी.	–
65	भाटिया भवन धर्मशाला	जस्साराम रोड	आधा कि.मी.	–
66	गुरुद्वारा सिंह सभा रजि. हरिद्वार	ललतारौपुल	आधा कि.मी.	–



हरिद्वार के होटलों की सूची
(80 और अधिक यात्रियों की आवासीय सुविधा)

1.	होटल सुविधा	श्रवणनाथनगर	7023
2.	होटल कैलाश	निकट शिवमूर्ति	7789,6078
3.	होटल कैलाश डीलक्स	निकट शिवमूर्ति	7829
4.	गोल्डन होटल	कलखल रोड	7060
5.	होटल अशोक	जस्साराम रोड	6788
6.	पनामा होटल	जस्साराम रोड	7506
7.	होटल साहनी	श्रवणनाथ नगर	7906
8.	राज होटल	विष्णुघाट	7639,6705
9.	होटल विक्रान्त	विष्णुघाट	6343
10.	लाँज रॉणा भवन	विष्णुघाट	6475
11.	होटल आहूजा	विष्णुघाट	7847
12.	होटल राज डीलक्स	विष्णुघाट	7755
13	शांति भवन जयपुरिया	भल्ला रोड	7317
14.	मारवाड़ी निवास	सब्जी मण्डी	7759
15.	शिव विश्राम गृह	अपर रोड	7618
16.	होटल तीर्थ	हर की पौड़ी	7111
17.	ज्ञान निकेतन	सुभाष घाट	7230
18.	अलका होटल	गऊघाट	7244
19.	कौशल भवन	कुशाघाट	6628
20.	होटल हॉली डे इन	निरंजनी अखाड़ा रोड	6166,6037
21.	आनन्द निवास	श्रवणनाथ घाट	6265
22.	आनन्द भवन	हर की पौड़ी	7145
23.	होटल गुरुदेव	शिवमूर्ति के पास	7101,6216
24.	होटल मिड टाउन	रेलवे रोड	7507
25.	होटल टूरिस्ट	रेलवे रोड	6049,7507
26.	पुरोहित लॉज	हर की पौड़ी	6850
27.	सरप्राइज होटल	दिल्ली रोड	6148,6748
28.	मानसरोवर होटल	जस्साराम रोड	–
29.	मानसरोवर इंटरनेशनल	अपर रोड	6501
30.	टूरिस्ट बंगला	रोड़ी बेलवाला	6379
31.	ज्ञान निकेतन	सुभाष घाट	7230
32.	आरती होटल	रेलवे रोड	7456, 6365





ऋषिकेश के प्रमुख आश्रम, धर्मशाला और होटल

क्र.सं.	आश्रमों के नाम	
1	शिवानन्द आश्रम	
2	ब्रह्मा नन्द आश्रम	मुनि की रेती टिहरी–गढ़वाल
3	मंगल आश्रम	लक्ष्मण झूला रोड मुनि की रेती
4	कैलाश आश्रम	मुनि की रेती
5	दया नन्द आश्रम	शीशम झाड़ी, मुनि की रेती
6	ओंकारानन्द आश्रम	मुनि की रेती
7	हनुमान आश्रम	मुनि की रेती
8	योग निकेतन	मुनि की रेती
9	शत्रुघन मन्दिर	मुनि की रेती

ऋषिकेश की धर्मशालाओं की सूची

1	जय राम धर्मशाला (क्षेत्र)	पुराना बद्री नाथ मार्ग
2	भिवानी वाला धर्मशाला	हरिद्वार रोड
3	हर स्वरूप की धर्मशाला	हरिद्वार रोड
4	सिन्धी धर्मशाला	घाट रोड
5	जगाधरी वाली धर्मशाला	मुखर्जी मार्ग
6	भगवान आश्रम	हरिद्वार रोड
7	आशामाई की धर्मशाला	हरिद्वार रोड
8	जीवनी माई की धर्मशाला छेत्र	हरिद्वार रोड
9	गुरूद्वारा हेम कुण्ड	हरिद्वार रोड
10	कानुपर वाली धर्मशाला	चन्द्रेश्वर मार्ग
11	देवकी देवी धर्मशाला	लाजपत मार्ग
12	देहली वाली धर्मशाला	मेन बाजार ऋषिकेश
13	काली कमली धर्मशाला (छेत्र)	मेन बाजार
14	सहारनपुर वाली धर्मशाला	मेन बाजार
15	निर्मल आश्रम	पोस्टाफिस मार्ग
16	दादूवाड़ा	चन्द्रेश्वर मार्ग
17	खुर्जा वाली धर्मशाला	पंजाब सिन्ध अन्न क्षेत्र मार्ग
18	गोपाल कुटीर धर्मशाला	देहरादून रोड
19	मनभरी माई धर्मशाला	देहरादून रोड
20	भगवान भवन धर्मशाला	रेलवे रोड
21	आन्ध्रा आश्रम	हरिद्वार रोड
22	भजन आश्रम	हरिद्वार रोड
23	सुलल्खी भाई की धर्मशाला	जीवनी माई मार्ग



24	रुकमणी माई की धर्मशाला	ज़ीवनी माई मार्ग
25	फूलचन्द्र अग्रवाल धर्मशाला	जीवनी माई मार्ग

स्वर्गाश्रम जिला पौड़ी गढ़वाल (मेला क्षेत्र - ऋषिकेश) आश्रमों की सूची

1 स्वर्गाश्रम
2 परमार्थ निकेतन
3 महेश योगी का आश्रम

होटलों की सूची

1	नटराज	देहरादून रोड
2	साकेत	देहरादून रोड
3	इन्द्रलोक	रेलवे रोड
4	राज रस	हीरालाल मार्ग
5	गंगोत्री होटल	रेलवे रोड
6	गंगा के किनारे	वीरभद्र रोड
7	मन्दाकिनी होटल	हरिद्वार रोड
8	वसेरा होटल	हरिद्वार रोड
9	आकाश गंगा होटल	हरिद्वार रोड
10	शिव लोक होटल	हरिद्वार रोड
11	अशोका होटल	हीरा लाल रोड
12	मेनका होटल	रोडवेज़ बस स्टैन्ड रोड़
13	चन्द्र लोक	संयुक्त बस स्टैन्ड के पास
14	चन्द्रा होटल	संयुक्त बस स्टैन्ड के पास
15	हरि होटल	देहरादून रोड





अर्द्धकुम्भ क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाएं

अर्द्धकुम्भ मेला क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाओं की दृष्टि से सात आधार चिकित्सालयः

क्र.	चिकित्सालय का नाम	वर्तमान शैय्या संख्या	वृद्धि	कुल शैय्या संख्या
1.	राजकीय चिकित्सालय हरिद्वार	70	100	170
2.	चैनराय महिला चिकित्सालय, हरिद्वार	30	20	50
3.	संक्रामक रोग चिकित्सालय हरिद्वार	20	100	120
4.	जनरल डिजीज अस्पताल, ऋषिकेश	34	66	100
5.	महिला चिकित्सालय , ऋषिकेश	10	10	20
6.	संक्रामक रोग चिकित्सालय, ऋषिकेश	20	20	40
7.	रोड़ी बेलवाला मेला अस्पताल	00	30	30

मेला क्षेत्र में 16 चिकित्सालय तथा 8 प्राथमिक चिकित्सा उपचार केन्द्रों की स्थापना सुनिश्चित की गयी है। इनके अलावा 13 निरीक्षण चौकियां भी स्थापित की गई हैं जहां आकस्मिक आवश्यकता पड़ने पर वहां भी शैय्याओं की व्यवस्था की जाएगी।

इनके अलावा मेला क्षेत्र के निम्न चिकित्सालयों में भी दर्शाई गई संख्या में शैय्याएं उपलब्ध रहेंगी :

1.	रामकृष्ण मिशन चिकित्सालय कनखल	64
2.	श्रद्धानन्द चिकित्सालय, गुरुकुल कांगड़ी	30
3.	गुरुकुल आयुर्वेदिक कॉलेज, गुरुकुल कांगड़ी	50
4.	ऋषिकेश आयुर्वेदिक महाविद्यालय, हरिद्वार	30





हरिद्वार व ऋषिकेश के दर्शनीय स्थल व रेलवे स्टेशन से दूरी

हरिद्वार के दर्शनीय स्थलों के नाम

		रेलवे स्टेशन से दूरी कि. मी में
1.	हर की पौड़ी	1.50
2.	मनसा देवी मन्दिर	2.00
3.	चंडी देवी मन्दिर	8.00
4.	बिल्केश्वर मन्दिर	1.00
5.	दक्ष् मन्दिर	4.00
6.	माया देवी मन्दिर	0.50
7.	भोला गिरी मन्दिर	0.25
8.	मकर वाहिनी गंगा मंदिर	1.00
9.	अयप्पा मन्दिर	0.50
10.	सुभाष घाट	1.25
11.	कुशावर्त घाट	1.00
12.	गुरूकुल कांगड़ी	4.50
13.	राम कृष्ण मिशन	3.00
14.	श्रवण नाथ मन्दिर (पशुपति नाथ)	0.50
15.	भीम गोड़ा	2.00
16.	साधु बेला आश्रम	4.00
17.	सप्त ऋषि आश्रम	5.00
18.	परमार्थ निकेतन	5.00
19.	मानव कल्याण आश्रम	2.00
20.	अवधूत मंडल	3.00
21.	आर्य वानप्रस्थ आश्रम	5.00
22.	पावन धाम	4.00
23	भारतमाता मन्दिर	5.00
24.	व्यास मंदिर	5.00
25.	राघवेन्द्र मंदिर	5.00



ऋषिकेश के दर्शनीय स्थलों के नाम

		रेलवे स्टेशन से दूरी	बस, टेक्सी, तांगा की सुविधा उपलब्ध
1.	त्रिवेणी घाट	1 कि.मी.	"
2.	रघुनाथ मन्दिर	1 कि.मी.	"
3.	भरत मन्दिर	1 कि.मी.	"
4.	काली कमली क्षेत्र	1 कि.मी.	"
5.	पुष्कर मन्दिर	1 कि.मी.	"
6.	जयराम अन्न क्षेत्र	1 कि.मी.	"
7.	आन्ध्र आश्रम	1 कि.मी.	"
8.	कैलाश आश्रम, मुनि की रेती	2 कि.मी.	"
9.	शिवानन्द आश्रम, मुनि की रेती	2 कि.मी.	"
10.	वेद निकेतन	2 कि.मी.	"
11.	योग निकेतन	2 कि.मी.	"
12.	लक्ष्मण झूला	4 कि.मी.	"
13.	गीता भवन	4 कि.मी.	नाव तथा स्टीम
14.	परमार्थ निकेतन	4 कि.मी.	बोट तथा स्टीम
15.	स्वर्ग आश्रम	4 कि.मी.	
16.	शंकराचार्य नगर	4 कि.मी.	





उत्तर प्रदेश पर्यटन

मेला अधिष्ठान, हरिद्वार, उत्तर प्रदेश सरकार